Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

जनज्ञान [मासिक]

ज्येष्ठ २०४२ - १६ मई से १५ जून १९८५ तक

स्वातन्त्र्यवीरं सावरकर

(२८ मई को जिनकी पुण्य तिथि है।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रचार साहित्य बांटिए !

१.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद को	६०
२.	भारत के मुसलमानों का क्या करें ? —वेदभिक्षु:	४०
३.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	४०
४.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	४०
५.	सोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	५ ४
६.	हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	४०
७.	पोस्टर—दो प्रकार क	८०
८.	इस्लाम में क्या है ? —राकेशरानी	४०
९.	बुद्धि का मंत्र—कुंवर चाँदकरण शारदा	८०
१०.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ—जहीर नियाजी	४०
११	हिन्दू जागे ! देश बचाओ !	४०
१२.	इस्लाम—एक परिचय	४०
१३.	Bible in the Balance	६०
१४.	A Challenge to the Christian Faith	२५
१५.	पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु:	४०
१६.	पादरियों को चुनौती	२५
१७.	बाइबिल को चुनौती—ओम्प्रकाश त्यागी	४०
१८.	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	४०
१९.	और पादरी भाग गया	४०
२०.	Christianity Unmasked	१.००
२१.	The Clarian Call	४०
२२.	जन-ज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक	६
२३.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	५०
२४.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	१-५०
२५.	तमिल ट्रैक्ट	५०

१००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत कमीशन
५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन

अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, वेद मन्दि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य स्थापना हेतु संघर्ष करो।

स्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
स्पादक—राकेशरानी
५९७, हरध्यानसिंह मार्ग,
रौलबाग, नई दिल्ली–५
भाष : ५६२६३९
५६४७४१
८०१२११
षिक मूल्य : ३० रुपये
देश में : विमान से ४२ पौंड
६० डालर
समुद्री डाक से ४ पौंड, ६ डालर
जीवन : ५०१ रुपये
वा में : १५०१ रु.
अंक : तीन रुपये
ठ संवत् २०४२
१९८५; वर्ष १८, अंक १

वेदोपदेश

मनुष्य को ईश्वर की आज्ञा में ही रहना चाहिए

गायेन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे॥

सब मनुष्यों को ईश्वर की उपासना करनी चाहिए अर्थात् उसकी आज्ञा के अनुकूल वरतना चाहिए। जैसे पुरुषार्थी वेद विद्या को पढ़कर अच्छे-अच्छे कर्मों के साथ अपने और देश के दूसरे लोगों को पुरुषार्थी बनाते हैं वैसे ही दूसरों को भी बनाना चाहिए। जो परमेश्वर के सिवाय किसी दूसरे का पूजन करने वाला पुरुष है वह कभी उत्तम फल को प्राप्त होने योग्य नहीं हो सकता।

कौन गाते हैं भगवान् को? महर्षि दयानन्द ने मंत्र पर शीर्षक दिया है कि कौन-कौन-से आदमी किस-किस प्रकार भगवान की पूजा करते हैं? (१) पहले वे जो वेद ज्ञान प्राप्त करके उसके अनुकूल आचरण करते हैं और दूसरों को भी वैसा ही करने की प्रेरणा देते हैं। (२) दूसरे परमेश्वर का भजन करने वाले हैं जो गायत्री आदि छंद के गान से साम गान करते हैं, शास्त्रीय संगीत द्वारा ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

सम्पादकीय		३
महात्मा वेदभिक्षु: की अमर वाणी		८
ऐतिहासिकस्मृतियों को संजोये है यह मास	—राकेशरानी	११
राष्ट्रपरिवर्तन की साजिश है यह धर्मपरिवर्तन	—अनिल लोढा	१७
भाई भारत थे विशाल, भारतकीतरह !	—वसुन्धरा	२१
विजयपताका वेदभिक्षु: ने···	—सत्यव्रत चौहान सिद्धान्त शास्त्री	२३
सुभद्रा कुमारी चौहान	—आशरानी व्होरा	२५
विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर		२९
हिमालय की गोद में	—स्वामी सुंदरानन्द	३३
पश्चिमी भोजन घातक रोगों का कारण	—जोगेन्द्र सक्सेना	३६
मैंने उड़ीसा में क्या देखा	—प्रेमप्रकाशवानप्रस्थी	४१
कच्चा भोजन लें, रोग चला जाएगा	—विट्ठलदास मोदी	४५
सावरकार के स्वप्नो का भारत		४९
ऐसे थे सेठ मुंगालाल (प्रेरक प्रसंग)	—सदाजीवतलाल	५२
वन्देमातरम्—बन्देमातरम्—वन्देमातरम् गाना है	—बृजकिशोर 'अश्क	५७
गान्धी, गोडसे और भारत (आज का सन्दर्भ)		६०
युवा पत्रकार प्रमोदकुमार विनोद	—शिवकुमार गोयल	६५
धनके लालच में निर्धन बदल रहे हैं धर्म	—राकेशचन्द्र श्रीवास्तव	६७
मेवों के पूर्वज हिन्दू थे	—भगवान् दास	६९
आप ही के पत्र		७२
परिवार में ही है स्वर्ग और नरक (जीवन और व्यवहार)	—रामप्रसादसिंह साधक	८१
आदमी सिगरेट को पीता है और सिगरेट आदमी को पीती है (आपका स्वास्थ्य)	—बिहारीलाल	८४
नजर रखिये अपनी नजर पर (आपका स्वास्थ्य) अचरज क्या···?	—प्रफुल्ल शास्त्री	८७
गुरुभक्त आरुणि (बालजगत्)	—स्वर्गीय प्रेमचन्द्र शास्त्री	९१
गरमियों का बेनजी तोहफा—ठंडाई (महिला मंडल)		९५
भारत को सही अर्थों में भारत बनाओं	—युगलकिशोर चतुर्वेदी	९८
क्या आप जानते हैं ?	—सुरेशचन्द्र सारस्वत	१०५
क्या तिरस्कृत वाममार्गी धर्म फिर पनपेगा ?	—अनुरागी	१०७
लन्दन में भारतविरोधी मुहिम		१११

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

अठारहवें वर्ष में प्रवेश

इस अंक के साथ आपका प्रिय जन-ज्ञान अपने प्रकाशन के अठारहवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस पत्रिका की स्थापना स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु: जी ने संसार भर में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए की थी। महात्मा जी उत्साह के पुंज थे। उनके मन-मस्तिष्क में बड़ी-बड़ी योजनाएं थीं। उनके असामयिक निधन से हमारे कार्य को बहुत क्षति पहुंची है। लेकिन हम उनके सपनों को साकार करने के लिए यथाशक्ति अधिकाधिक कार्य करते रहे हैं और करते रहेंगे। जीवन के अन्तिम दिनों में महात्मा जी हिन्दू हितों की रक्षा के लिए अत्यन्त चिन्तित रहते थे। उनका लक्ष्य यह था कि हिन्दू समाज के सब घटकों को माला के मनकों की तरह एक सूत्र में पिरोया जाये। अपने स्वास्थ्य की परवाह न कर के भी वे महर्षिश इस लक्ष्य की प्राप्ति में जुटे रहे। उन्होंने अपने सभी आन्दोलन जन-ज्ञान के माध्यम से ही चलाये।

जन-ज्ञान का शुभारम्भ १७ वर्ष पूर्व राष्ट्र-सन्त रविशंकरजी महाराज के कर कमलों से हुआ था। इन १७ वर्षों में हमने इसे अधिकाधिक जनोपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है। जब हम जन-ज्ञान के पिछले अंकों को देखते हैं, तब हम पाते हैं कि महात्मा वेदभिक्षु: स्याही के अक्षर नहीं लिखते थे, आग के अक्षर लिखते थे। जब वे लिखते थे, तब वे अपने आप में डूब जाते थे—समाधिस्थ हो जाते थे। वे अपनी आहुति देने के लिए कृतसकल्प थे। जब तक वे जीवित रहे, जन-ज्ञान की लोकप्रियता लगातार बढ़ती रही। वस्तुत: उनका लक्ष्य था—बह्वामेमि प्रथम:, बह्वामेमि मध्यम: (मैं बहुतों में प्रथम होऊं, मैं बहुतों में मध्यम होऊं अर्थात् किसी भी स्थिति में पिछड़ूं नहीं।) वे इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सदा प्रयत्नशील रहे। इन प्रयत्नों का परिणाम भी निकला। जन-ज्ञान आर्य (हिन्दू) जगत् की श्रेष्ठतम् पत्रिका के रूप में उभरकर सामने आया। इसके विशेषांकों की धूम मची रही।

मेरा लगातार यह प्रयत्न रहा है कि जन-ज्ञान का वह स्तर और वे तेवर बने रहें। इस कार्य में मैं आपका सहयोग चाहती हूं। आप जन-ज्ञान को और भी अच्छा बनाने के लिए अपने अनुभवसिद्ध सुझाव हमें भेजें। लेखक और कवि अपनी रचनायें भेजें। आप इसकी ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी हों।

ज्येष्ठ संवत् २०४२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विज्ञापनदाता विज्ञापन भेजें। आज की दुनिया में विज्ञापन के बिना कोई पत्र-पत्रिका आत्मनिर्भर नहीं हो सकती। (अपवाद हो सकते हैं, पर सामान्यतः यही स्थिति है।) महात्मा वेदभिक्षु: जी जन-ज्ञान को गोरखपुर के कल्याण जैसी घर-घर पहुंचने वाली पत्रिका बनाना चाहते थे—अपनी विचारधारा को बनाये रखते हुए। हम करना तो बहुत कुछ चाहते हैं, लेकिन प्रेस सम्बन्धी कठिनाइयां हमारे मार्ग में बाधा बनकर खड़ी हैं। हमें एक अच्छे आफसैट प्रेस की तुरन्त आवश्यकता है। इसके लिए गत वर्ष रक्षाबन्धन के अवसर पर एक अपील जारी की गईथी, लेकिन अब तक की प्रतिक्रिया उत्साहवर्धक नहीं। इस कठिनाई से पार पाने के लिए भी हमें आपके सहयोग की आवश्यकता है।

हमारा प्रयत्न रहेगा कि जन-ज्ञान केवल वैदिक धर्म का प्रचारक और हिन्दू हितों का रक्षक ही न रहे, अपितु इसमें सब सुरुचियों के पाठकों की रुचि की सामग्री रहे और उस दृष्टि से यह नवनीत और रीडर्स डाइजैस्ट जैसी पत्रिका बने। यह मनोभाव महात्मा वेदभिक्षु: जी के दृष्टिकोण के भी अनुकूल है।

हमें पूर्ण आशा है कि आगामी वर्षों में जन-ज्ञान उत्कर्ष की नई ऊंचाइयों का स्पर्श करेगा और इस पत्रिका के रूप में जो ज्ञान-स्रोत वेदभिक्षु: जी हमारे लिए बहा गये हैं, वह और भी वेग से बहेगा—ज्ञान के इस कोष में वृद्धि ही होगी, कमी नहीं।

—राकेश रानी

वार्ता तो करिए किन्तु

पंचनद (पंजाब) की पावन भूमि पिछले कई वर्ष से अलगाववाद की आग में झुलस रही है। हत्या और विनाश के अलम्बरदार वहां की राजनीति में सिपह सालार बनकर एक ही मां के दो बेटों को एक-दूसरे से लड़ाकर और भिड़ाकर अपने रणकौशल पर जश्न मना रहे हैं। पंजाब की पहेली को सुलझाने के लिए सरकार अकाली दल को बारम्बार वार्ता की मेज पर आने के निमन्त्रण दोहरा रही है। दूसरी ओर इस दल के नेता स्वदेश की महान् राजनेता स्वर्गीय इंदिरा जी के हत्यारों को 'शहीद' की पदवी प्रदान कर अपने मानसिक रुझान का परिचय दे रहे हैं। विचित्र विसंगति है कि जो हिन्दू स्वयं को पहले भारतीय और फिर कुछ और मानता है, पंजाब की पहेली को सुलझाने के मामले में उपेक्षित किया जा रहा है और उन लोगों को दुलराया जा रहा है, जो संविधान की धाराओं को सरे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आम भारत की राजधानी में अंगार लगा चुके हैं।

पंजाब में चार साल से जारी अकाली आंदोलन का परिणाम वहां वाणिज्य और उद्योग की तबाही के रूप में सामने आया है और इस स्थिति ने हिन्दुओं को ही सर्वाधिक सताया है। उन्होंने ही सत्रास झेला है क्योंकि पंजाब में वाणिज्य और व्यवसाय ही उनकी आजीविका का माध्यम है। दूसरी ओर अकाली दल के अनुगामी जो प्रायः किसान हैं, उन्हें सरकार की ओर से पूर्ण सुविधाएँ प्राप्त हो रही हैं क्योंकि उन्हें खेती बाड़ी से होने वाली आय पर आयकर चुकाने जैसी किसी परेशानी से दो-चार नहीं होना पड़ता। पंजाब की कुल जनसंख्या का अड़तालीस प्रतिशत हैं हिन्दू किन्तु सरकारी सेवाओं में उनकी स्थिति नगण्य-सी ही है।

कितना विचित्र है यह तथ्य भी कि 'धर्म-निरपेक्ष' भारत में छत्रपति शिवाजी की जन्मस्थली और कर्मस्थली महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री तो कोई अब्दुल रहमान अतुले हो सकता है, प्रणवीर प्रताप की पद रज से पावन रणशूरों की धरती राजस्थान में भी कोई बरकतुल्ला साहब कभी मुख्यमंत्री पद पर आसीन रहे हैं, हर हिन्दू के हृदय में विद्यमान जानकी (सीता) की जन्मदायिनी और चन्द्रगुप्त एवं महान् राजनीतिज्ञ चाणक्य की क्रीडा स्थली बिहार के सूत्रधार के रूप में श्री अब्दुल गफूर भी मुख्यमंत्री पद पर विराजमान रह चुके है, किंतु हरयाणा के अलग राज्य के अस्तित्व में आने के बाद से पंजाब में कोई सहजधारी (हिन्दू) मुख्यमन्त्री पद पर आसीन नहीं हो पाया।

खालिस्तान की पताकाएं फहराने वाले, इंडियन एयरलाइन्स के विमान का अपहरण करने वालों के लिए कानूनी सहायता जुटाने वाले और भिण्डर वाले जिन्दाबाद के नारे लगाने वाले तो दुलराए जा रहे हैं, और गुरु गोविन्द सिंह के 'रंगरेटे गुरु के बेटे', गोरक्षक, नामधारी एवं निरंकारी केशधारी होने के बावजूद पंजाब की समस्या के समाधान के लिए चल रहे 'अभियान' से सर्वथा दूर रखे जा रहे हैं। जहां तक पंजाब की हिन्दू जनता का सवाल है, उसका तो कोई पुरसां हाल है ही नहीं। जबकि स्थिति यह है कि अड़तालीस प्रतिशत हिन्दूजन और केशधारियों (सिखों) में से भी लगभग आधे जोकि नामधारी, मजहबी, निरंकारी आदि नामों से संबोधित किए जाते हैं, पंचनद की पावन धारा को लगाए जा रहे अलगावाद के पलीते के प्रति सतर्क और सजग रह कर भारता माता के जयगान में ही अपना कल्याण मानते हैं। किन्तु विडम्बना ही है कि पंजाब की समस्या के नाम पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अलगाववाद का राग अलापने वालों को ही सारे पंजाब का प्रवक्ता मानने की भूल राजनीतिज्ञ कर रहे हैं।

समस्या के निदान से पहले उसके मूल को खोजना होगा। जब इस दिशा में कोई प्रयास किया जाएगा तो यह तथ्य भी अवश्य ही प्रकाश में आएगा कि जिन्होंने क्षेत्रीय फार्मूला, पंजाबी सूबा और आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के गुब्बारे उड़ाये हैं, उनके असली इरादे मातृभूमि का एक और विभाजन कराकर 'खालिस्तान' की स्थापना के ही प्रतीत होते हैं। ये लोग सारे सिख समाज के प्रवक्ता होने की दावेदारी जताते हुए देश को तोड़ने के घिनौने खेल में संलग्न हैं। अपनी राजनीति की रोटी सेकने के लिए इन्होंने सारे पंजाब को एक दहकते हुए तन्दूर का रूप देने की पूरी कोशिश की है।

मुंह मांगी मुरादें पाकर भी ये तत्त्व सिखों से भेदभाव किये जाने का राग अलाप रहे हैं, जबकि तथ्य यह बता रहे हैं कि पंजाब में यदि भेदभाव हुआ है तो उनसे, जो स्वयं को गर्व से हिन्दू कहते आ रहे है, उपेक्षा हुई है तो उनकी जो केशधारी (सिख) होकर भी अकालियों की रागमाला के स्वरों में स्वर मिलाने को तैयार नहीं हैं। पंजाब में सरकारी विभागों में हिन्दुओं का प्रतिशत नगण्य है और पुलिस में भी उनका अनुपात शायद देश प्रतिशत से अधिक नहीं है।

ऐसी स्थिति में भारत सरकार के लिए यही उचित होगा कि वह पंजाब की समस्या का समाधान खोजने के परिप्रेक्ष्य में वहां एक आयोग का गठन उच्चतम न्यायालय के किसी न्यायाधीश की अध्यक्षता में करें जो पिछले चार साल के दौरान उग्रवादियों द्वारा किए गए कारनामों की पूरी-पूरी जांच कर उन तत्त्वों का पता लगाते जो इनकी प्राणवायु बने रहे हैं और निरीह हिन्दुओं और राष्ट्रभक्त सिखों के खून से होली खिलाते और खेलते रहे है।

दिल्ली में इन्दिरा जी की हत्या के बाद हुई हिंसा का शिकार हुए सिख बंधुओं की विधवाओं के लिए जो सरकार एक सौ के लगभग फ्लैटों की आवंटन करती है और पीड़ित परिवारों को मुआवजा दे रही है, उसे पंजाब के उन निरीह परिवारों के प्रति भी ऐसी ही कर्त्तव्य परायणता प्रदर्शित करनी चाहिए जो उग्रवादियों द्वारा की गयी हिंसात्मक घटनाओं के शिकार हुए हैं।

हमारा सुझाव है कि पंजाब की समस्या का समाधान खोजने से पूर्व सरकार एक त्रिसदस्यीय समिति का गठन भारत सरकार करे, जो पंजाब के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बारे में कोई भी निर्णय लिए जाने से पूर्व वहां के हिन्दुओं और उन सिखों को भी विश्वास में ले जो अकाली दल की सरगम पर ताल देने से इन्कार करते रहे हैं। जनता के इन वर्गों से बढ़ते गए भेदभाव का निवारण भी उतना ही आवश्यक है, जितना उन तत्त्वों की कथित शिकायतों का जिन्हें सरकार वार्ता के लिए बार-बार बुलाती है और जो श्रीमती इन्दिरा गांधी के हत्यारों की तुलना भी अमर हुतात्मा सरदार भगतसिंह के साथ करने में संकोच नहीं करते!

आवश्यकता इस बात की है कि पंजाब में राजकीय सेवाओं में विभिन्न वर्गों की स्थिति का आकलन कर उन्हें उनकी जनसंख्या के अनुपात से स्थान प्रदान किया जाए। जरूरत इस बात की है कि आज भी पंजाब में जो हिन्दुत्व-निष्ठ कार्यकर्त्ता विभिन्न कारागारों में बंद हैं, उन्हें तत्काल रिहा किया जाए! वे जेलों से बाहर आकर हत्यारों को शहीद नहीं बतायेंगे, वे किसी भिंडरावाले जय का नारा नहीं लगाएंगे, वे स्वदेश के विखंडन की प्रतीक कोई पताका नहीं फहराएंगे, अपितु वे तो भारत माता की जय का उद्घोष ही गुजाएंगे, वे तो उस पावन घाती वंदना के गीत ही गायंगे जिसके कण-कण में उन्हें गुरु गोबिन्द सिंह के 'जगे धर्म हिन्दू सकल भंड भाजे' का आह्वान सुनाई देता है। जिस माटी का कण-कण उन्हें अपने उन महान् पूर्वजों का स्मृति दिलाता है, जिन्होंने हर विदेशी आक्रांता का मुंह मोड़ा है। वे तो जय-जयकार करेंगे उस महान् राष्ट्ररक्षक गुरु तेग बहादुर का जिसने तिलक जंजू रखा था जिसने अपना शीश कटा कर भी भारत की महिमामयी संस्कृति का माथा ऊंचा उठाया था।

इसमें सन्देह नहीं कि विषयों में इन्द्रियों की प्रसक्ति से मनुष्य बुराई की ओर प्रवृत्ति होता है और उनके संयम से जीवन के लक्ष्य की सिद्धि को प्राप्त करता है। कामनाओं के उपभोग से कामना शान्त नहीं होती, प्रत्युत घी से आग की तरह वह और भी बढ़ती है।

यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि विषयों में प्रसक्त इन्द्रियों का अपने विषयों से हटाने मात्र से वैसा वास्तविक संयम नहीं किया जा सकता जैसा कि सदा ज्ञान से अपने आदर्श और विषयों के स्वरूप से सतत चिंतन से किया जा सकता है।

—मनुस्मृति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म या अधर्म ?

धरती की केवल एक समस्या है, धर्म रहे या अधर्म। अधर्म आकर्षक है, सरल है, इसलिए मनुष्य उस पर चलना आसान समझता है किन्तु इस पर चलने का निश्चित परिणाम दुःख-चिन्ता-कष्ट-क्लेश होता है।

धर्म एक चढ़ाई है, जिस पर चलने में कठिनाई अवश्य है पर यह व्यक्ति को उठाता है, पवित्र बनाता है, शान्ति-सन्तोष प्रदान करता है। धर्म प्रकाश है, प्रेरणा है, गति है, विश्वास है और है, अमरता का संदेश-वाहक।

अधर्म अंधकार है, पशुता है, शून्यता, अविश्वास और मृत्यु है। इसमें निरन्तर असन्तोष है, प्यास और पथभ्रष्टता है। अधर्म का मार्ग मृत्यु की ओर जाता है।

जीवन एक अविरल धारा है, जिसमें गति है, स्नेह-साधना-ममत्व का मिश्रण है। किन्तु धर्म जहां पतवार है अधर्म वहां नाव में छेद का प्रतीक। झूठ-पाखंड-चोरी-व्यभिचार-धोखा-हिंसा सब का जनक अधर्म है।

धर्म का उपासक देवता है तो अधर्म का असुर—धर्म यदि अमृत है तो अधर्म विष—धर्म यदि गंगा है तो अधर्म गंदा नाला। धर्म दूध है तो अधर्म शराब।

आज की ही नहीं धरती की शाश्वत् आवश्यकता है धर्म की स्थापना। इसी के लिए महापुरुष राम-कृष्ण-शंकर-दयानन्द समय-समय पर जन्म लेते रहे हैं। इसी के लिए देवता बलिदान देते रहे हैं, शहीद मृत्यु वरण करते रहे हैं।

और आज हमारा संघर्ष भी केवल धर्म की स्थापना के लिए है। अधर्म का तूफान जोरों पर है। प्रायः सभी समय के प्रवाह में बह रहे हैं किन्तु हम इस अधर्म के तूफान के आगे घुटने टेकने के लिए तैयार नहीं, हमें मरना स्वीकार है पर अधर्म अंगीकार नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपको अधर्म की छाया में रहने की स्वतन्त्रता है किन्तु यह तो सर्वनाश को स्वीकार करना है। आप का शरीर सदा नहीं रहेगा, फिर इसके मोह के लिए क्यों अपने को अन्धकार में भटकाते हो ?

यह क्यों भूल जाते हो कि तुम "शरीर" नहीं हो तुम, "आत्मा" हो। १०० वर्ष रहने वाले शरीर के लिए अमर आत्मा को क्यों भटकाते हो ? शाश्वत् आनन्द की प्राप्ति के लिए धर्म को क्यों नहीं अपनाते मेरे प्राण !

आज धर्म का शंख फूंकने के लिए शंख भी चाहिए और सुदर्शन चक्र भी। धर्म की स्थापना के लिए प्रत्येक स्तर पर युद्ध करना होगा। यह प्रभु का आदेश है और हम इसी ईश्वर आज्ञा का पालन कर रहे हैं।

प्रभु पुत्रो, हमारा साथ दो, धर्म की विजय के लिए हमारे साथ आओ। ईश्वर के आदेशों को स्थापित करने के लिये हम तुम्हें बुला रहे हैं—तुम्हें। उन्हें जो प्रभु के भक्त हैं।

कर्म करो पवित्र, धर्म स्वयं जीतेगा। साधन जुटाओ, साधना करो, प्रकाश फैलेगा। दुःख दूर होंगे, शान्ति-अमृत बरसेगा, धर्म पर चलो, धर्म पर चलाओ, धर्म को बढ़ाओ-बचाओ।

हम धर्म की रक्षा कर रहे हैं।
आप स्वयं अपना कर्त्तव्य सोचिए।

पत्थर भी पिघलते हैं

सुना था पत्थर भी पिघलते हैं। १२ वर्ष के बाद घूरे के दिन भी बदलते हैं। पर मैं पिछले ३० वर्षों से देख रहा हूं कि इन्सान भी अपने को बदलने के लिए तैयार नहीं।

प्रश्न यह उठता है कि दयानन्द के अनुयायी पत्थर से भी अधिक कठोर मन के क्यों हो चुके हैं कि वे अपने को बदलने को तैयार नहीं। शब्दों से दयानन्द की जय बोलकर वे समझते हैं कि उनका काम पूरा हो गया। मुसलमान-ईसाई-पाखंडी दनदनाते बढ़ रहे हैं पर हम मौन हैं। नास्तिकता बढ़े चिन्ता नहीं, धर्म मिटे परवाह नहीं, धरती के नक्शे से हमारा निशान मिट जाए पर हम इतने निर्लज्ज हो चुके हैं कि पिटते रहने पर भी कहते हैं हम जीत रहे हैं।

सच और झूठ में से झूठ को चुनकर हम उसके राही बन बैठे हैं। अपने घर में शेर बनकर आत्म-प्रशंसा में लीन होकर हम अपने हाथों अपनी मौत का सामान जुटा रहे हैं। आंखें होते हुए भी हम देखने को तैयार नहीं, दुनिया की समस्याओं को समझने के लिए हम तैयार नहीं, विश्व विजय का हमारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लक्ष्य अपने घर में भी तो विजय ध्वज नहीं फहरा सका।

मैं आशावादी हूं, इसलिए ही तो गालियाँ, ठोकरें, मुसीबतें खाकर दयानन्द का सपना पूरा करने के लिए युद्ध कर रहा हूं। पर कितने दयानन्द के भक्त ऐसे मिले जिन्होंने इस संघर्ष की राह को ज्वलंत करने के लिए हाथ बंटाया।

आर्यसमाजों को भाषण चाहिएं। नेताओं को गद्दियां चाहिएं, युवकों को नारे चाहिएं पर वे दयानन्द के भक्त कहाँ हैं जिन्हें विजय चाहिए।

रोम और मास्को में, अरब और चीन पर वेद ध्वज फहराने के लिए मृत्यु वरण कौन करेगा? कौन जलेगा इसलिए कि दयानन्द का सपना पूरा हो? बातें तो आसान हैं, पर काम करने के लिए आदमी कहाँ से आएं।

रोते हुए भी हंसना हमें आता है। मरते हुए भी जीवन के गीत गाता हूँ, इसलिए कि शायद कोई अपना जीवन मेरी झोली में डाल सके। दयानन्द के सपनों में रंग भरने के लिए अपना खून जो रंगों के लिए दे सके।

मेले-उत्सव-आयोजन देखकर लगता है कि कोई दयानन्द की अरथी उठा रहा है। राजनीति से रंग, प्रदर्शनों से पगा, वर्तमान भविष्य की नींव का पत्थर नहीं बन सकता।

भविष्य के लिए रक्त-मांस-हड्डी शरीर जलाकर ही भवन तैयार हो सकेगा। दयानन्द को अपना कहने वाले युवक क्या वर्तमान से अलग होकर कुछ करने की साध मन में नहीं सजा सकते?

कुछ बोलो तो सही, मन के पट खोलो तो सही, इन पंक्तियों को पढ़ने वालो! अपना मानस टटोल तो सही—तुम दयानन्द के लिए अपनी आहुति दे सकते हो?

धर्म के लिए दयानन्द ने प्राण दिये थे, हमें भी धर्म के लिए सब कुछ देना होगा। नारे-घोषणा-प्रस्ताव-प्रदर्शन कुछ न कर सकेंगे— यह सत्य है। यह मरने की राह है। जीना है तो मरना होगा—अन्य कोई राह है ही नहीं।

जो साथ आएं स्वागत—जो दूर रहें स्वागत। मैं जब तक जीवित हूँ कर्म करता रहूंगा। वेद मन्दिर निर्माण का सपना यमुना की बाढ़ या समय का कुचक्र नहीं तोड़ सकेगा।

धरती को वेदमय बनाने के लिए हम आगे बढ़ेंगे। अवैदिक मतों के जाल में मनुष्य को हम मुक्त कराएंगे। सर्वत्र सब धर्मस्थानों पर ओ३म् पताका

(शेष पृष्ठ ४४ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐतिहासिक स्मृतियों को संजोए है यह मास

—राकेश रानी

मई मास हमें स्मृति दिलाता है १८५७ के भारतीय स्वातन्त्र्य समर की जिसमें ब्रिटिश राज्य सत्ता को चुनौती दी थी नाना साहब पेशवा, रानी लक्ष्मीबाई, कुंवर सिंह और तात्या टोपे जैसे नरवीरों ने। हमें याद दिलाता है उस प्रचण्ड क्रांति की जो पेशावर से कलकत्ता पर्यन्त उठी थी। याद दिलाता है यह महीना हमें उस क्रांति के दौरान दिल्ली के प्रचंड घेरे की, कानपुर के महान् नरमेधा की। हमें स्मरण दिलाता है यह मई मास उस क्रांति के मूल में निहित ठोस तथ्यों की।

वस्तुत: १८५७ के इस स्वातन्त्र्य संग्राम को प्रदीप्त करने वाले दिव्य तत्त्व थे 'स्वधर्म व स्वराज्य' अपने प्राणप्रिय धर्म पर भयंकर विघातक व नितांत कष्ट पूर्ण आक्रमण हो रहे हैं, इस तथ्य को समझकर ही स्वधर्म रक्षक हेतु 'दीन-दीन' की गर्जना हुई थी। अपने निसर्ग प्रदत्त स्वातन्त्र्य को कपटपूर्ण चालों से छीने जाने के प्रयासों और राजकीय दासता की लौह शृंखलाओं को प्रिय मातृभूमि के कंठ में डाले जाने के घातक-प्रयत्नों को असफल कर स्वराज्य प्राप्ति की पावन इच्छा की पूर्ति और इस दास्य शृंखला पर किए गए प्रचंड प्रहार ही इस क्रांति का मूल थे। स्वधर्म प्रीति और स्वराज्य प्रीति के ये तत्त्व हिन्दुस्थान के इतिहास में जितनी उदात्तता सहित अभिकरत हुए हैं, उतने अधिक किसी देश के इतिहास में भी परिलक्षित नहीं होते।

चाहे विदेशी और पक्षपात के चश्मे अपने नेत्रों पर चढाकर लिखने वालों ने हमारी हिन्दू भूमि के उज्जवल चिख को कितने ही छिभोये रंगों से रंग देने की कुचेष्टाएं क्यों न की हों, किंतु जब तक हमारे देश के इतिहास में चित्तौड़ का पावन नाम अंकित है, गुरु गोविन्द सिंह का नाम विद्यपान है, सिंहगढ़ का नाम मिटाया नहीं जाता, प्रतापादित्य और विक्रमादित्य, छत्रपति शिवाजी और प्रणवीर प्रताप तथा आदि शंकराचार्य और देव दयानन्द के नाम हमारे इतिहास के पृष्ठों में अंकित हैं, तब तक स्वधर्म और स्वराज्य के मूल सिद्धान्त भारत भूमि की संतानों की अस्थियों और मज्जा में जमे ही रहेंगे।

स्वराज्य के लिए हिन्दुस्थान ने कौन-से प्रयास नहीं किए, स्वधर्म की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रक्षार्थ इस भारत भूमि ने कौन-सा ऐसा दिव्यव्रत है, जिसे अंगीकार नहीं किया? "सूरा सोही जानिए जो लड़े धर्म के हेत। पुरजा-पुरजा कर मरे तबहु न छाड़े खेत (गुरुगोविन्द सिंह)। "इसी रीति का परिपालन करते हुए स्वातन्त्र्य के मतवाले स्वधर्म हेतु रणांगण में उतरे थे, उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गए, फिर भी रणस्थल से पग पीछे नहीं धरा था उन्होंने। ऐसे प्रसंगों से भारत-भूमि का पावन इतिहास परिपूर्ण है।

स्वधर्म के लिए उठो और स्वराज्य की स्थापना करो, इस तत्त्व ने ही भारत के इतिहास में कितने ही दैविक चमत्कार किए हैं। महाराष्ट्र में समर्थ गुरु रामदास ने भी सैकड़ों वर्ष पूर्व यही आह्वान किया था।

देव दयानन्द ने भी इसी भावना की अभिव्यक्ति सत्यार्थ प्रकाश में की थी, जब उन्होंने यह उद्घोष किया था कि 'कोई कितना भी कहे, अपनों का निकृष्टतम शासन भी गैरों के सुशासन से बेहतर होता है।'

इतिहास साक्षी है कि १८५७ की इस क्रांति में स्वामी विरजानन्द और देव दयानन्द ने भी अपनी महती भूमिका निभाई थी।

१८५७ की यह क्रांति असफल हो गयी थी, किन्तु यह भी सत्य और तथ्य है कि इसकी असफलता के लिए दोषी थे वे तत्त्व, जिन्होंने अपने आलस्य और प्रमाद तथा स्वार्थ परता और विश्वासघात से इस पर मर्मान्तिक प्रहार किया था। उन महान् वीरों को इसकी असफलता के लिए दोषी सिद्ध करने का दुस्साहस किसी से भी नहीं करना चाहिए, जिन्होंने अपना गरम खून प्रवाहित करने वाली तलवारों को उठाकर, उस महान् पूर्व-प्रयोग के हेतु क्रांति के अग्निमय रंगमंच पर प्रवेश किया था और जो प्रत्यक्ष मृत्यु का भी आलिंगन कर आनन्द सहित झूम उठते थे। वे न तो उन्मादी थे और न विक्षिप्त ही, न ही वे विचारहीन थे और न ही पराजय में हाथ बंटाने वाले।

वस्तुतः उन्हीं की पावन प्रेरणा से भारत माता की गहन निद्रा भंग हुई थी और पराधीनता की जंजीरों को टूक-टूक कर देने के लिए सम्पूर्ण भारत जागृत हो उठा था उन्हीं के प्रयत्नों से उसी क्रांति के समय बहादुर शाह जफर ने अपनी १२ शेर में यह आकांक्षा व्यक्त की थी—

गाजियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की
तख्ते लंदन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की।

वीर सावरकर जयंती

यही मई मास हमें स्मृति दिलाता है स्वराज्य और स्वधर्म के इस महान्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपासक स्वातन्त्र्य वीर सावरकर की जो २८ मई, १८८३ को महाराष्ट्र के एक छोटे-से ग्राम भगूर में जन्मे थे और जिन्होंने स्वराज्य के पावन यज्ञ को धधकाने के लिए लन्दन तख्त तक हिन्दुस्तान की तेग चलायी थी।

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर क्रांतिकारियों के मुकुटमणि वह वीर थे जिन्होंने अंडमान के नाटकीय कारागार में अपनी जवानी कोल्हू पेरते हुए बितायी थी, ताकि भारत माता के गले में पड़ी गुलामी की जन्जीर टूक-टूक हो सके वही थे वीर सावरकर, जिन्होंने १८५७ की क्रांति को पहली बार भारतीय स्वातन्त्र्य समर की संज्ञा तो दी ही थी, साथ ही जिन्होंने हिन्दुत्व की एक सांगोदाग व्याख्या भी की थी। जिन्होंने सगर्व घोषणा की थी कि भारत हिन्दू राष्ट्र है। जो शुद्धि आन्दोलन के सबल प्रेरक थे तो हिन्दू संगठन भी जिनके जीवन का मूलमन्त्र था और राजनीति का हिन्दूकरण जिनका महान् स्वप्न।

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर ने हिन्दुत्व का दर्शन कराया था इन स्पष्ट शब्दों में—

"यह बात निश्चित है कि किसी पगड़ी विशेष में, ब्रह्मसूत्र में, चोटी में या गोमूत्र में हिन्दुत्व नहीं है। हिन्दुत्व कोई ताड़ पत्र पर लिखी हुई पोथी नहीं है, जो ताड़ पत्र के चटकाते ही चूर-चूर हो जाए और न आज उत्पन्न होकर कल नष्ट होने वाली कागज पर लिखी हुई धरमा ही हिन्दुत्व है। हिन्दुत्व गोलमेज परिषद का कोई प्रस्ताव नहीं है। हिन्दुत्व एक महान् जाति का जीवन है। वह सहस्रावधि पुण्यात्माओं के हुतात्माओं के युगानुकूल अथवा परिश्रम एवं प्रयत्नों का परिवार है। आज वह उतार पर है, किन्तु फिर भी समुन्द्र है। सुप्त होने पर भी ज्वालामुखी है। बेसुधी के चक्कर में, वायु के कारण से, उस विराट पुरुष के द्वारा प्रमाद के कार्य हो रहे हैं, किन्तु यह बेसुध स्थिति अर्ध्व ही है मृत्यु ही नहीं। इस हिन्दू राष्ट्र और धर्म के उत्कर्ष के लिए हवन होने को आज भी जिन शतावधि हुतात्माओं के शरीर का बिन्दु-बिन्दु मचल रहा है, उन हुतात्माओं की जलन और आत्म यज्ञ ही हिन्दू राष्ट्र के अक्षुण जीवन का साक्षी है, इस के पुनरुत्थान कहा भी है।"

जन-ज्ञान का १८ वें वर्ष में प्रवेश

उसी हिन्दुत्व के पुनरुत्थान के लिए इसी मई मास में १९३८ में देव दयानन्द के जीवन दर्शन के प्रति महात्मा वेद भिक्षु (वानप्रस्थ, पूर्व नाम धारतेन्द्रनाथ) ने जनज्ञान का प्रकाशन प्रारम्भ किया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुत्व की उसी पुनीत विचारधारा, वैदिक धर्म प्रचार, हिन्दू संगठन एवं शुद्धि यज्ञ की पावक अग्नि को प्रज्वलित रखने का कठिन व्रत लेकर 'जन-ज्ञान' अपने जीवन के १८ वर्ष में प्रवेश कर रहा है।

इस पथ पर चलते हुए हम अनेक आपदाएं झेल रहे हैं। अर्थाभाव तो हमारे समक्ष है ही, लगभग तीन दर्जन अभिदेशों का उपहार भी हमें अपनी ही सरकार से मिला है।

'जन-ज्ञान' के माध्यम से हिन्दुत्व की विचारधारा के प्रचार और प्रचार का जो मूल मंत्र हमें महात्मा वेदभिक्षु: ने प्रदान किया था, वह हमें इस मास नवीन संकल्प की प्रेरणा देता है। हम संकल्प ग्रहण करते हैं कि इस पथ पर अविराम चलते रहेंगे, बाधाएँ आएँगी हम सहेंगे, प्रहार होंगे, हम झेलेंगे, किन्तु सत्य की आराधना और हिन्दुत्व की साधना को मन्द नहीं होने देंगे। हमें विश्वास है जनज्ञान के लाखो पाठकों पर, हमें भरोसा है आप सबका आप में से प्रत्येक पाठक इस वर्ष कम से कम पांच नए ग्राहक बनाकर और एक वर्ष में कम से कम ५०१ रुपए की सहायता जन-ज्ञान को दिलाकर महात्मा वेदभिक्षु द्वारा लगाए गए इस पौधे को हराभरा करेगा।

हम यह भी स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हम जिस हिन्दुत्व के प्रचारक हैं, वह देव दयानन्द के स्वप्नों की वैदिक विचारधारा और स्वामी श्रद्धानन्द और वीर सावरकर के चिन्तन का वह परिवार है, जो एक सबल और सुदृढ़ भारत राष्ट्र की गारन्टी है। हम यह भी मानते हैं कि सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की विशुद्ध वैदिक चिंतन ही हमारा अन्तिम लक्ष्य है। अखिल मनुष्य जाति ही एक राष्ट्र है और पृथ्वी ही किला और एकत्म ही एक धर्म—इस चिंतन से हमारा कोई विवाद नहीं। किंतु हम यह भी विश्वास करते हैं कि जब कभी इस ध्येय को विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के भांति अपने प्रत्यक्ष व्यवहार में लाने की सिद्धता दर्शाएंगे और उस ध्येय की प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर का समय आयेगा तो उस पर पहला हस्ताक्षर यदि किसी का होगा इस हिंदू जाति का ही, इस हिंदू राष्ट्र का ही वसुधैव कुटुम्बकम् और हमारा स्वदेश, भुवन त्रय में वास' ऐसा कहने वाले तुकाराम और 'वाराणसी मेदिनी' को ही समझने वाले अद्वैतवादी शंकर हिंदू ही थे। वैदिक ज्ञान गंगा को जग-जग में प्रवाहित करने वाले देव दयानन्द भी हमारे प्रेरणा पुरुष हैं ही। किंतु जब तक संसार छोटी-मोटी जातियां, स्वतन्त्र राष्ट्रीयत्व के गुरु बनाकर दूसरों से अलग हो उन्हें पद दलित करना चाहती हैं, तब तक यह हिंदू राष्ट्र को भी अपने स्वतन्त्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अस्तित्व में रहना ही चाहिए, यह हमारा विश्वास है, क्योंकि जब तक ग्राम में चोर हैं, तब तक साहूकारों को भी अपने घरों में पक्की दीवारें बनानी ही होंगी।

हम संकीर्णता के पक्षधर हैं न साम्प्रदायिकता के 'जनज्ञान' के चिंतन का मर्मबिन्दु यही है। हम किसी के विरोधी नहीं किसी के प्रति वैर-भाव के प्रचारक नहीं। हम उस हिन्दुत्व के उपासक और प्रसारक हैं जिसका न्याय से सहिष्णुता और अन्याय से असहिष्णुता ही मूलमात्र है।

हमारा हिन्दू राष्ट्र की नैसर्गिक शक्ति में विश्वास है। हमें यह शक्ति पुनः उद्दीप्त होती हुई दिखायी दे रही है। हमारा संकल्प है कि हिन्दू राष्ट्र वर्तमान संघर्ष में विजय श्री का वरण करेगा हमारा विश्वास है कि हिंदू जो मानवता का प्रबलतम पक्षधार है, अन्ततोगत्वा विश्व कल्याण के लिए विजयी होगा। किंतु हमारा यह भी संकल्प है कि हमें इस महायज्ञ में जीवन दान देना होगा तो हम एक सेनानी के समान ऐसा करेंगे, महर्षि दयानन्द के समान समाज की उपेक्षा की हलाहल पान कर भी हम वैदिक धर्म का ही जयगान करते रहेंगे। मरेंगे तो प्रणवीर प्रताप और झांसी की स्वधर्म और स्वराज्य की पुजारी लक्ष्मीबाई के समान ही। हिन्दू से अहिन्दू होकर नहीं, कदापि नहीं।

जन-ज्ञान मासिक का नमूना

मुफ्त मंगाएं

हिन्दू राष्ट्र का सजग प्रहरी

×××

××

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

धर्म परिवर्तन

—अनिल सोडा

इन दिनों बहराइच में लगातार धर्म परिवर्तन की खबरें आई हैं। उत्तर प्रदेश विधान सभा में इसको लेकर हंगामा हो चुका है। धर्म परिवर्तन का यह सिलसिला मीनाक्षीपुरम् से शुरू हुआ तो पूरे देश में इस शृंखला में एक के बाद एक कड़ियां जुड़ने लगीं। भय, प्रलोभन पीड़ा में सहायता के प्रयत्नों के जरिए पूरे देश में चल रहे इन धर्मपरिवर्तन अभियानों का उद्देश्य केवल धर्मपरिवर्तन ही नहीं वरन् राष्ट्रीयता परिवर्तन, विचार-धारा परिवर्तन और राष्ट्र परिवर्तन भी है। यह धीरे-धीरे अधिकाधिक स्पष्ट होता जा रहा है।

२७ मार्च को हिंदू महासभा ने आंध्र प्रदेश के एक इलेक्ट्रानिक इंजीनियर इलंगोवन को फिर से हिंदू बनाया तो धर्मपरिवर्तन के ऐसे अभियान का पर्दाफाश हुआ जिसमें प्राकृतिक विपदा के मारे लोगों की विवशता का शोषण कर गांव के गांव हिंदू से मुसलमान बना दिए गए। फिर उनको लड़कियों के खाड़ा के शहजादों के साथ निकाह पढ़वा दिए गए।

यह कहानी है आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा, गुण्टूर, कृष्णा जिलों के उन गांवों की जो नवम्बर १९७७ के भयानक तूफान की चपेट में आकर नष्ट हो गए। बचे लोगों के पास कुछ बाकी न रहा। तब देश भर के स्वैच्छिक संगठनों ने वहां जाकर लोगों का हाथ थामा। इन संगठनों में जमायते-इस्लामी हिंद और जमीयत-उल-उलेमा भी थे। इन संगठनों ने लोगों को खाना दिया, पैसा दिया, पुनर्वास के लिए झोंपड़ी और नौकरी की भी व्यवस्था की। सरकार से भी पहले यह काम करके इन संगठनों ने लोगों का विश्वास जीत लिया। इसके इस्लामीकरण का दौर शुरू हुआ तो इन आठ गांवों के ही साढ़े चार हजार दिसम्बर, १९८० तक मुसलमान बना लिये गये।

धर्म परिवर्तन के इस अभियान के कर्ताधर्ता आंध्र प्रदेश जमायते इस्लामी के अब्दुल अजीज, सैयद नूरीशाह, मौलाना मुहम्मद हमीदुद्दीन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai
आदि मुस्लिम नेता थे जिन्होंने तूफान से बरबाद लोगों को पैसा और किसी-किसी को रोजगार उपलब्ध करवाया था।

यों मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि ये धर्म परिवर्तन राष्ट्र की चिंता क्यों बने ? यह दो धर्मों के अनुयायियों का मामला है। पर वास्तविकता इसे राष्ट्रीय महत्त्व का मुद्दा बनाती है, क्योंकि यह धर्म-परिवर्तन केवल धर्म परिवर्तन नहीं होते वरन् इनका प्रभाव राष्ट्र व राष्ट्रीयता पर भी पड़ता है।

आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा जिले के निरूमाडुरू गांव के निवासी तथा दिल्ली में जामिया मिलिया में इलेक्ट्रानिक्स के प्राध्यापक मुहम्मद ताहिर अली ने २६ मार्च, ८५ को फिर से हिंदू बनकर अपने पुराने नाम देवराज इलंगोवन को ग्रहण किया। इलंगोवन एक प्रतिभाशाली इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर है जिनकी खोजों का रक्षा मंत्रालय व यातायात मंत्रालय ने उपयोग किया है। उन्हें दो बार राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत भी किया जा चुका है। इलंगोवन की बहन अमेरिकी अन्तरिक्ष केन्द्र नासा में वैज्ञानिक हैं इसलिए इलंगोवन किसी भी समाज, देश या प्रदेश के लिए एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं।

इलंगोवन का यह धर्म परिवर्तन पूरे देश के लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यदि इलंगोवन धर्म परिवर्तन करने का प्रयास नहीं करते तो वे रियाज (अरब) में कार्यरत एक मुस्लिम युवती से ब्याह दिए जाते और २३ मार्च को अरब देशों की सेवा के लिए वहां भेज दिए जाते और शायद अपनी मां की ही तरह फिर कभी लौट कर नहीं आते। इलंगोवन ने मोहम्मद ताहिर अली से फिर इलंगोवन बनने के बाद न्यायालय में जो शपथ पत्र दिया है और जो बयान जारी किया है वह भारत में चल रहे अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्रों की ओर संकेत करता है।

उनके ही शब्दों में २५ नवम्बर ७७ के भयंकर तूफान के बाद जब आसपास के तूफान पीड़ित गांव पूरे के पूरे हिंदू से मुसलमान बनाए जा रहे थे तब मेरे गांव निडमनरू (जि० विजयवाड़ा) में भी ६२ परिवारों के ४५८ लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया जिसमें मेरी माता वी० कमला भी थीं ३० नवम्बर ७७ को मुसलमान बनाने के बाद उनका नाम अमीना बेगम रख दिया गया।"

"मेरे पिताजी श्री जे. सी. देशराज तूफान में लापता हो गये थे और हम उनकी लाश भी नहीं ढूंढ पाये थे।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्री इलंगोवन के अनुसार इसके बाद जमायत-इस्लामी के लोगों ने उनकी बहन शोभा का पता प्राप्त कर उसे पत्र लिखा और माँ से मिलने के बहाने अमेरिका से भारत बुला लिया। उसकी बहन माँ के हित की दुहाई देकर शोभादेवी से मेहरुन्निसा बेगम बना दी गई।

इसके बाद इलंगोवन का पता प्राप्त कर उसे दिल्ली पत्र लिख कर बताया कि आपकी माँ और बहन मुसलमान हो चुकी हैं। अब उनके जीवन यापन व बहन के विवाह के लिए आप मुसलमान हो जाइये। फिर इलंगोवन को २७ अक्तूबर १९७९ को बंबई लेजाकर अब्दुल रहमान गली की जामियाँ मस्जिद में मुसलमान बनाया गया और उसका नाम मुहम्मद ताहिर अली रखा गया।

अब मुहम्मद ताहिर अली की हर ओर पूछ होने लगी। हैदराबाद के निजाम ने प्रिंस मुकर्रम वोकेशनल ट्रेनिंग कालेज में व्याख्याता की नौकरी व महल में आवास देने की पेशकश की। पूर्व राजदूत व राज्यपाल स्व० अलीयावर जंग ने अपने चचेरे भाई से उसकी बहन की न केवल शादी करवाई बल्कि अपने खर्चे पर दोनों को अमेरिका भेजा। इसके बाद ताहिर अली को अनेक ऊंची मुस्लिम हस्तियों से मिलवाया गया जिनमें कुछ खाड़ी देशों के राजदूत भी थे। इन विदेशी राजदूतों ने इलंगोवन की प्रतिभा को भाँप लिया और खाड़ी के देशों का वीजा, टिकट व नियुक्ति पत्र देने की पेशकश की। उससे इंडो. अमेरिकन मेकेनिकल एंड इलेक्ट्रोनिक एंड स्टील की अपनी नौकरी छोड़ने व जितने ही पैसे लेकर भारत में इस्लाम का प्रचार करने को कहा गया जिससे उसने इनकार कर दिया।

एक बार उपराष्ट्रपति हिदायतुल्ला की निगाह इस पर पड़ गई और उन्होंने इन्हें जामिया मिलिया विश्व विद्यालय में इलेक्ट्रानिक का प्राध्यापक बनवाया।

इस बीच कहा जाता है कि इलंगोवन (ताहिर अली) की मां को उसकी इच्छा न होते हुए भी मक्का-मदीना की यात्रा पर ले जाया गया। ग्यारह माह बाद ले जाने वाले शेख ने उसे खबर दी कि उसकी मां मर गई है। अपने पिता की तरह माँ की भी वह लाश न देख सका।

यहीं से उसका हृदय वितृष्णा से भरने लगा। उसे विचलित होते देख ये मुस्लिम संगठन उसका विवाह अपनी पसन्द की किसी कट्टर मुस्लिम लड़की से करने का यत्न करने लगे ताकि वह अपनी आस्था निष्ठा न

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
बदल सके।

पहले विशाखापत्तनम के गुजुनक निवासी मुहम्मद अब्दुल खालिक की बेटी निखत अमीना से २७ मार्च ८३ को उसका विवाह तय कर दिया गया। इसके लिए अब्दुल खालिक ने इलंगोवन (ताहिर अली) को बीस हजार रुपए भेजे जो उसने अस्वीकार कर विवाह से इनकार कर दिया।

एक सप्ताह के भीतर इन संगठनों ने रामपुर (उत्तर प्रदेश) में सुलतान अहमद सिद्दीकी की पुत्री कु० अफरोज जहान को ढूंढ निकाला और ४ अप्रैल ८३ को इनका विवाह तय कर दिया जिसे अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आक्रमण मान कर इलंगोवन ने रद्द कर दिया। दोनों ही विवाह इलंगोवन की सहमति के बिना तय किए गए और दोनों ही बार उसकी शादी के कार्ड छपवा कर बंटवा दिए गए।

इलंगोवन को लगा कि उसके जैसे प्रतिभाशाली इंजीनियर पर अपना शिकंजा मजबूत करने के उद्देश्य से ये शादियां तय की गई ताकि वह इन मुस्लिम संगठनों व उनके रहनुमा देशों की कठपुतली बन कर उनके उद्देश्यों के लिए कार्य कर सके।

इलंगोवन के जानिया मिलिया परिसर में रहने से इन्कार करने व दो बार तय किए हुए विवाह ठुकराने से इस्लामिक संगठन न केवल उन्हें शक की निगाह से देखने लगे बल्कि उनके भीतर की स्थिति का परीक्षण करने के लिए उनके पूर्व धर्म को उनके सामने अपमानित करने लगे। इससे इलंगोवन (ताहिर अली) के भीतर सोया पुरखों का संस्कार व धर्म जागृत होने लगा। दूसरी ओर इस्लामिक संगठन उन्हें जल्द से जल्द किसी मुस्लिम लडकी के साथ निकाह पढ़वाकर भारत के बाहर भेजने की तैयारी करने लगे।

अन्ततः उन्होंने रियाज (सऊदीअरब) में कार्यरत एक नर्स मुहम्मदुन्निया बेगम से निकाह तय करके २३ मार्च को दोनों को रियाज भेजने की व्यवस्था कर डाली।

ताहिर अली (इलंगोवन) की रियाज में बीस हजार भारतीय रुपए प्रति-मास की नौकरी दिलवा दी गई।

इलंगोवन को आशंका हुई कि उसे रियाज ले जाकर हमेशा के लिए वहीं रख लिया जाएगा और इस्लामी देशों के तकनीकी विकास के लिए काम में लिया जाएगा और अपनी मां की तरह वह फिर कभी अपनी जन्मभूमि नहीं देख पाएगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'भाई भारत' थे विशाल, भारत की तरह!

□ वसुन्धरा

भाई भारतेन्द्रनाथजी को हमसे अलग हुए डेढ़ वर्ष के करीब होने को आया। किसी भाई का वियोग भुलाने के लिए यह समय कम नहीं, लेकिन हमारे भाई भारतेन्द्रजी में ऐसे अगणित गुण थे, जिनके कारण उनकी याद भुलाये नहीं भूलती।

जब वे गुरुकुल जेहलम में पढ़ते थे, तब उनके एक अध्यापक श्री राजपाल शास्त्री 'जयेश' (जो बाद में दिल्ली आकर वर्षों अध्यापनकार्य करते रहे और जिन्होंने भारतीय साहित्यकार संघ की स्थापना की) उनके बारे में प्रायः कहा करते थे कि "यह विद्यार्थी आगे चलकर बड़ा आदमी बनेगा।" उनके अन्य अध्यापकों श्री शिवकुमार शास्त्री, श्री ओंकार विश्व 'प्रणव' आदि को भी उन पर विशेष कृपा थी। किसी ने ठीक ही कहा है कि "पूत के पैर पालने में ही दिखाई देने लगते हैं।"

हम वैदिकधर्मी प्रतिदिन परमात्मा से प्रार्थना करते हैं—असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय। (हे प्रभु, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो। अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मृत्यु से अमृत की ओर ले चलो। मुंह से तो हम यह प्रार्थना कर देते हैं, लेकिन हममें से कितने लोग हैं, जो इस प्रार्थना को अपने जीवन में चरितार्थ करते हैं। हमारे भाई भारतेन्द्र जी होश सँभालने से लेकर जीवन के अन्तिम क्षण तक अपना जीवन इस प्रार्थना के अनुरूप ढालने के लिए प्रयत्नशील रहे।

ऐसा समझा जाता है कि बचपन के दिन खेलने-खाने के दिन होते हैं। लेकिन मैंने जब से होश सँभाला, भाई जी को किताबों और पत्र-पत्रिकाओं की दुनिया में डूबा पाया। बचपन से ही उनके इरादे बुलन्द थे। उनमें सांसारिक मोह की मात्रा बहुत कम थी। हमारे माता-पिता (पंडिता विद्यावती शारदा और पंडित गयाप्रसाद शुक्ल) ने जिन दिनों जन्म लिया, उन दिनों के लोगों के जीवन का कोई ऊंचा लक्ष्य होता था और वे उस लक्ष्य की पूर्ति में जुटे रहते थे। उन दिनों आजकल का-सा लक्ष्य हीनता और धनोपार्जन का वातावरण न था। भाई जी को बचपन से ही अपने माता-पिता से ऐसे

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्कार मिले कि हमारे जीवन का कोई ऊंचा लक्ष्य है, जिसे पूर्ण करके ही हमें इस संसार से विदा होना है।

याद नहीं पड़ता कि उनके जीवन का कोई ऐसा चरण भी बीता हो, जब उन्होंने किसी न किसी आन्दोलन में भाग न लिया हो। वे जिस आन्दोलन में भी भाग लेते, उसमें जान डाल देते। उनकी दीवानगी को देखकर मुझे एक शेर याद आ रहा है—

जिसे दीवानगी कहते हैं, वह दिल की हकीकत है,
गनीमत है जो सदियों में कोई दीवाना हो जाये।

अपने सार्वजनिक जीवन में अत्यन्त व्यस्त रहने के बावजूद भाई जी ने सदैव मेरी सुख-सुविधा का ध्यान रखा। एक आदर्श आर्य परिवार से मेरा वैवाहिक सम्बन्ध करवाया। मेरे परिवार की सुख-समृद्धि देख वे फूले न समाते थे। मैं यह सोचकर अपने को गौरवान्वित अनुभव करती हूं कि एक ऐसा महापुरुष मुझे भाई के रूप में मिला।

अधिक क्या लिखूं। इतना लिखकर ही अपनी लेखनी को विराम देती हूं कि ऐसा भाई कहां मिलेगा, जिसका हृदय भारत-सा विशाल हो।

एक आवश्यक सूचना

सिर्फ ३१ मई तक वेदभाष्य २७५ रु० में,
(लागत मूल्य ५०० रु०)

चारों वेदों के हिन्दी काव्य का मूल्य ३१ मई १९८५ तक ही २७५ रुपये रहेगा इसके बाद ३०१ रुपये हो जायेगा। कागज-छपाई की बढ़ती हुई कीमतों के कारण मूल्य आंशिक रूप से बढ़ाना पड़ रहा है।

कृपया ३१ मार्च तक अपना आदेश धन सहित भेज कर लाभ उठाएं।

अध्यक्ष
दयानंद संस्थान
करोल बाग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विजय पताका वेदभिक्षु ने...

उदित गगन के चिर प्रभात की क्षितिज ज्ञान से घेरी।
ज्येष्ठ और शिव श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति है मेरी ।।

इस धरती ने परम पुरुष से वेद ऋचायें पाईं,
अग्नि वायु आदित्य अंगिरा ने मिलकर के गाईं,
अखिल विश्व का सुरभित जिसने वातावरण किया है,
उपनिषदों का तत्त्व ज्ञान वैदिक पीयूष दिया है,
गौतम कपिल कणाद पातञ्जलि व्यास जैमिनी दर्शन,
जन मानस चैतन्य बना है पा जिनका सत्सर्जन,

ज्ञान और विज्ञान समन्वित गुण गाथा है तेरी।
ज्येष्ठ और..... ।।

राष्ट्र पुरुष भगवान् राम ने क्षत्रि धर्म को सींचा,
योगेश्वर मतिमान् कृष्ण ने चक्र सुदर्शन खींचा,
इस्लामी संस्कृति हिलाकर शौर्य सिन्धु मथ डाला,
अमर हुई तलवार शिवा की औ प्रताप का भाला,
पृथ्वीराज के शब्द वेध की है विख्यात कहानी,
लड़ी सिंहनी-सी बनकर के झाँसी वाली रानी,

विश्व विजय कर बजी अनेकों बार यहाँ रण भेरी।
ज्येष्ठ और..... ।।

यहाँ पद्मिनी ने चूमा है जौहर की ज्वाला को,
रण चण्डी दुर्गा ने पहना मुण्डों की माला को,
भूलेगा मेवाड़ नहीं पन्नाबाई की ममता,
ऐसा है चित्तौड़ कहाँ इस कुर्बानी की समता,
गांधारी द्रोपदी यहाँ जन्मी सावित्री सीता,
जिनका है प्रतिबिम्ब महाभारत रामायण गीता,

तीर्थंकर बन यहाँ अहिंसा महावीर ने हेरी।
ज्येष्ठ और..... ।।

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वुद्ध शंकराचार्य कुमारिल भट्ट हुए प्रतिवादी,
यहाँ गार्गी और भारती की है ज्ञान प्रसादी,
कालिदास भवभूति आदि कवि वाल्मीकि की कविता,
विदुर और चाणक्य पाणिनी थे संस्कृति के सविता,
यहाँ भतृहरि भोज चरकत औ वाणभट्ट की वाणी,
रोग-भोग से मुक्त जिसे पढ़कर हो जाता प्राणी,

रही अनिर्वचनीय यहाँ के सद्ग्रन्थों की ढेरी।
ज्येष्ठ और..... ॥

राष्ट्र देवता पर अर्पण कर दिया राष्ट्र का धन था,
इदन्न मम से बना हुआ क्या भामाशाही मन था,
चिने गये दीवारों में निकले विचार के सच्चे,
फतेहसिंह जोरावर से ध्रुवधीर यहाँ के बच्चे,
बलिदानी सिरमौर गुरु गोविन्दसिंह है मेरा,
गया सिकन्दर हार धन्य है पुरु पौरुष वह तेरा,

चन्द्रगुप्त की सैल्यूकस ने देखी अजब दिलेरी।
ज्येष्ठ और..... ॥

योगिराज अरविन्द तिलक टैगोर काव्य की टीका,
गीताञ्जलि के सम्मुख मिलटन शैक्सपियर है फीका,
भीमराव विधिविज्ञ विवेकानन्द विश्व की छवि थे,
गांधी जी नेहरू सुभाष इस स्वतन्त्रता की हवि थे,
झङ्कारित कर गये गोलवलकर फिर इसकी झाँकी,
दयानन्द ने वेदभाष्य कर कीमत जिसकी आँकी,

विजय पताका वेदभिक्षु: ने फिर से इसकी फेरी।
ज्येष्ठ और विश्वश्रेष्ठ भारतीय संस्कृति है मेरी ॥

—सत्यव्रत चौहान सिद्धान्तशास्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन् ५७ की क्रान्ति का सशक्त चित्रण करने वाली देवी

सुभद्रा कुमारी चौहान

—आशा रानी व्होरा

"सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सब ने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।"

इस एक कविता ने जिसे अमर कर दिया, उस कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने केवल वीरोचित गीत नहीं लिखे, स्वतन्त्रता-संग्राम में स्वयं भाग भी लिया। पति-पत्नी दोनों देश कार्य में व्यस्त रहने तथा समय-समय पर जेल जाने के कारण उन्होंने अपार आर्थिक पारिवारिक कष्ट भी सहे।

सुभद्रा कुमारी का जन्म प्रयाग में १९०५ में हुआ। माता-पिता की आठ में से सातवीं संतान। चंचल और तेजस्वी स्वभाव, गुण-कर्म वाली। बचपन से ही नौकरों और गरीबों की हमदर्द। इसके लिए अक्सर डांट भी खाती। स्कूली छात्रावास जीवन में महादेवी जैसी सहपाठिन का साथ मिला। महादेवी खामोश, गुमसुम रहने वाली, सुभद्रा चंचल, मुंहफट, पर गणित की कापी में कविता लिखने की समानता से दोनों सहेलियां।

१४ वर्ष की आयु में खंडवा निवासी श्री लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ शादी। रूढ़ि-भंग स्वभाव के कारण ससुराल में परदा नहीं किया तो कटु आलोचनाएं सहनी पड़ीं, "हाय राम, यह लक्ष्मण कैसी लड़की ब्याह लाया है, मुंह उघाड़े घूमती है।" क्रोधी स्वभाव के जेठ लट्ठ लेकर द्वार पर बैठ गए। सुभद्रा ने उसके डर के मारे घूंघट निकाल लिया और भीतर जाते ही उलट दिया। पति लक्ष्मण सिंह रूढ़ि-विरोधी, सुधारक और स्वतंत्रता-सेनानी थे। फिर सुभद्रा अन्य किसी की परवाह भला क्यों करतीं! आगे चल कर

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कविताएं लिखने, सभाओं में जाने और आज़ादी की लड़ाई लड़ने के लिए सुभद्रा जी को कम विरोध का सामना नहीं करना पड़ा। पर सास व जेठ की कटूक्तियां एक कान से सुनते, दूसरे कान से बाहर निकालते वह अपनी राह पर आगे बढ़ती चली गईं। अतः विरोध में भी धीरे-धीरे कमी होती गई।

पति-पत्नी दोनों अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी करने में जुटे थे कि १९१९ का जलियांवाला कांड घट गया। लक्ष्मण सिंह एम. ए. की पढ़ाई छोड़, १९२०-२१ के 'असहयोग आन्दोलन' में कूद पड़े। सुभद्रा नौवीं की परीक्षा देने जा रही थीं। उन्होंने भी अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़ दी और प्रेरणात्मक कविताएं लिखने लगीं। 'राखी की लाज' और जलियांवाला बाग में बसंत उनकी उन्हीं दिनों की ओजस्वी कविताएं हैं। बाद में लक्ष्मण सिंह, जो बी. ए., एल-एल. बी. थे ही, अपनी एम. ए. की पढ़ाई को आगे बढ़ाने का विचार छोड़ रोजी-रोटी के लिए वकालत करने लगे। तभी 'प्रताप' के सम्पादक सुप्रसिद्ध देशभक्त श्री गणेश शंकर विद्यार्थी का पत्र सुभद्रा जी के नाम आया, "बहन, तुम्हारे रहते लक्ष्मण सिंह मां की पुकार न सुन, वकालत में कैसे ?" बात पति-पत्नी दोनों को लग गई और लक्ष्मण सिंह ने वकालत छोड़ दी। लक्ष्मण सिंह को खंडवा से जबलपुर बुलवा कर 'कर्मवीर' में साहित्य सम्पादक बना दिया गया, जहां 'एक भारतीय आत्मा' श्री माखन लाल चतुर्वेदी प्रधान सम्पादक थे।

सुभद्रा का कार्यक्षेत्र अब जबलपुर हो गया। वहीं 'तिलक राष्ट्रीय विद्यालय' का कार्य स्त्रियों में जागृति व राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य, स्वयं सेवकों को संगठित करने का कार्य। लक्ष्मण सिंह भी तिलक विद्यालय में हैडमास्टरी करने लगे। माखन लाल जी गिरफ्तार हुए तो उनकी मुंहबोली बहन सुभद्रा उसी बिलासपुर क्षेत्र में गांव-गांव कांग्रेस का कार्य करने लगीं। वहीं उनका परिचय सुप्रसिद्ध साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार से भी हुआ। झंडा-सत्याग्रह में पंडित सुन्दरलाल, महात्मा भगवानदीन जैसे संगठनकर्त्ताओं के साथ कार्यरत सुभद्रा ने उस क्षेत्र से पांच हजार स्वयंसेवक जुटाने व पांच हजार रुपयों का फंड एकत्रित करने का भार सहर्ष अपने ऊपर ले लिया। स्वयं भी सत्याग्रह में भाग लेने पर जबलपुर से गिरफ्तार होने वाली प्रथम महिला थीं।

जेल में बीमार हो जाने पर उन्हें जल्दी रिहा कर दिया गया था। पति के लिए 'कहीं हो प्रेम में पागल, न पथ में ही मचल जाओ' और सत्याग्रही के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए रोज़ी-रोटी की विकट समस्या पर 'पापी पेट' जैसी कविताएं उन्हीं दिनों की हैं। 'टाइम्स आफ इण्डिया' की एक टिप्पणी में उन्हें 'लोकल सरोजिनी' कहा गया। १४ अगस्त, १९२३ को राष्ट्रीय नेताओं के जबलपुर आने पर निषेधाज्ञा का उल्लंघन कर वह जलूस में शामिल हुईं। पर माखन लाल जी की सलाह पर स्वयं को गिरफ्तारी से बचा ले गईं, क्योंकि गर्भावस्था की स्थिति में थीं। झंडा-सत्याग्रह समाप्ति पर उन्होंने बेटी को जन्म दिया।

'कर्मवीर' के खंडवा चले जाने के बाद उनके सामने फिर रोज़ी-रोटी की समस्या थी। लक्ष्मण सिंह को फिर वकालत का सहारा लेना पड़ा। १९३१-३२ में पति-पत्नी दोनों फिर सत्याग्रह आंदोलन में सक्रिय हो गए। इसी बीच एक बेटा भी आ गया था। सुभद्रा कुमारी चौहान की सुप्रसिद्ध देशभक्ति-कविताओं के साथ प्रसिद्ध वात्सल्य-कविताएं भी आने लगी थीं। वह प्रेरणा जगाने के लिए मंचों पर भी सक्रिय थीं। १९३२ में लक्ष्मण सिंह जेल में थे। सुभद्रा आर्थिक व पारिवारिक कष्ट में खर्च कैसे चलाएं? बच्चों को घर पर अकेला छोड़ जेल कैसे जाएं? उन्हीं दिनों सुभाष चंद्र बोस ने 'रानी झांसी कविता वाली बहन' के बारे में सुन, उन्हें बच्चों के लिए फल-मिठाई सहित कुछ आर्थिक सहायता भेजी थी। यह कविता तब तक देश-भर में अपनी धूम मचा चुकी थी।

१९३२ में सुभद्रा जी की गांधी जी भेंट हुई। १९३६ के चुनावों में सरदार पटेल की सिफारिश पर जबलपुर की सुरक्षित महिला-सीट के लिए उनका नामांकन हुआ। प्रांतीय कमेटी को मानना पड़ा। पर विरोध में एक महिला खड़ी कर दी गई, जिसका नामांकन-पत्र गलत निकल जाने से सुभद्रा जी निर्विरोध चुनी गईं। फिर भी उनके खिलाफ झूठी शिकायतें भेजी जाती रहीं। पर सुभद्रा एक दबंग नारी थीं। विरोध को दबना पड़ा।

त्रिपुरी कांग्रेस के समय पेट में तीसरे गर्भ के साथ ट्यूमर के कारण वह काफी बीमार थीं। फिर भी उन्होंने अधिवेशन में भाग लिया। पर १९४१ के 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' के समय बापू के आदेश के बावजूद बेटी के आपरेशन के कारण वह स्वयं को गिरफ्तार नहीं करा सकीं। दूसरे प्रयत्न पर गिरफ्तार हुईं तो एक दिन बाद छोड़ दी गईं। तीसरे प्रयत्न पर उन्हें एक महीने की कैद की सज़ा मिली। जेल में भी वह महिला कैदियों के साथ दुर्व्यवहार के प्रश्न पर लड़ती रहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१९४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के समय लक्ष्मणसिंह सुभद्रा के गहने बेच कर खरीदी जमीन पर खेती कर रहे थे। घर में राशन आदि भर, वह जेल जाने की तैयारी करने लगीं। पर क्षेत्र की महिलाओं ने साथ नहीं दिया। फिर भी प्रयत्न करके सभा का आयोजन किया। भाषण दे रही थीं कि पुलिस द्वारा छोड़ा गया आंसू-गैस का गोला मंच पर उनके पास आ गिरा। लोगों ने सहारा देकर उन्हें मंच से उतारा। तभी घर में तलाशी होने की खबर मिली। पर सीधे घर न जा, वह इंडियन प्रैस के प्रतिनिधि के पास अपनी पुस्तक के अधिकार बेचने निकल गईं। २५० रुपयों में से १२५ रुपए उन्हीं प्रतिनिधि श्री रामानुजलाल श्रीवास्तव को दे, उन्हें बच्चों का संरक्षक बनाया, १२५ रुपए बड़ी बेटी सुधा के हाथ में दिए और जेल जाने के लिए तैयार हो गईं। तभी पुलिस पकड़ कर ले गई। जेल में उन्हें पति का झूठा संदेश 'बच्चे अकेले हैं, माफी मांग कर घर चली जाओ' देने वाले को उनका उत्तर था, "बच्चे उनके भी तो हैं। उन्हें बच्चों की अधिक चिन्ता है तो वह स्वयं क्यों नहीं माफी मांग लेते?" जेल अधिकारी चुप हो गया। बाद में पति ने सुना तो वह गद्गद हो गए। पर पेट का ट्यूमर उभरने पर उन्हें १९४३ में रिहा कर दिया गया था।

फिर गरीबी, बीमारी का वही अभिशाप। बड़ी बेटी सुधा के विवाह की चिन्ता। पर सामाजिक क्रांति के कथाकार मुंशी प्रेमचन्द के सुपुत्र अमृतराय बिना दहेज सुधा को ब्याह ले गए। कोई बाजा-गाजा नहीं, धूमधाम नहीं। लक्ष्मण सिंह बेटी के विवाह में पैरोल पर छूट कर आए और अपने हाथ के कते सूत की दो मालाएं बेटी-दामाद को पहना, आशीर्वाद दे, वापिस चले गए।

१५ फरवरी १९४८ को एक मोटर-दुर्घटना में सुभद्रा कुमारी का देहावसान हुआ। उनकी दाह-क्रिया के समय श्मशानघाट पर भी उसी स्वर में उनकी कविता की संबंधित पंक्तियां पढ़ी गईं, "मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थीं।

जैसे फूले हुए वृक्ष की सुगन्धि दूर-दूर तक फैल जाती है, वैसे ही पवित्र कर्मों की सुगन्धि दूर-दूर तक पहुंचती है।"

—नारायणोपनिषद्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विश्व कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर

सात मई जिनकी पुण्यतिथि है

कलकत्ता शहर के बीच दक्षिण में उत्तर की तरफ जाने वाली चितपुर रोड पर एक मोहल्ला है, जो जोड़ासांको कहलाता है। इसी मोहल्ले में एक विशाल कोठी है, यह कोठी ठाकुरों की कोठी के नाम से मशहूर है। इसी ठाकुर परिवार में सोमवार ७ मई १८६१ को रवीन्द्रनाथ का जन्म हुआ। अपने माता पिता की रवीन्द्रनाथ जी १४ वीं एवं अन्तिम संतान थे।

रवीन्द्रनाथ को पिता देन्वेद्रनाथ का 'महर्षि' कहकर पुकारते थे। उन्होंने लोग ऋग्वेद और उपनिषदों को बंगला भाषा में अनुवादित भी किया।

एक अच्छे स्कूल सेंट जेवियर्स हाई स्कूल में दाखिले के कुछ समय बाद ही अपनी प्रकृति के अनुसार विकास करने के आधार पर उनके परिवार ने उन्हें स्कूल से छुड़वा दिया।

रवीन्द्रनाथ वाल्मीकि और कालिदास को बहुत पसन्द करते थे। उनकी इच्छा थी कि मैं बिहारी बाबू की टक्कर का कवि बनूं। उनकी प्रथम कविता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'अभिलाषा' नाम की कविता थी। यह कविता नवम्बर-दिसम्बर १८७४ में तत्त्वबोधिनी पत्रिका में प्रकाशित हुई। इस कविता के साथ संपादक की टिप्पणी थी कि यह १२ वर्ष के बालक की लिखी हुई है,। इसके बाद अमृत बाजार पत्रिका के २५ फरवरी १८७५ में अंक में 'भारत' नाम की उनकी एक कविता प्रकाशित हुई।

२० दिसम्बर १८७८ को रवीन्द्र बम्बई से विदेश रवाना हो गये। इस दौरान लंदन में उन्हें २-३ अंग्रेज परिवारों में रहने का मौका मिला। परन्तु जल्द ही उनके पिता का पत्र आया, जिसमें उन्होने रवीन्द्र को भाई के साथ लौटने के लिए कहा—शायद उन्हे अपने पुत्र के बैरिस्टर होने का भरोसा नहीं रहा होगा। रवीन्द्र को लगा जैसे पिता के रूप में मेरा भारत देश मुझे बुला रहा है।

रवीन्द्रनाथ विलायत की सैर करके आए जरूर, परन्तु अन्य यात्रियों की तरह उन पर वहां के वातावरण का रंग कभी नहीं चढ़ा। इस दौरान उन्होंने अंग्रेजी में भी लेख लिखे।

सन् १८८१ की मई में एक दिन उन्हें उनके व्याख्यान के लिए तय किया गया। कलकत्ता के मैडिकल कालेज के सभागृह में रवीन्द्रनाथ के विचारों को सुनने के लिए बड़ी सख्या में लोग उपस्थित हुए। इसकी अध्यक्षता की विद्वान् एवं समाज सेवी श्री कृष्ण मोहन बनर्जी ने।

कुछ समय बाद उनके पिता द्वारा दूसरी बार विदेश जाने का आदेश मिला। १८८२ में 'सन्ध्या सगीत' के नाम से काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ। इसके बाद रवीन्द्र सदर रास्ते पर रहने लगे। यहीं इन्होने निर्झर स्वप्नभंग कविता लिखी। तुरन्त ही हृदय के उपर्युक्त अमित एवं अनुपम आनन्द की अवस्था में रवीद्रनाथ ने 'प्रभात उत्सव' कविता लिखी, जो उनके प्रभात संगीत में शामिल की गई। इस कविता में वे कहते हैं—

हृदय आजि मोर केमने गेलो खुलि,
जगत आसि सेथा करिछे कोला कुलि।

अर्थात् आज न जाने कैसे भेदे हृदय-कपाट सहसा खुल गए। पूरा विश्व प्रेम से मुझे गले लगाता सा प्रतीत हुआ। यह कैसे सम्पन्न हुआ, मैं कुछ भी समझ न पाया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समालोचकों के सान्निध्य में

इसी समय रवीन्द्रनाथ का परिचय कवि एवं आलोचक श्री प्रियनाथ सेन से हुआ। श्री प्रियनाथ सेन को 'संध्या-संगीत' बहुत भाया था। दरअसल 'संध्या-संगीत की समालोचना के कारण ही रवीन्द्रनाथ का श्री प्रियनाथ से परिचय हुआ। श्री प्रियनाथ बाबू की तरह एक और साहित्य प्रेमी नीति के संगीत से भी रवीन्द्रनाथ लाभान्वित हुए वह हैं—श्रीशचन्द्र मजूमदार। इन दोनों के सान्निध्य में रवीन्द्रनाथ का वैचारिक विकास हो रहा था। अब उनका व्यक्तित्व एक निश्चित आकार प्राप्त कर रहा था। इसी विकास की ओर अग्रसर होते हुए उनके काव्य में सौन्दर्य की चमक दमकने लगी।

संपादक के रूप में

रवीन्द्रनाथ शान्ति निकेतन के शान्त वातावरण में अपनी संकल्पित साधना के मार्ग पर अग्रसर होना चाहते थे। वे मानसिक अशांति एव अस्थिरता उत्पन्न करने वाली सभी उपाधियों से मुक्त होने के लिए उत्सुक थे और पुनरुज्जीवित 'बंगदर्शन' पत्रिका के सम्पादन का उत्तरदायित्व उन्हें स्वीकारना पड़ा। सन् १८७६ से ७७ तक 'बंगदर्शन' बंकिम बाबू के हाथ में था।

'बंगदर्शन' उन दिनों वह पत्रिका थी जो भारतीय संस्कृति के पुनर्जीवन के लिए नवजागृत बंगाल के विचारों का प्रतिनिधित्व कर रही थी। इसी पत्रिका में उनका निबन्ध 'कुमार संम्भव और शकुन्तला' प्रकाशित हुआ।

बंगदर्शन के सम्पादन के कारण ही रवीन्द्रनाथ उपन्यासों की रचना में प्रवृत्त हुए।

जनगणमन का जन्म। १९११ के दिसम्बर में जार्ज पंचम भारत आए। उनके सम्मान में श्री आशुतोष चौधरी ने जैसे ही रवीन्द्रनाथ से गीत लिखने को कहा, रवीन्द्रनाथ जी गुस्से में आग-बबूला हो गये। इसी मानसिक विक्षोभ में 'जनगणमन अधिनायक जय हे—' इस सुविदित गीत का जन्म हुआ।

सच तो यह है कि इस गीत में रवीन्द्रनाथ का मानस उस विशाल विश्व बन्धुत्व की भूमि पर स्थित है, जहां पहुंचकर वे भारत को महामानव के सागर-तीर पर बना हुआ 'तीर्थ' मानते थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

एक मसलचिक ने सर्वथा उपयुक्त शब्दों में इस गीत के तात्पर्य को अभिव्यक्त किया है—"क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या सिख, क्या ईसाई सभी मानव समूह 'प्रेम की रट जुबां पर रखते हुए उस ऐक्य विधायक भारत-भाग्य विधाता के सिंहासन के पास खड़े हैं। भारतीय संस्कृति का प्राचीन मार्ग उन्नति एवं अवनति के साथ-साथ युग-युग के असंख्य यात्रियों के चरण चिह्नों से अंकित है। इसी मार्ग पर चलने वाले भारतीयों के साथ सारथ्य करके वही भाग्य-विधाता स्नेहमयी माता के दुलार से उनारता हुआ उन्हें गन्तव्य स्थान पर सुखपूर्वक पहुँचाएगा। निद्रित भारत धीरे-धीरे जाग रहा है; उसके उदय गिरिका साल रश्मि-करों से विभूषित हो रहा है और उसी के अरुण आलोक में उस समर्थ भाग्य-विधाता राजराजेश्वर की सादर वन्दना कर रहा है।"

नोबेल पुरस्कार—१५ नवम्बर की शाम को रवीन्द्रनाथ जो चौपहाड़ी के बाग वन में अपने सहयोगियों के साथ टहलते हुए सहसा शान्ति निकेतन से अपनी ओर दौड़ने वाले लोगों को देखा और विस्मय के साथ पूछा—"कहिए! क्या बात है?"

लोगों ने उनके हाथ में एक तार दिया जिसमें ८००० पौंड के नोबेल पुरस्कार की प्राप्ति का शुभ संवाद था।

इस शुभ समाचार को सुनते ही रवीन्द्रनाथ के अनन्य भक्त एवं सहयोगी श्री अजित कुमार चक्रवर्ती अभिमान और आनन्द के मारे कुछ बोल ही न पाए और गद्गद होकर उनके पैरों से लिपट गए। रवीन्द्रनाथ ने तुरन्त उठाकर गले लगाया और बड़े प्रेम से बोले—"इसमें इतना हर्ष-विभोर उन्हें होने की क्या बात है अजित? पुरस्कार मिला है सही, किन्तु जीवन में शान्ति को सदा के लिए खो बैठा हूँ। अब संसार मुझे स्वस्थ नहीं रहने देगा।"

भारतीय साहित्य और विद्वत्ता का स्तम्भ ७ अगस्त १९४१ वृहस्पतिवार को कवि सम्राट् की आत्मा अनन्त में—शान्ति के महासागर में विलीन हो गई।

रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जाए पर वचन न जाई॥ सन्त तुलसीदास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिमालय की गोद में :-स्वामी सुंदरा नन्द

☐ प्रस्तुति—भगवान दास मोहाल

भारतीय संस्कृति विश्व की अन्य संस्कृतियों से भिन्न एवं प्राचीन भी है। इस संस्कृति के अन्दर हमारे देवी-देवताओं से जुड़ी अनेक कथाएं आज भी हमें सुनने को मिलती हैं और यदि आज देवी-देवता प्रत्यक्ष रूप से हमारे समक्ष नहीं हैं तो उनसे संबंधित वस्तुएं यथा विशाल पर्वत, नदियां और वन आज भी विद्यमान हैं, जो समय-समय पर हमारे मानवीय कल्याण के लिए उपहार स्वरूप कुछ न कुछ प्रदान करते रहते हैं।

इसी तरह से उत्तर में अडिग रूप धारण किए हिमालय भारत की शोभा बढ़ा रहा है। इसी हिमालय पर भगवान् शिव ने तपस्या की। इसी हिमालय से विश्व की सबसे निर्मल और पावन नदी गंगा का उद्गम भी है।

भारतीय संस्कृति का प्रतीक

हिमालय का वर्णन पुराणों में भी मिलता है इसकी श्रेष्ठता को और उज्जवल बनाने में हमारे महर्षियों एवम् साधुओं का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

हिमालय सदृश पर्वतों के सन्दर्भ में ऋग्वेद में कहा गया है—

यस्ये में हिमवंतो महित्वा
यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।

एक विदेशी वैज्ञानिक ने तो यहां तक कह दिया कि भारत के पास हिमालय जैसी अमूल्य निधि होने के बावजूद यदि वह अपने आपको निर्धन कहता है तो यह इसके विचारों का दिवालियापन है।

योगी बनाम छायाकार

स्वामी सुंदरानन्द योगी होने के साथ-साथ विख्यात छायाकार अविकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी हैं। पिछले ३७ वर्षों से ये हिमालय पर्वत एक स्थित गौरी कुंड (१०,३१० फुट)में अपने योग और छायाकारिता की साधना में निरन्तर जुटे हुए हैं।

स्वामी सुंदरानन्द ने हिमालय के उत्तुंग शिखरों, हिमानियां, हिमागारों और हिमालय की वनस्पतियों व फूलों के ५०,००० से भी अधिक चित्र लिये हैं। इन्होंने गंगोत्री पर हिमालय सग्रहालय और गौरी कुंड का विकास करने का संकल्प लिया है।

इस योजना के स्वामी जी के अनुसार तीन प्रमुख खण्ड हैं :—

पहला खण्ड है— गंगोत्री पर हिमालय संग्रहालय बनाने की जिसका नाम 'हिमालय संग्रहालय' रखने का विचार है। इस संग्रहालय में चित्र दीर्घा कला कृति, अवशेष दीर्घा तथा कुछ कमरे होंगे। यह सग्रहालय स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति को समर्पित होगा, क्योंकि श्रीमती गांधी ही ऐसी प्रधानमंत्री थी जो सात बार उत्तर काशी व हरसिल (गंगोत्री क्षेत्र) में आई। १९२३ में निर्मित 'तपोवन कुटी' विशिष्ट पर्वतीय शिल्प एवं वस्तु कला का अद्वितीय नमूना है।

योजना का दूसरा खण्ड है—'गौरी कुंड इन्दिरा घाट का निर्माण। गौरी कुंड में गिरते समय पतित पावनी गंगा १०० फुट ऊंचा प्रपात बनाती है, जिसका विकास होने पर यह विश्व के सबसे ऊंचे 'न्यागरा प्रपात' से भी सुंदर होगा।

तीसरा खण्ड है—भागीरथ शिला रॉक गार्डन का विकास। यह कार्य तत्काल करने योग्य है, क्योंकि स्वामी जी के अनुसार कई सौ मीटर चौड़ी एक-डेढ, कि० मी० लम्बी भागीरथ शिला को अनधिकृत कब्जों और नष्ट होने से बचाना गया है।

इसी योजना के तहत भागीरथ शिला पार्क में हिमालय के पुष्पों तथा विलुप्त प्राय ब्रह्मकमल, लेसर सिरताज तथा औषध वनस्पतियों तथा सालम मिश्री और आर्चा (रोबाब) रतन जोत, रूपवती आदि पौधों को उगाना तथा वन्य संरक्षण देना है।

५९-वर्षीय स्वामी सुंदरानन्द सर्वप्रथम सिद्ध योगी, योग गुरु और सन्यासी हैं, गुरु स्वामी तपोवनम के शिष्य हैं। जो १९२३ से निरन्तर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिमालय में निवास करते हुए १९५७ में चिट-समाधिस्थ हो गये। वैसे स्वामी सुंदरानन्द आंध्र प्रदेश के जिला नैल्लोर के एक ग्राम में जन्मे।

स्वामी सुंदरानन्द ने प्रथम गंगोत्री यात्रा १९४८ में गुरु की खोज में की थी और १९६२ तक इन्होंने गंगोत्री गोमुख मार्ग पर १०८ यात्राएं कर ली थी। स्वामी जी के अनुसार, "गोमुख में ही मेरा पुनः जन्म हुआ, तभी से कर्मयोग का शुभारम्भ हुआ।

योगाभ्यास तथा तपस्या के लिए ये १९५० से १९५४ के बीच अतिशीत में भी गंगोत्री में एकातवास में रहे और वहां इन्होंने शान्ति प्राप्त की। इन्हीं के शब्दों में, "उसी तपकाल में मैंने हिमालय का अलौकिक सौन्दर्य उसका अनिवर्चनीय ईश्वरीय रूप देखा और अंतस्सलिला गंगा का अविस्मरणीय देव संगीत सुना।"

१९५५ में उन्होंने पहली बार अत्यन्त दुर्गम और प्राणलेवा कालिंदी खाम (१९,५१० फुट) पर से गुजरने वाले बद्रीनाथ मार्ग पर जो पुराणों में देवमार्ग कहा गया है, व्यक्तियों को लेकर यात्रा की और उनकी प्राण रक्षा करते हुए स्वयं हिम-समाधि में जाते-जाते दैवयोग से ही बचे। "यहां मेरा मृत्यु से प्रथम साक्षात्कार हुआ और मैं निर्भय हो गया।"

इसी यात्रा के दौरान स्वामी सुंदरानन्द का छविकार, छायाकार के रूप में जन्म हुआ उसके बाद में वे इस मार्ग पर १० यात्राएं कर चुके हैं। १९६४ में उन्होंने सेना के थर्ड बोर्डर स्काऊट अभियान दल का मार्गदर्शन भी किया।

स्वामी सुंदरानन्द अब तक जोगिन, गंगोत्री, कोटेश्वर, केदार, डूम, चन्द्र पर्वत, भारत पर्वत (गढ़वाल में) कुमाऊं, नंदाखार बलजोरी (कुमायूं में) और कब्रू (सिक्किम) पर चढ़ चुके हैं। इनके अलावा ये २१,००० से २३,००० फुट) से भी ऊंचे अनेक शिखरों पर चढ़ चुके हैं, जिनमें श्री कट (२१,००० फुट), देवात्मा भृगुपन्थ (२२,००० फुट) आदि मुख्य हैं।

गढ़वाल में २८ से भी ज्यादा फूलों की घाटिया हैं जिनकी ऊंचाई २७४२ से ५२,०००फुट तक है। इन घाटियों में भ्यूडांर घाटी, रुद्र हिवाल, हरकी दून, सहस्रपाल, पंवाली काठां, आली बुरांसो, कुआरी, मदमहेश्वर, कल्पनाथ, बेदनी बुग्याल, रूप कुंड आदि मुख्य हैं। इन घाटियों में प्रिमुला, पद्मापुष्कर,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नीली पॉपी, विषकडाँर, ब्रह्म-कमल, ब्रह्मनाल, शालम पंजा, फेंण कमल, हिम कमल आदि हजारों प्रकार के फूल खिलते हैं।

हिमालय पर बसे निवासियों को 'खासा' कहते हैं, वैसे यहां राजपूत भी रहते हैं। पिथौरागढ़ में व्यासी, भोटिया, दरमवाल तथा चम्पोली और उत्तरकाशी में जोहरी तोलचा भारचा ब्रवा गाड जाति के लोग रहते हैं। इन सबको 'भोटिया' कहा जाता है।

आवश्यकता है—केन्द्रीय हिमालय प्राधिकरण की

स्वामी सुन्दरानन्द से यह पूछने पर कि क्या हिमालय से हमारे देश को कुछ आर्थिक लाभ हो सकता है? स्वामी जी ने कहा कि भारत हिमालय का उपयोग कर स्विटजरलैंड की भांति मनोरम और सुंदर जगहों की स्थापना कर लाखों रुपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त कर सकता है, क्यों कि हिमालय के भीतरी भाग में १४,००० से १८,००० फुट की ऊंचाई पर 'माला अबाना' नाम का विशाल मैदान है, जहां मानव बिना आक्सीजन के रह सकता है।

स्वामी सुंदरानन्द ने इस बात पर जोर दिया कि प्रधानमंत्री ने 'केन्द्रीय गंगा प्राधिकरण' की स्थापना का जो आश्वासन दिया है, उसी भांति 'केन्द्रीय प्राधिकरण' की स्थापना भी की जानी चाहिए। हिमालय के क्षेत्रों का गहरा और व्यापक अध्ययन किया गया है, जिनमें योजना आयोग के सदस्य तथा प्रख्यात भौतिक शास्त्री प्रो० एम०जी०के० मेनन, चिपको आन्दोलन के नेता श्री सुन्दर लाल बहुगुणा तथा पश्चिम जर्मन वैज्ञानिक प्रो० लीथ का समर्थन प्राप्त हुआ था, प्रोफैसर लीथ ने तो यहां तक कहा है,' यदि शीघ्र ही इन समस्याओं की ओर ध्यान नहीं दिया गया, तो हिमालय क्षेत्रों में एक भी वृक्ष दिखायी नहीं देगा।"

स्वामी सुंदरानन्द की प्रदर्शनियां देश और विदेशों में भी लग चुकी हैं; इनकी प्रदर्शनी में रंगीन छायाचित्र एवं श्याम-श्वेत छायाचित्र दोनों सम्मिलित है। अभी हाल ही में दिल्ली के आइफैक्स में इनकी प्रदर्शनी लगी।

हमें चाहिए कि हम प्रकृति द्वारा दिये गए उपहार का उचित ढंग से उपयोग और इसकी रक्षा करें।

इस आत्मा को न तो शास्त्र काट सकते हैं, न इसे आग जला सकती है; न इसे जल गीला कर सकता है न वायु सुखा सकता है। —गीता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पश्चिमी भोजन घातक रोगों का कारण

—जोगेन्द्र सक्सेना

पाश्चात्य भोजन के प्रेमियों को यह पढ़कर बुरा लगेगा कि उनके वैभव और प्रतिष्ठा का प्रतीक पाश्चात्य भोजन प्राणलेवा भी है। इतना ही नहीं, हृदय रोग, और कैंसर जैसे भीषण रोगों के लिए भी यही भोजन जिम्मेदार है। ज्याफरी केनब के अनुसार पश्चिम में आम विश्वास यह है कि अच्छा स्वास्थ्य सौभाग्यदायक होता है और बीमारी, जीवन में होने वाली एक साधारण घटना है हृदय रोग से होने वाली मृत्यु को ऐसे ही माना जाता है जैसे कोई बड़ी दुःखदायी घटना हो गयी हो, मोटर के नीचे कुचल कर मर जाने के समान। ऊंचे पदों पर काम करने वाला प्रशासक वर्ग इसलिए अपने स्वास्थ्य के प्रति सदैव सजग रहता है और समय-समय पर अपनी डाक्टरी परीक्षा करवाता रहता है।

चिकित्सा प्रौद्योगिकी ने शल्य चिकित्सा के ऐसे तरीके निकाल लिए हैं और उनके बारे में इस प्रकार से बात की जाती है मानो शल्यक्रिया द्वारा धमनी उपमार्ग (कारोनरी बाईपास) के अन्दर बनाने या शरीर के अन्दर किसी खराब अंग (मुख्यतः दिल को) बदलने का काम वैसा ही हो जैसे कि किसी मशीन के अन्दर के बिगड़े हुए किसी पुर्जे को बदल देने का होता है। किन्तु सच्ची बात तो यह है कि चाहे पुरानी मशीन का नई मशीन से सौदा किया जा सके किन्तु हमारे अपने रोगी शरीर का किसी स्वस्थ शरीर से सौदा नहीं किया जा सकता और न ही हम आयु से जीर्ण हुए अपने शरीर को सम्राट् के समान पुत्र से यौवन दान लेकर पुनः युवा बना सकते हैं। इसलिए प्रश्न उठता है कि दिल के दौरे जैसे रोगों से, जिनसे बड़ी संख्या में लोग काल कवलित हो जाते हैं, बचने का सब से अच्छा तरीका कौन-सा है। इसे जानने के लिए यह जानकारी प्राप्त करना और भी अधिक जरूरी है कि आखिर ये रोग होते क्यों हैं?

कारणों का ज्ञान नहीं

पश्चिमी देशों के चिकित्सकों को इन रोगों के होने के कारणों के बारे में अभी तक कोई ज्ञान नहीं था। इन रोगों को अभी तक वे मनोग्रन्थि सम्बन्धी जटिल क्षयकारी रोग कहकर अपना संतोष करते रहे हैं। उनकी दृष्टि में ये रोग जिनका कारण अभी तक पहेली बना हुआ है वृद्धावस्था की देन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानते हैं। पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति में चिकित्सकों को केवल इतना ही पढ़ाया जाता है जिससे वे रोग-विशेष की पहचान कर उसका इलाज कर सकें। उनको उस रोग को होने से रोकने के उपाय नहीं सिखाए जाते। यह तभी हो सकता है जबकि उनको क्यों और कैसे के बारे में पता हो और इन रोगों की रोकथाम के लिए क्यों और कैसे का पता लगाने के लिए बजट बहुत थोड़ा होता है।

इस समय असलियत यह है कि इन तथाकथित पेचीदा रोगों से होने-वाली मौतों की संख्या इतनी अधिक हो गयी है कि चिकित्सा विज्ञानी अब इस पर फिर से गौर करने के लिए मजबूर हो गए है। इन रोगों से होने वाली असामयिक मौतों की संख्या में इतनी अधिक वृद्धि ने चिकित्सा व्यवसाय के महारथियों को इन्हें महामारी न कहकर महाविनाशक या विध्वसकारी (होलोकास्ट) कहकर पुकारने पर बाध्य कर दिया है।

अब ! अब क्या किया जाए ? विगत बीस वर्षों में चिकित्सकों और चिकित्सा विज्ञानियों ने इस बात का निश्चित रूप से पता लगा लिया है कि इन रोगों के मूलभूत कारण चार हैं और इन चारों ही कारणों का यूरोपीय लोग प्रतिदिन सामना करते हैं। ये कारण हैं बहुत अधिक शराब पीना, धुआंधार धूम्रपान करना, नियमित रूप से व्यायाम न करना, जिससे शरीर में तनाव पैदा होता है और जिसे क्षुण्ठा कहा जाता है। किन्तु इनके अलावा सबसे बड़ा कारण है हानिकारक भोजन।

आहार शिक्षा पर राष्ट्रीय सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर जे.एन. मोरिस के शब्दों में ब्रिटेन और पश्चिमी देशों में चिकित्सक और अनुसंधान वैज्ञानिक हानिकर भोजन के मुद्दे पर इतने अधिक उत्तेजित और असाधारण रूप से एक मत के हैं कि लोगों को जो भोजन खाने को मिलता है, उसमें बहुत अधिक वसा (चर्बी) होती है जो कि पशुओं, दुग्धशालाओं और संसाधित भोजन में रहती है। बहुत अधिक मात्रा में संसाधित शर्कराएं और परिशुद्ध शर्कराएं जैसे सुक्रोज, ग्लुकोज, फ्रुटोज और चाशनियां होती हैं, शर्कराएं क्रमशः ईख, अंगूर और फलों से बनाई जाती है। ये शर्कराएं हमारे भोजन में उपेक्षित रहती हैं। आंकड़ों के अनुसार भोजन में बहुत अधिक मात्रा में लवण रहता है।

इस प्रकार मोटे तौर पर कैलोरी यानी ऊष्मांक के हिसाब से ब्रिटेन के भोजन में खाद्य पदार्थों में ३० प्रतिशत वसा; २० प्रतिशत शर्कराएं और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

६ प्रतिशत मादक द्रव रहते हैं। इस प्रकार ब्रिटेन बनाम पश्चिमी देशों के राष्ट्रीय भोजन में ६६ प्रतिशत ऊर्जा तो रहती है किन्तु उसमें पोषक तत्त्व बहुत कम या नहीं के बराबर रहते है।

इसका अर्थ यह हुआ कि पाश्चात्य देशों में वास्तविक समस्या अधिक भोजन और अल्प पोषण की है। क्योंकि वहां जो भोजन किया जाता है, उसमें पर्याप्त मात्रा में रेशे नहीं रहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि उनके भोजन में स्वास्थ्यकर अन्न और ताजा सब्जियां और फल नहीं रहते। इन सभी में शरीर के पोषक तत्त्व जैसे प्रोटीन, विटामिन और खनिज पर्याप्त मात्रा में रहते हैं। इस प्रकार फूहड़ या मुंहफट भाषा में कहा जाएगा कि पाश्चात्य भोजन पोषक नहीं प्राण लेवा होता है।

पोषक तत्त्वों का अभाव

लेकिन अब वहां के लोगों के जहन में यह बात धीरे-धीरे घर करती जा रही है कि इनके भोजन में स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य सारभूत पोषक तत्त्व कम मात्रा में रहते हैं। भोजन में अधिकांश भाग वसा, विशेषकर शर्कराओं का रहता है। इस प्रकार पोषक तत्त्वों की कमी रहने के कारण कुपोषण होता है, जिससे शरीर के रोगी बन जाने का खतरा रहता है।

शरीर को अपने पोषण के लिए भोजन से विटामिन, खनिज, कुछेक सारभूत वसा और प्रोटीनें सीधे रूप से प्राप्त करना अति आवश्यक रहता है। उनके अभाव में कुछ विशेष बीमारियों और विकारों के हो जाने का खतरा रहता है। पश्चिमी देशों के लोग जो भोजन करते हैं उसमें पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्त्व नहीं रहते। भोजन वास्तव में ऐसा होना चाहिए जिसमें विटामिन, खनिज, सारभूत वसा और सारभूत प्रोटीनें (एमीनो एसिड) पर्याप्त मात्रा में रहते हैं। पाश्चात्य भोजन ही पाश्चात्य लोगों के रोगों का सबसे बड़ा कारण है, इसके पक्ष में इतने सबल और अकाट्य प्रमाण मौजूद हैं कि उनसे अधिक ठोस प्रमाण और कोई नहीं हो सकते। ये सभी प्रमाण इस बात की पुष्टि करते हैं कि जो रोग पश्चिमी देशों में सामान्य या महामारी के रूप में पाये जाते हैं, वे उन देशों में जो अभी तक उनके सम्पर्क में नहीं आये हैं या तो नहीं हैं या नगण्य-से हैं। पश्चिमी देशों के बाहर के लोग पाश्चात्य लोगों के सम्पर्क में आने या उनके समाज में उठने-बैठने से वहां के रोगों के शिकार बन जाते हैं। यहां यह स्मरणीय है कि भारत में सिलसिल यानी उपदेश और गोनोरिया (सूजाक) जैसे घिनौने रोग पश्चिम की ही सौगात हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनेकों प्रयोगशालाओं में किए गए अध्ययन यह बताते हैं कि शर्कराज के कारण पथरी, पित्त अश्मरी (मूत्र रोग) और हृदय रोग होते हैं, साथ में मोटापा बढ़ता है और दांत खराब होते हैं। इन अध्ययनों में उन कारणों का भी पता लगाया गया है जो इनके लिए जिम्मेदार हैं।

पाश्चात्य देशों में होने वाली बीमारियों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है—घातक, जैसे हृदय रोग और कैंसर। पंगु बनाने वाली बीमारियां जैसे मधुमेह, फोड़ा और पथरी। कमजोर बनाने वाली बीमारियां जैसे दांतों के रोग, कब्ज, वजन का बढ़ना आदि। इसलिए ४० वर्ष की उम्र पर पहुंचते-पहुंचते पश्चिमी लोगों को इनमें से कोई न कोई बीमारी हो जाती है। लेकिन अब तो इनकी भारत में भी कमी नहीं है।

एक प्रश्न जो आम तौर पर पूछा जाता है वह है कि अगर पश्चिमी भोजन प्राणलेवा है तो उन देशों के सभी लोग पाश्चात्य बीमारियों के कारण क्यों नहीं मरते? उदाहरण के लिए जो लोग बड़ी मात्रा में पशु चर्बी खाते हैं उनको हृदय रोग नहीं होता, किन्तु कम मात्रा में चर्बी खाने वालों को वह घातक सिद्ध होता है। उत्तर है, जैव-रासायनिक रूप से व्यक्तिगत ग्रहण-शीलता। हर एक व्यक्ति की शरीर रचना, स्वभाव अभिरुचियां आदि एक जैसी नहीं होतीं। इसलिए खान-पान भिन्न शारीरिक रचना वाले लोगों पर भिन्न प्रभाव डालते हैं। कुछ लोग उपरोक्त दलील के अनुसार बड़ी बीमारी के शिकार नहीं बनते, किन्तु साधारण-सी बीमारी उनकी मौत का कारण बन जाती है।

हमारे खान-पान में खाद्य व्यवसायियों का बहुत बड़ा दखल रहता है। उन लोगों ने यह आम धारणा बना दी है कि मांड (स्टार्च) को खाने से मोटापा बढ़ता है—यह धारणा अब हम लोगों में भी घर कर गई है। स्वस्थ रहने के लिए काफी मात्रा में प्रोटीन खानी चाहिए और कैलोरी में कमी करनी चाहिए। किन्तु सच्ची बात यह है कि स्वस्थ रहने के लिए चोकर के आटे की रोटी, छिलके सहित दाल, सब्जी और आलू खाना ही सबसे अच्छा रहता है। ये सभी पोषणकारी, पेट भराऊ और सन्तोष देने वाले और स्वस्थ रखने वाले हैं। इनसे मोटापा भी नहीं बढ़ता।

इसलिए संसाधित शर्कराओं के साथ चर्बी और कंफेक्शनरी में इस्तेमाल की जाने वाली मीठी वसा मोटापा बढ़ाती हैं चूंकि उसमें सघन मात्रा में

(शेष पृष्ठ ४४ पर देखें)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैंने उड़ीसा में क्या देखा

—प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी

पंजाब से चलकर हरियाणा, देहली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र होती हुई रेल आठवें प्रान्त उड़ीसा २६ जनवरी को पहुँची। इस प्रान्त का नाम "उत्कल प्रान्त" भी है इसलिए राष्ट्रीय जनगण मन में "उत्कल" नाम आया है। मैंने खरियार रोड़ जिला कालाहाण्डी में अपने ठहरने का मुख्य स्थान बनाया। यहां से ३ किलो मीटर पर एक "गुरुकुल" है। जिसमें ७१ ब्रह्मचारी पढ़ते हैं। जिसके आचार्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती हैं। श्रद्धेय स्वामी जी बड़े ही कर्मठ एवं लगनशील व्यक्ति हैं। उनकी लगन का ही परिणाम है, कि हजारों ईसाई हर वर्ष पुनः "वैदिक धर्म" ग्रहण करते हैं।

वहां पानी की हर समय कमी रहती है। लोग प्रायः तालाबों में स्नान करते हैं, और पीने के पानी के कुएं सभी अच्छे घरों में हैं। शेष लोग जैसे-तैसे गुजारा करते हैं। नल लगाने पर १०० रु० प्रतिफुट खर्च आता है क्योंकि जमीन पथरीली है। लगभग पानी ११० फुट गहरा है। एक नलका लगाने पर १२०००-१३००० से कम खर्चा नहीं आ सकता है। सरकार ने बहुत से गांवों में नलके लगवाये हुए हैं। ताकि गरीब लोगों को पीने का पानी ताजा मिल सके। सभी लोग दोनों समय चावल ही खाते हैं; परन्तु कई गरीब चावल में Rice Powder मिलाकर बनाते एवं खाते हैं। क्योंकि राईस पौडर वहां १३०० रु० प्रति क्विंटल है। गरीबी यहां नग्न-नाच करती है। प्रायः लोग झोंपड़ियों में रहते हैं। तथा यहां की गौएं आधा-२ किलो दूध देती हैं। ७० प्रतिशत गांवों के लोग नंगे पाव चलते हैं तथा ५० प्रतिशत लोग तन के निचले भाग में ही कपड़ा पहनते हैं। जिस गांव के पास मैं ठहरा था। उस "आम सेवा" गांव में ७० घर हैं। वहां बिजली है, परन्तु केवल चार घरों ने ही घर में बिजली फिटिंग करवा रखी है। इसी गरीबी के कारण हमारे भाई ईसाईयों की झोली में चले जाते हैं। यहां आज भी भारतीय संस्कृति के चिन्ह चमक रहे हैं। मुझे १३ दिन में २८ परिवारों में जाने का अवसर मिला है। जाते ही पांव धोने के लिए जल, या पांव धोना, कई स्थानों पर स्वागत में १०-१५ बून्द दूध भी बिखेरते हैं तथा चावलों की वर्षा भी। पुनः माताओं ने जमीन पर या लकड़ी की छोटी सी पटड़ी पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिर रख कर नमस्ते की। परन्तु कोई भी "माता जी" मुंह से कुछ नहीं बोलीं, मैंने उन्हें "नमस्ते" बोलने को कहा। परन्तु वहां उड़ीसा भाषा ही समझते एवं बोलते हैं। अतः श्रद्धेय स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने जो "उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा भुवनेश्वर" के प्रधान भी हैं। मुझे एक ऐसा ब्रह्मचारी दे रखा था, जो हिन्दी भाषा भी जानता था और उड़ीया भाषा भी। वह ही बात चीत करने का मेरा माध्यम था। तथा मेरे भाषणों का ट्रांस्लेशन (अनुवाद) उड़ीया भाषा में करता था।

गुरुकुल में ६ दिन प्रचार हुआ, बीच में चार घण्टे के लिये मानडोसीली विद्यालय एवं कालेज में प्रवचन के लिये, स्वामी जी ने भेज दिया। ३ फरवरी सायं को हम गुरुकुल की गाड़ी से, जिसमें हम ५ व्यक्ति होते थे "नूआंपली" पहुंचे। वहां रात्रि में प्रचार हुआ, बाद में जो कपड़ा पंजाब से उन्हीं लोगों के वितरण अर्थ भेजा गया था। वही कपड़ा श्रद्धेय स्वामी धर्मानन्द जी की अनुपस्थिति के कारण मुझे स्वयं ही वितरण करना पड़ा। इस गांव के ३ ब्रह्मचारी आर्य गुरुकुलों में पढ़े हैं। श्री कुबेर नायक आर्य, श्री कामदेव जी आर्य और श्री योगेन्द्र कुमार जी आर्य जो इस गांव की शान हैं। तथा साथ के ही एक गांव में ही एक ब्रह्मचारी और रहते हैं, उनका नाम है, श्री सोम देव आर्य।

४ फरवरी को आश्रम की गाड़ी से "सरगढ़" पहुंचे। वहां आर्य समाज के प्रधान श्री राम भक्त जी एवं मन्त्री श्री कुल मनि जी ने हमारा बड़ा ही आतिथ्य किया तथा रात्रि में प्रचार हुआ। बहुत सुन्दर व्यवस्था एवं बहुत अच्छी हाजरी थी।

५ फरवरी हम कुमड़े पहुंचे। यह वह गांव है, जो पहले सारा ईसाई बन गया था। जिसे दिसम्बर १९८१ में पुनः श्रद्धेय स्वामी धर्मानन्द जी की प्रेरणा से "वैदिक धर्म" में सारा गांव आ गया। वहां गिरजा घर पंचायत की भूमि पर था। अतः इसे गिरा कर वहां "यज्ञ शाला" बना दी गई है। इन गांव वालों ने हमारा बड़ा ही स्वागत किया। ढोलक और चिमटे बजा-२ कर गांव में जलूस निकाला। तथा ओं जपो, ओं जपो से गांव को गुंजा दिया। बाद में प्रचार हुआ, तथा गरीबों को कपड़े बांटे गये, लोग बड़े ही खुश हुए।

६ फरवरी को "कलंगापली" विद्यालय में भाषण के पश्चात् सूखा नगर में पहुंचे। वहां रात्रि को प्रचार हुआ। लोग इस मिशन से बड़े खुश हुए कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"सोईयों की गोद में गये हमारे भाई पुनः वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में लाने कई कार्य हो रहा है। और ७ फरवरी को गुरुकुल लौट आये, और ६ फरवरी का प्रातः ही १५ व्यक्ति जिसमें ब्रह्मचारी महात्मा तथा उपदेशक थे वनावासपली" गांव जहां "यज्ञशाला" बनी हुई है, वहा थोड़ी देर ठहर करां "कांटापली" गांव सायं पहुंच गये। यहां रात्रि को प्रचार हुआ तथा यह शुद्धि का कार्यक्रम तय किया गया।

१० फरवरी प्रातः ही "बगोल" जिला सम्बलपुर "उड़ीसा" गांव में पहुंचे, जहां लगभग ५०० व्यक्तियों ने शुद्ध होना था। आसपास के गांवों से लोग दो बजे तक आते रहे। कुल ४६३ व्यक्ति पुनः अपने "वैदिक धर्म" में प्रविष्ट हुए। उन्हें पहले नये कपड़े पुरुषों को धोती कमीज माताओं को साड़ी और ब्लोज देकर यज्ञ पर बैठाया गया तथा आचमन के बाद यज्ञोपवीत सभी को दिये गये। पुनः आहुतियां देकर सभी ने मिलकर प्रार्थना बोली।

पुनर्मिलन के नियम

जो लोग पुनः "वैदिक धर्म" में आना चाहते हैं। उन्हें पहले—उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा, भुवनेश्वर के प्रधान जी के नाम स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती को "आवेदन पत्र" देना पड़ता है। जिसमें अपना नाम पत्नी का नाम और बच्चों के नाम तथा आयु लिखकर देनी पड़ती है। पुनः भिन्न-२ गांवों की आई (Aplication) आवेदन पत्रों को एकत्रित करके कोई ऐसा स्थान जहां सभी को पहुंचने की सुविधा हो, ऐसा स्थान निश्चित किया जाता है। पुनः तारीख निश्चित करके सभी तक सूचना पहुंचाई जाती है। फिर निश्चित स्थान पर जितने भाईयों ने पुनः "वैदिक सनातन धर्म" में आना हो, उसी हिसाब से हवन कुण्ड बनाये जाते हैं। पुनः शुद्ध होने वाली माताओं एवं भाईयों को क्रमशः नई साड़ी ब्लोज, नई धोती और कुर्ता देकर यज्ञ पर बिठाया जाता है। पहले आचमन, अंगस्पर्श, के पश्चात् सभी को यज्ञोपवीत दिया जाता है, फिर आहुतियां दिलाई जाती हैं। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् शुद्ध भाई, माताये बोलकर प्रार्थना करती हैं। विधर्म को छोड़कर स्वधर्म में प्रवेश पर भगवान् का धन्यवाद करते हैं। कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी परिवारों को "उत्कल" आर्य प्रतिनिधि सभा भुवनेश्वर की ओर से प्रमाण-पत्र दिये जाते हैं। जिसमें, व्यक्ति का पहला नाम तथा शुद्धि या पुनर्मिलन का नाम भरा होता है, इसी प्रकार एक परिवार का एक प्रमाण पत्र होता है। इस सारे कार्यक्रम के लिए भारी व्यय एवं परिश्रम करना पड़ता है। अन्त में सभी मिलकर "प्रीति भोज" करते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बहुत बड़ी खुशी की बात यह है। कि उड़ीसा सरकार ने उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा भुवनेश्वर के प्रमाण पत्र को मान्यता दे रखी है। उस प्रमाण पत्र द्वारा हमारे भाई अपने बच्चों को विद्यालय में फ्री शिक्षा दिला सकते हैं। यह सरकार की महानता है कि सरकार सभा को सहयोग दे रही है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भी थोड़ा सहयोग देती हैं परन्तु बहुत अधिक देना चाहिए, या सारा व्यय "सभा" वहन करे, तो और भी बहुत कम हो सकता है।

(पृष्ठ १० का शेष भाग)

लहराएंगे।

हम आज एक बार फिर अकेले ही धरती का भाग्य प्रवाह बदलने का व्रत लेते हैं और हमारे बाद क्या होगा की चिन्ता हम छोड़ चुके हैं। जो भी होगा ठीक होगा बस अब तो बढ़ना है। वेद को घर-घर पहुचाना है। गुरुदेव देव दयानन्द का सपना पूरा करना है।

आप अपना कर्त्तव्य स्वयं सोचिये, क्या सहयोग दे सकते हो। निर्णय कीजिये, आपका प्यार पाकर हम सब कुछ पा लेंगे। विश्वास कीजिए हम जब तक हैं तब तक हमारी हर सांस सत्य-धर्म-वेद का संगीत गुंजाती रहेगी और अंतिम क्षणों में भी हम यही कहेंगे, हम जीतेंगे—वयं जयेम।

(कार्तिक संवत् २०३५ के जन-ज्ञान (मासिक) से उद्धृत)

(पृष्ठ ४० का शेष)

कैलोरी रहती है। कैलोरी कम करने का सबसे अच्छा उपाय व्यायाम करना और अच्छा पोषक आहार लेना है।

हमारी अपनी दृष्टि से यह सन्तोष की बात है कि हमारे भोजन में पोषक तत्व अभी भी प्रचुर मात्रा में रहते हैं। किन्तु प्रश्न फिर उन्हीं खाद्य व्यावसायियों का आता है जो उसमें मिलावट करने से नहीं चूकते। एक तो खाद्य वस्तुओं में वैसे ही भरपूर मुनाफा मिलता है, फिर उनमें भी मिलावट करके अपने मुनाफे को दो गुना- चौगुना करने की हविस को पूरा करना राष्ट्रहित और लोगों के स्वास्थ्य के साथ गद्दारी करना है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विट्ठलदास मोदी

कच्चा भोजन लें, रोग चला जाएगा

मोरारजी भाई एक छोटे-से कमरे में चौकी पर बैठे थे, पुस्तकों और कागजों से घिरे हुए। बच्चे की तरह खुश और चपल, किसी औलिया की तरह मस्त। मैं देख कर दंग रह गया। उन के चेहरे पर मैं उस राजनीतिज्ञ और कूटनीतिज्ञ को, जिस से मैं दैनिक पत्रों द्वारा परिचित हूं, ढूंढ़ता रह गया।

"मैं आप से आप के प्राकृतिक चिकित्सा-सम्बन्धी अनुभव जानने आया हूं।" मैं ने कहा।

उन्होंने कुछ देर चुप रह कर कहा—"अनुभव क्या बताऊं! यह आदमी ही है, जो अपनी चिकित्सा नहीं जानता। कुत्ता भी जब कुछ गलत या ज्यादा खा लेता है, तब कोई घास खा कर उल्टी कर देता है। कुत्ता पहले ज्यादा खाता नहीं था, वह तो आदमी का बनाया पका भोजन करके यह गलती कर बैठता है, पर गलती का इलाज भी कर लेता है। बीमार पड़ने पर गाय खाना छोड़ देती है; पर यह आदमी ही है कि बीमारी में भी खाता है। प्राकृतिक चिकित्सा—वमन, विरेचन और लंघन—बस इतनी ही है। विरेचन के लिए एनीमा लेना चाहिए। आज आदमी जो बड़ी गलती करता है, वह यह है कि भोजन को चबाता नहीं। झट से खा लेता है। पशु जुगाली करता है—देर तक चबाता है। पर लोग जल्दी में भोजन को पानी के सहारे गले उतारते हैं। भोजन के साथ पानी पीना तो बन्द ही कर देना चाहिए।"

आगे उन्होंने कहा, "यह जल्दी खाने की बात आई भोजन को पकाने से। आदमी ने अग्नि का आविष्कार कर के अपना बहुत बड़ा नुक्सान किया है। बीमार पड़ने पर आदमी पका भोजन छोड़ दे, फल-तरकारी खाए, कच्चा दूध ले तो रोग चला जाएगा। कच्चे भोजन पर बीमारी में ही क्यों, यों भी रहा जा सकता है।"

अपने अनुभव सुनाते हुए वह बोले—"सन् १९२९ में मैं नौकरी करता था। इस दरम्यान मुझे दो मास मद्रास में रहना पड़ा। वहां होटलों में ऐसी कोई चीज मिलती नहीं थी, जो मैं खा सकूं। १९२५ में चाय और चीनी, दोनों ही मैं छोड़ चुका था, फलतः मैं कच्चे भोजन पर रहने लगा। फल-तरकारी और दूध लेता था। भाड़ में गेहूं भुनवा कर रख लिए थे। उन्हें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी दस-बारह, पन्द्रह तोले एक रोज लेता और खूब चबा कर खाता। मेरा स्वास्थ्य बिगड़ा नहीं, बल्कि ज्यादा अच्छा रहा। भोजन भी सस्ता रहा।

मैंने पूछा—"मोरारजी भाई, प्राकृतिक चिकित्सा से आप का परिचय कैसे हुआ ?"

वह बोले—"सन् १९१४ की बात है। मैं बम्बई के जी. टी. बोर्डिंग में रह कर पढ़ा करता था। वहां के पुस्तकालय में मुझे बर्नर मैकफैडेन की पांच भागों वाली 'इनसाइक्लोपीडिया आफ फिजिकल कल्चर' मिल गई और मैं उसे पढ़ गया। किताब अच्छी लगी, बात समझ में आई। उन दिनों मैं सिर दर्द से परेशान था। यह दर्द दो तीन महीने बाद होता, कभी जल्दी भी हो जाता और चार पांच दिन चलता। उस समय मेरी हालत खराब हो जाती, कुछ काम न कर पाता। इस बार वह दर्द होने पर मैंने उपवास आजमाने की सोची। उपवास शुरू किया, दर्द तीन चार दिनों में ही अच्छा हो गया। तीन चार दिनों के उपवास से सिर दर्द चला गया। सिर-दर्द फिर आज तक नहीं आया।...

"फिर एक बार मुझे मलेरिया हुआ। जब ज्वर १०४-१०४ डिग्री तक जाता था। तब मलेरिया दूर करने के लिए उपवास किया, इससे तेरहवें दिन मलेरिया चला गया। चौदहवें दिन अपने कपड़े धोये और पन्द्रह दिन जब मुझे एक भाषण करने जाना पड़ा तब एक गिलास मुसम्बी का रस ले कर उपवास तोड़ा और भाषण करने चला आगया। अन्य चिकित्साओं में रोग जाने के बाद भी रोगी को बहुत आराम करना पड़ता है, प्राकृतिक चिकित्सा में इस की जरूरत नहीं होती।

"मैंने जिन रोगियों की चिकित्सा की है, वे अधिकतर मित्र और परिवार के ही सदस्य हैं। घर के लोगों की तो मुझे चिकित्सा करानी ही थी, क्योंकि घर में सबसे बड़ा मैं हूं, मुझ से पूछे बगैर कहां जांए और मेरा प्राकृतिक चिकित्सा पर विश्वास है, इससे घर में सबकी जरूरत हुई प्राकृतिक चिकित्सा हो हुई।

मोरारजी भाई ने कहा, "अल्सर का रोग तो आजकल बहुत हो रहा है। किसी भी रोगी को तीन महीने तक केला-दूध खिलाओ, रोगी सुबह दोपहर शाम भूख के अनुसार खूब पके केले और दूध ले तीन महीने में ठीक हो जाएगा। कैंसर का रोग भी बहुत चल रहा है। वह अंगूर खाने से जाता है। रोगी अंगूर ही खाए। अंगूर के सिवा कुछ न लें। रोग चला जाएगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शरीर पर प्रतिक्रिया होनी चाहिए : यह रोग जाने की पहचान है। कष्ट कुछ घटना-बढ़ना चाहिए। ऐसा हो तो समझो रोग जाएगा। छह-आठ हफ्ते अंगूर पर रहना काफी होगा। कैंसर के सेल शरीर के सेलों को बिगाड़ते है ; वे अंगूर से बदल जाते हैं, नए हो जाते हैं। शरीर का नवीकरण हो जाता है। यदि स्वस्थ आदमी भी तीन-चार सप्ताह अंगूर ले कर रहे तो नया हो जाता है।"

अनुभव सुनाने की बात खत्म हो चुकी थी। कुछ अन्तिम सवाल के तौर पर मैं ने उन से पूछा—"आप तो देश के बहुत से प्राकृतिक चिकित्सकों को जानते हैं। दूसरे प्रकृतिक चिकित्सक भी देखे हैं, उन के पथ-प्रदर्शन के तौर पर कुछ कहें।"

"प्राकृतिक चिकित्सा को पेचीदा नहीं बनाना चाहिए। यह तो बड़ी ही सरल है। रोगी को इसे समझाना चाहिए। इस पर उस का विश्वास पैदा करना चाहिए प्राकृतिक चिकित्सा पर विश्वास होना आवश्यक है। सभी पैगम्बरों ने प्राकृतिक जीवन की ही शिक्षा दी। ईसा ने ऐसा ही किया। सभी धर्म-शास्त्रों को सम्पक्ति प्राकृतिक चिकित्सा की ओर है।"

१९४९ की बात है मेरे भाई की लड़की के देवर को स्पू हो गया। वह उसे मेरे भाई को जो एक अच्छे सर्जन है, दिखाने बम्बई लाए। लड़का २४ वर्ष का जवान। वजन चालीस पौण्ड कम हो गया था। मैं ने उस से कहा—

"मुझ से इलाज कराओ, ठीक हो जाओगे, पर उपवास करना होगा।"

"उपवास तो मैं नहीं कर सकता।"

"एक दिन का तो कर सकते हो ?

"हां, एक दिन का कर लूंगा।"

"एक दिन का उपवास चला, एनीमा भी दिया। दूसरे दिन जब उस को अपनी तबीयत कुछ हल्की लगी, तब वह मेरे कहने पर दूसरे दिन भी उपवास करने को तैयार हो गया। इस तरह एक दिन बढ़ा कर चार दिन उपवास कराया। फिर नौ दस दिन छाछ पर रखा। फिर हल्के भोजन पर लड़का बिल्कुल ठीक हो गया और दो मास में उस का वजन जो चालीस पौंड कम हो गया था, वापस आ गया।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द संस्थान का चारों वेदों का भाष्य प्रधानमन्त्री राजीवगांधी को भेंट करते हुए योगाचार्य धरवाह ।
और साथ में खड़े हैं प्रतिनिधि मण्डल के अध्यक्ष आचार्य भगवान देव ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२८ मई जिनका जन्मदिवस है

सावरकर के सपनों का भारत

उनकी कल्पना उन्हीं के शब्दों में

हिन्दूहृदय सम्राट् स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर हमारे मध्य नहीं हैं। वे दीपक बनकर जले थे। अब नक्षत्र बन चुके हैं। हिन्दू राष्ट्रवाद के उद्गाता सावरकर के महान् त्याग और तपस्या के समक्ष नगराज हिमालय भी नतमस्तक था. जिनकी प्रबल वीरता को देखकर पौरुष और पराक्रम को भी आश्चर्य होता रहा, वह विश्व के अद्वितीय क्रांतिकारी, महान् दिशानायक एवं राष्ट्र निर्माता (२६ फरवरी १९६६ को) अपनी नश्वर काया का स्वेच्छया समर्पण कर अपनी आकांक्षा और अपने सपनों की विरासत देश के जन-जन को सौंप गए थे। मौत की छाया में पला यह महापुरुष मृत्युंजय बन चुका है। उनकी पार्थिव प्रतिमा हमारे मध्य नहीं है, किन्तु उनके शाश्वत विचार आज भी हमारे मार्गदर्शक हैं। प्रस्तुत है वीर सावरकर की भारत के सम्बन्ध में कल्पना उन्हीं के शब्दों में।

"मेरे सपनों का भारत एक ऐसा लोकतन्त्रीय राज्य है, जिसके सभी धर्मों और मत-मतान्तरों के अनुयायियों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार किया जायेगा। किसी को दूसरे पर आधिपत्य जमाने का अवसर न रहेगा। जब तक कोई व्यक्ति हिन्दुओं की इस पुण्यभूमि तथा मातृभूमि हिन्दुस्तान को एक राज्य मानकर, इसके प्रति अपने दायित्वों का निष्ठा सहित पालन करेगा, जो आसिन्धु-सिन्धु पर्यन्त विस्तीर्ण है, एक और अविभाज्य है; तब तक उसे पूर्ण अधिकार प्राप्त होंगे। हिन्दू एक जातिविहीन और संगठित आधुनिक राष्ट्र का रूप ग्रहण करेंगे। विज्ञान और औद्योगिकी को बढ़ावा मिलेगा, जिससे सभी भूमि राज्य की होगी और कोई भी जमींदार न होगा। सभी महत्त्वपूर्ण उद्योगों का राष्ट्रीयकरण होगा तथा भारत खाद्यान्न, वस्त्र और प्रतिरक्षा की दृष्टि से पूर्णतः आत्मनिर्भर होगा।

मेरे सपनों के भारत का वसुधैव कुटुम्बकम् के महान् आदर्श में विश्वास होगा। सैन्धिक दृष्टि से सबल अखंड हिन्दुस्तान की विदेश नीति होगी तटस्थता और शांति की। शक्तिशाली और अखंड हिन्दुस्तान ही विश्व में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्थाई शान्ति और समृद्धि की दिशा में प्रभावी योगदान दे सकता ।"

हिन्दू सहिष्णु है

"सावधान ! हिन्दुओं के बारे में यह कहा जाता है कि हिन्दू बड़े सहिष्णु हैं। परन्तु स्मरण रखिये, यह भावना दूसरों ने फैलाई है। हिन्दुओं का वास्तविक इतिहास यदि आप देखेंगे तो आपको विदित होगा कि हिन्दू सहिष्णु है और असहिष्णु भी है। न्याय के साथ हिन्दुओं ने सदैव सहिष्णुता का आदर किया है और अन्याय के प्रति असहिष्णुता बरती है। अतः दूसरों के धोखे में हमें नहीं आना चाहिये। सहिष्णुता मात्र को ही सद्गुण समझकर अपने बड़प्पन की रक्षा में धर्म तथा राष्ट्र का घात हमें सहन नहीं करना चाहिये। हिन्दू सहिष्णु हैं, यह भावना फैलाकर और हिन्दुओं को औषधि, शिक्षा, आर्थिक सहायता और भोजन देकर उन्हें बड़ी योजना सहित धर्मान्तरित किया जाता रहा है।

इस अवस्था में हिन्दू महासभा व आर्यसमाज सरीखी हिन्दू संस्थाओं को यह घोषित करना चाहिये कि आगामी कुछ ही वर्षों में हम भारत को इस भयानक संकट से मुक्त करेंगे।"

धर्म की परिभाषा

"क्या धर्म अर्थात् पारमार्थिक चर्चा द्वैत-अद्वैत का वाद-विवाद या चेतन-अचेतन की खोज है या केवल भावना है जो व्यक्ति शून्य हो ? नहीं। विशेष रूप से हमारा धर्म महान् होने से हम धर्म को ही राष्ट्र कहते हैं। हमारा इतिहास ही धर्म है। इतना ही नहीं अपितु हमारा दैनिक व्यवहार जो इतिहास समाज और राष्ट्र को पुष्ट करता है वही हमारा धर्म है। धर्म की यह परिभाषा निधर्मी स्टालिन जैसे कम्युनिस्टों को भी माननी पड़ी थी। धर्म की इस परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि कोई भी व्यक्ति धर्मातीत रह ही नहीं सकता। अमरीका का राष्ट्रपति बाइबिल हाथ में लिए बिना राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण नहीं कर सकता, इंग्लैंड का सम्राट् यदि प्रोटेस्टेन्ट न हो तो उसे राज्य के पद से त्यागपत्र देना पड़ता है। यदि छोटे-से-छोटे पाश्चात्य देश में भी हम जांए तो हमें यही दिखाई देगा कि वह राष्ट्र किसी न किसी धर्म का अनुयायी होगा। हम हिन्दू हैं और हमने दुनिया देखी है। देश, इतिहास और व्यवहार के विशुद्ध न्यायपूर्ण बरताव को ही हम धर्म कहते हैं। इसलिए धर्म से महान शक्ति होती है। हम, हमारा देश, इतिहास और व्यवहार हिन्दुस्तान के वैभव को बढ़ाने वाला है। इस प्रकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यक्तिगत और सामाजिक भावनाओं में व्याप्त प्रेरणा को ही हम धर्म कहते हैं।"

भारतभूमि कदापि दिवालिया न होगी

"स्वतन्त्रता के अनेक वर्ष उपरान्त भी हम लोगों को निराश, हताश विक्षुब्ध और नैतिकता से गिरता हुआ देख रहे हैं। आज जन-साधारण जो पेट की रोटी और अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहें हैं, बड़ी योजनाओं ने उनको तनिक भी प्रभावित नहीं किया है। किन्तु इतने पर भी एक क्षण के लिए भी यह सोचना कि यह तो देश खंडित हो जायेगा, पागलपन ही होगा। एक ऐसा देश जिसने चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, शालिवाहन और शिवाजी जैसे महान् राजनीतिज्ञों को गोदी में खिलाया है, वह कभी भी राजनीतिक दृष्टि से दिवालिया नहीं हो सकता। सहस्रों वर्षों के इतिहास में हिन्दुस्तान पर जब-जब संकट के घन घहराए हैं तब ही किसी न किसी महापुरुष ने इसका नेतृत्व कर राष्ट्र को सम्बल दिया है। जैसा अतीत में हुआ है, भविष्य में भी ऐसे लोग होते रहेंगे जो देश का दिशा निर्देशन करेंगे, इसकी सेवा के लिए ही जियेंगे और मरेंगे।"

सैनिक महाविद्यालय हो नगर-नगर में

"आने वाले दस वर्षों में 'सौनेट' बनाने वाला एक भी युवक पैदा न हुआ तो चलेगा। पुनः पुनः साहित्य सम्मेलन न हुए तो हानि नहीं, परन्तु दस-दस सहस्र युवक सैनिकों की वीर चमू कंधों पर नई राइफलें रखकर राष्ट्र के मार्गों में; शिविर में टप-टप करते हुए संचलन करती दृष्टिगोचर होनी चाहिये। कम से कम ग्रन्थालयों की संख्या के बराबर नगर-नगर में सैनिक महाविद्यालय भी व्यस्त अवस्था में दिखायी देने चाहिये। फिर कभी-कभी उन्होंने एक दो उपन्यास अथवा प्रेम गीत पढ़ा अथवा 'सौनेट' बनाया तो कोई बुराई नहीं।

"नेपोलियन भी रणभूमि में मनोरंजन के लिए सीटी बजा दिया करता था। दिल्ली के बादशाह का मान-मर्दन करके लौटने के पश्चात् मस्तानी के अन्तःपुर में प्रथम बाजीराव पेशवा यदा-कदा एकाध पान खा लेते थे। परन्तु जीवन पर्यन्त केवल वृक्ष के पत्ते ही चूसने वाला और तमाशों में खड़कने वाले तबले सुनने वाले द्वितीय बाजीराव के ब्रह्मावर्त का स्वरूप राष्ट्र को प्राप्त हो यह मेरी आंखों से नहीं देखा जाएगा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अकेले रहो तो भी

"गत ५० वर्षों में जिन्होंने मुझको नेता मानकर अपमान और दरिद्रता को सहकर भी हिन्दू समाज को बलवान् बनाने हेतु कष्ट उठाए उनको मैं कुछ भी नहीं दे सका। अपना सब कुछ बलिदान करके भी मेरे साथ रहे। आपकी दृढ़ता देखकर मैं प्रसन्न हूं। इस हिन्दू ध्वज को कंधे पर रखकर आगे बढ़ते रहो। मैं जानता हूँ कि यह पथ आसान नहीं है। लेकिन मेरे मन में आशा है। आप लोग भी इसी विश्वास के साथ आगे बढ़ते रहिये। अन्तिम विजय हमारी होगी। प्रत्येक कार्यकर्त्ता अपने ध्येय पर अटल रहे। मैं चाहता हूं कि आप में से प्रत्येक केवल इस बात का चिंतन करता रहे कि "मैं अकेला भी रहूंगा तो भी हिन्दू राष्ट्र हेतु सक्रिय और सचेष्ट रहूँगा।"

वरं जनहितं ध्येयम्, केवला न जनस्तुतिः

"सामान्यतः जनता की स्तुति और जनता का हित इन दोनों को एक साध्य करने वाले मनुष्यों का जीवन सफल माना जाता है। लेकिन मेरा ध्येय वाक्य है वरं जनहितं ध्येयम् केवला न स्तुतिः (अर्थात् केवल जन स्तुति करना मैं उचित नहीं समझता। मेरा उद्देश्य है जन-हित का साधन करना) मैं जानता हूं कि क्रोधी शंकर भी स्तुति के वश में हो जाते हैं। फिर जन-साधारण की क्या स्थिति होती होगी यह समझना कोई कठिन बात नहीं हैं। फिर भी मेरी यह दृढ़ धारणा है कि जनता की स्तुति करने की अपेक्षा जनता का हित ही अधिक महत्त्व की बात है। प्रत्येक देशभक्त को चाहिये कि वह इस सत्य को सर्वप्रथम पहचाने।

किसान और मजदूर

"किसान और श्रमिक वर्ग हमारी शक्ति का, राष्ट्रीय सम्पत्ति का तथा हमारे राष्ट्रीय स्वास्थ्य का आधार है। कारण यह है कि देश को नीरोगिता और धन प्रदान करने वाले वर्ग हैं किसान और श्रमिक। उनके बल पर ही सेना में युवकों की भरती होती है। ग्रामों की स्थिति इसलिए सर्वप्रथम सुधारनी होगी। उन्हें जीवनोपयोगी वस्तुएं दिलाने के लिए समुचित कदम उठाने होंगे। कृषक और श्रमिक आधुनिक सुविधाओं का लाभ तभी उठा सकते हैं, जब उनकी आर्थिक क्षमता कायम रहेगी। इसी हेतु राष्ट्रीय सम्पत्ति में उनका हिस्सा आवश्यक मात्रा में कायम करने की व्यवस्था करनी ही होगी। साथ ही किसानों और मजदूरों को भी यह समझना होगा कि वे राष्ट्र के ही अंग-प्रत्यंग हैं। अर्थात् कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व का बोझ उन्हें भी उठाना होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसे थे सेठ मूंगा लाल

—सदाजीवत लाल

सेठ मूंगालाल एक धनी मारवाड़ी व्यापारी थे, लेकिन वे अन्य धनी मारवाड़ी व्यापारियों से बहुत-सी बातों में भिन्न थे। उनकी वेशभूषा बड़ी सीधीसादी थी। मोटे लट्ठे की धोती और पुरानी मैली बण्डी नाल पर लगे चन्दन का एक तिलक और गले में तुलसी की माला देखकर कोई भी यह कह सकता था कि वे धार्मिक व्यक्ति हैं, लेकिन उनकी धार्मिक भावना सच्ची थी, दिखावटी नहीं। वे कितने ईमानदार और सत्यवादी थे, इसका पता पाठकों को यह सच्ची कथा सुनकर लग जायेगा।

भारतीय विद्या भवन की स्थापना भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए हुई थी। इस पावन उद्देश्य के लिए समर्पित इस संस्थान की स्थापना व विकास का मार्ग प्रशस्त करने में जिन विभूतियों ने अपना योगदान दिया था, उनमें सेठ मूंगालाल का स्थान अन्यतम था। साधन सम्पन्न हिन्दू कैसे हिन्दू संस्कृति और धर्म के प्रसार में सहायक हो सकते हैं। यह सेठ मूगा लाल के जीवन से सीखा जा सकता है।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी की गिनती उन दिनों बम्बई के सर्वाधिक यशस्वी और व्यस्त वकीलों में होती थी। उनके दफ्तर में सदा नगर के धनी और प्रतिष्ठित लोग ही आया करते थे, इसलिए उस दिन उन्होंने जब अपने दफ्तर में एक साधरण से दीखने वाले व्यक्ति को, जो मोटे लट्ठे की धोती, और पुरानी मैली बण्डी पहने था, देखा तो वे आश्चर्यचकित रह गए। और, उनका आश्चर्य तब और भी अधिक बढ़ गया, जब उन्होंने इस मामूली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदमी की गैरमामूली बातें सुनीं।

वह आदमी उनसे कह रहा था, "देखिये वकील साहाब, मैं इस आशा से आपके पास आया हूं कि आप मुझे गलत सलाह नहीं देंगे।"

अपने काम में व्यस्त होने के कारण, मुंशीजी ने अपने मेहमान पर एक सरसरी नजर ही डाली थी। अब भरपूर नजर डालने पर उन्हें पता लगा कि ये तो सेठ मूंगालाल थे, उनके पुराने मुवक्किल। उन्होंने मुस्कराकर उनसे कहा, "मैंने कभी आपको कोई गलत सलाह नहीं दी, और आज भी नहीं दूंगा। पूछिये, क्या पूछना है।"

मेरी समस्या यह है, वकील साहाब कि मैंने हाल ही में छः लाख कमाये हैं। अब मैं यह सारी रकम दान में देना चाहता हूं।"

"बड़ा नेक विचार है, सेठजी। मगर यह तो बताइये कि आप पहले इससे भी अधिक राशि कमा चुके हैं, मगर कभी उसे या उसके किसी भाग को दान करने का विचार आपके मन में नहीं आया। आज क्या नयी बात हो गयी?

मैं नहीं जानता, वकील साहाब कि इस पूरी राशि को दान करने का विचार मेरे मन में क्यों आया? मगर जब आ ही गया है तो मैंने फैसला किया है कि मैं उसे उपयुक्त पात्र या संस्था को दान दूं। आप कृपया सोच कर सलाह दें कि मैं उसे किसे दान करूं?

सेठ को टालने के उद्देश्य से श्री मुंशी ने उनसे कह दिया "ठीक है, मेरी सलाह आपको तब मिल जायेगी, जब आप देने को तैयार होंगे। सच तो यह है कि वे सेठ जी की बात को गंभीरता से नहीं ले रहे थे।

सेठ के जाने के बाद, मुंशी जी ने अपने सहायकों से कहा, 'देखा आपने इस महाशय को? क्या ख्याल है उनके बारे में आपका?"

सहायक चुप रहे। अपनी राय व्यक्त करने का साहस उनमें से कोई नहीं जुटा पा रहा था।

"झक्की किस्म के आदमी हैं, मेरी राय में तो ये फिजूल बातें करते हैं, और यह नहीं सोचते कि उनकी फजूल बातों से दूसरों का कितना वक्त जाया होता है," श्री मुंशी ने कहा, और फिर अपने काम में लग गये। बात आयी गई हो गयी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुछ दिन बाद, जब सेठ मूंगालाल ने अपने मुंशीजी के दफ्तर में पुनः प्रवेश किया, तो उन्हें सेठ की उस दिन की बात, जिसे वे लगभग भूल ही चुके थे, फिर याद आ गयी। उन्होंने सेठ की ओर प्रश्नवाचक नेत्रों से देखा। सेठ जी गिड़गिड़ाते हुए उनसे कहने लगे, "वकील साहाब, मैं एक बड़े धर्म संकट में फस गया हूं, और आपसे सलाह चाहता हूं कि उससे कैसे निकलू।

"कैसे धर्मसंकट में पड़ गये हैं आप ?"

"धर्मसंकट यह है कि जब मैं पिछली बार आपसे मिला था, तब मेरे टाटा डैफर्ड के शेयरों की कीमतों में अचानक वृद्धि हो जाने से मुझे छः लाख का लाभ हुआ था। मगर तब से शेयरों की कीमतों और ज्यादा बढ़ी हैं, और मेरा लाभ बढ़कर आठ लाख हो गया है। मैं अब आपसे यह सलाह लेने आया हूँ कि इस दो लाख की अतिरिक्त राशि का मैं क्या करूं ? ठीक सलाह देकर, मुझे मेरे धर्मसंकट से उबारिये, वकील साहाब।

मुंशीजी सेठ की बात सुनकर चकित स्तब्ध रह गए। उन्हें सेठ की अक्ल सलामत है या नहीं, इस बारे में सन्देह होने लगा। वे सोच ही रहे थे कि ना कहकर इस पागल आदमी से छुट्टी पायी जाये कि उन्होंने सेठ को कहते

"वकील सहाब, मेरी बातें सुनकर खफा न हों। आप जैसे नामी और अक्लमन्द आदमी के सामने, मेरे जैसे मामूली आदमी की भला क्या हस्ती ? आपको सलाह के बारे में सोचने का समय न मिला हो, तो मेहरबानी करके इतना ही बताने का कष्ट करें कि यदि मैं आठ लाख की राशि संस्कृत भाषा के विकास, गौ माता की सेवा व संवर्धन तथा भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए खर्च करूं, तो आप मुझे पागल तो नहीं मानेंगें।

"इस राशि का उससे बेहतर उपयोग और क्या होगा, सेठ जी। मुझे आपका यह निश्चय बहुत पसन्द आया, मुंशी जी ने कहा।

"आपकी बात सुनकर मन को बड़ी तसल्ली मिली, वकील साहब। अच्छा, अब मैं चलूं ! फिर कभी आपके दर्शन करूंगा।"

मुंशी जी यह सोचकर अपने काम में लग गये कि सेठ पागल नहीं, मौजी आदमी हैं, और छः आठ लाख के दान की बात सोचकर अपनी मौज पूरी कर लेते हैं।

तीन सप्ताह बाद।

सुबई हुई ही थी कि मुंशीजी ने पाया कि सेठ मूंगालाल उनके घर के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दरवाजे पर खड़े हैं और इल्तजा कर रहें हैं, "वकील साहब, यह तो आप जानते ही होंगे कि आज सोमवती अमावस्या है । मेरे ज्योतिषी ने मुझे बताया है कि आज बारह बजे से पहले मैं जो भी दान करूंगा, उसका हजार गुना मुझे दान के परिणामस्वरुप मुझे मिलेगा । इसलिए मैंने संकल्प किया है कि मैं इस शुभ मुहूर्त में छः लाख रुपये गौमाता की सेवा के लिए और दो लाख रुपये संस्कृत भाषा के विकास के लिए दान करता हूं!"

मुंशी जी समझे कि सेठ यह बात अपनी मौज में कह रहे हैं उन्हें गुस्सा आ गया कि वे बराबर लम्बी चौड़ी बातें करके अपना दिल तो बहला लेते हैं, लेकिन उनका समय बर्बाद कर देते है । उन्होंने कहा. "सेठजी दान करने के लिए नकद राशि चाहिये । आठ लाख की नकद राशि है आप के पास" ?

"आप हुक्म करें, वकील सहाब । रुपया तैयार है । बस । दलाल को फोन भर करने की देर है । रुपया आपके हाथ में सौंपकर मैं मुक्ति पाना चाहता हूँ ।

मुंशीजी यह सुनकर चौंक गये । उन्होंने सेठ को अन्दर बुलाकर, फोन करने की इजाजत दे दी । सेठ ने अपने दलाल से कहा, "टाटा के मेरे सारे शेयर बेचकर इसी वक्त सारी रकम लेकर वकील साहब के घर चले आओ मैं दान का संकल्प करके ही वकील सहाब के घर से जाऊंगा ।"

जब तक दस बजे के करीब दलाल नोटों की पोटली लिये, उनके घर नहीं आया, मुंशीजी यही समझते रहे कि सेठ कल्पना कीतरंगों में बह रहे हैं पर अपने सामने आठ लाख के नोटों को देखकर उन्हें विश्वास हो गया कि सेठ का दान संकल्प कितना प्रामाणिक और सच्चा था । आठ लाख का दान करते समय सेठ खुशी से फूले नहीं समा रहे थे ।

सेठ मूंगालाल के दान की इस राशि से ही भारतीय विद्या भवन की मुंशीजी की कल्पना को मूर्त रूप देने की शुरुआत हुई । तभी, उन्होंने भरतीय विद्या भवन का लक्ष्य निर्धारित किया, जो इस वेद उक्ति पर आधारित था, "आ नो भद्रा क्रत्वो यन्तु विश्वतः" (हमें प्रत्येक दिशा से शुभ विचार प्राप्त हों)

यहां यह उल्लेख करना बहुत जरुरी है कि सेठ मूंगाला । एक लोटा और डोर लेकर राजस्थान से बम्बई आये थे, और अपने पुरुषार्थ तथा अपनी ईमानदारी के बल पर इतने धना बने कि उस काल में भी आठ लाख की राशि (जो आजकल करोड़ों में बैठेगी] शुभ कार्यों के लिए दान कर सकते थे ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वन्देमातरम्-वन्देमातरम्-वन्देमातरम् गाना है !

—ब्रजकिशोर 'अश्क'

धर्म साधना राष्ट्र अर्चना का नव दीप जलाना है ।
मातृभूमि सम्मान रक्षा का व्रत सबको दिलवाना है ॥
विघटन-बिखरावों के पग को, और नहीं बढ़ने देंगे।
राष्ट्र विरोधी तत्त्वों को सिर, और नहीं चढ़ने देगें ॥

× × ×

आस्तीन के सांपों का अब नामोनिशान मिटाना है ।
मातृभूमि सम्मान रक्षा का व्रत सबको दिलवाना है ॥
शिवा और प्रताप की शक्ति, अंग-अंग में फड़क रही है ।
वाणी हिन्दूराष्ट्र की अब तो, हृदय-हृदय में घड़क रही हैं ॥

× × ×

सर न उठा पाए शत्रु फिर ऐसा सबक सिखाना है ।
मातृभूमि सम्मान रक्षा का व्रत सबको दिलवाना है ॥
खोद रहे हैं जड़े देश की, आज विधर्मी यवन-ईसाई ।
गले मिल रहे गद्दार नेता, कह कर हम हैं भाई-भाई ॥

× × ×

थोक वोट की राजनीति की नौका को ही डुबाना है ।
मातृभूमि सम्मान रक्षा का व्रत सबको दिलवाना हैं ॥
जिस मिट्टी में खेल-कूद कर, हम इतने बलवान् हुए ।
वर्ग-क्षेत्र का भेद भुलाकर, देश भक्त इंसान हुए ॥

× × ×

उस मिट्टी का गौ-गंगा-गीता का मान बढ़ाना है ।
मातृभूमि सम्मान रक्षा का व्रत सबको दिलवाना है ॥
अमर शहीदों की बलिदानी, व्यर्थ नहीं जाने देगें ।
मां की मर्यादा पर हरगिज, आंच नहीं आने देगें ॥

× × ×

परं वैभव हिन्दू राष्ट्र का स्वप्न करके साकार दिखाना है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मातृभूमि सम्मान रक्षा का व्रत सबको दिलवाना है ।।
डम-डम-डमरु डमक रहा है, आज हिमालय पै शंकर का ।
निकल पड़ेगा आरदल दलन को, राम-कृष्ण अब हर घर-घर का ।

× × ×

अब गिरिराज की चोटी पर ओम् का ध्वज फहराना है ।
मातृभूमि सम्मान रक्षा का व्रत सबको दिलवाना है ।।
वैदिक संस्कृति और सभ्यता, से है सुवासित भारतवर्ष ।
रहे यहां जो हो नतमस्तक, इसके पूज्य चरणों में सहर्ष ।।

× × ×

वन्देमातरम्-वन्देमातरम्-वन्देमातरम गाना है,
मातृभूमि सम्मान रक्षा का व्रत सबको दिलवाना है ।

वेद मन्दिर निर्माण के लिए

उदारतापूर्वक दान दें

यवन-ईसाई आक्रमण के विरुद्ध साहित्य प्रकाशन और
वेद भाष्य-प्रकाशन के लिए उदारतापूर्वक दान भेजिए ।
कम से कम एक रोम
कागज दीजिए

☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐

१. १५ हजार रुपए देकर मन्दिर में अपने प्रियजन की स्मृति में कमरा बनवाएं ।
२. १० हजार रुपए देकर अतिथिगृह में छोटा कमरा बनवाएं ।
३. ५००१ रुपए देकर बड़ा नामपट्ट लगवाएं ।
४. ५०१ या १००१ रुपए देकर यज्ञशाला में पत्थर लगवाएं ।

ड्राफ्ट 'दयानन्द संस्थान' के नाम भेजें ।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब हँसने की बारी है

उसकी बात

"वह तो कह रही थी कि तुमने उसे वह सब बता दिया जो मैंने तुम्हें बताने से मना किया था।" महिला ने अपनी सहेली से कहा।

"हाय, मगर मैंने तो उसे मना किया था कि वह तुम्हें न बताए कि मैंने उसे सब बता दिया है।" सहेली ने जवाब दिया।

"खैर, अब उसे भी बता देना कि मैंने तुम्हें बता दिया है कि उसने तुमसे क्या कहा था।" महिला ने कहा।

वे क्या कहेंगे

विमान आकाश में बहुत ऊंचा उड़ रहा था, अचानक चालक ने जोर चिल्ला कर पागलों की तरह हंसना आरम्भ कर दिया। लोगों ने आश्चर्य से पूछा, "तुम हंस क्यों रहे हो?"

चालक ने कहा, "मैं सोच रहा था कि जब पागलखाने के अधिकारियों को यह पता लगेगा कि मैं वहां से निकल भागा हूं तो वे क्या कहेंगे?"

सरकारी नियन्त्रण

पत्रकार : "प्रेस पर सरकारी नियन्त्रण से आप सहमत हैं या नहीं?"

महिला : "शत प्रतिशत! प्रत्येक परिवार के लिए यह बहुत जरुरी है। अब देखिए न, कल मेरे पति ने मेरी तीन रेशमी साड़ियां प्रेस करते हुए जला दीं।"

दयानन्द संस्थान के दो नये प्रकाशन

अंग्रेजी साहित्य (उपलब्ध है)	हिन्दी अनुवाद (छप रहा है)
दी हिस्टरी ऑफ असैसिन्स ३०)	हत्यारों का इतिहास ४०)
इनसाइड दी कांग्रेस ३०)	कांग्रेस की अंतःकथा ४०)
दोनों का सम्मिलित मूल्य ५०) आदेश के साथ धन अग्रिम भेजें।	दोनों का सम्मिलित मूल्य ८०) आदेश के साथ धन अग्रिम भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गांधी, गोडसे और भारत

'इलस्ट्रेटिड वीकली आंफ इंडिया' (जनवरी २७-२ फरवरी) में प्रकाशित "गांधी, गोडसे और भारत का भविष्य" नामक लेख में, उसके लेखक श्री आशीष नंदी ने अपने इस विचारोत्तेजक और पैने लेख में आज के संदर्भ में गांधी जी के हत्यारे गोडसे का जो पुनर्मूल्यांकन किया है, उसकी ओर उन सब व्यक्तियों का ध्यान जाना आवश्यक है; जो राष्ट्र और हिन्दूत्व के हितों को सर्वोच्च मानते हैं। यह लेख इस कारण भी प्रासंगिक हो गया है कि आज लगभग वैसा ही परिस्थितियां मौजूद हैं, जो विभाजन के समय तब थीं, जब दो समुदाय आपस में खूनी लड़ाई लड़ रहे थे। इस कारण, आज हम गांधी जी की हत्या से मिले पाठ को बेहतर ढंग से याद कर सकते हैं।

श्री नंदी अपने लेख में कहते हैं, "जब गोडसे ने गांधीजी की हत्या की थी, तब एक प्रकार से गांधीजी भी इस हत्या के लिए तैयार थे। भारत के विभाजन के परिणामस्वरुप, उनके मन में जो अपराध-भावना उत्पन्न हो गई थी, और उन्हें दुःस्वप्न दिखायी देते रहे होंगे. वे उनका साथ कभी नहीं छोड़ते थे, और वे चाहते रहते थे कि उनका अन्त जल्दी ही हो जाये। पहले उनकी कामना १२५ वर्षों तक जीने की थी।उन्हें इस बात का अहसास भी था कि भारी संख्या में लोग यह सोचने लगे हैं कि "गांधी हिन्दुओं तथा भारत के हितों की रक्षा करने में असमर्थ रहा।" इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि "गांधी को मरने दो" की भावना अकेले गोडसे के मन में ही नहीं थी, उनके प्रमुख शिष्यों के, जो अब शासक बन गये थे, के मन में भी थी। वे उनसे तंग आ चुके थे, और उन्हें 'मुसलमानों को चाहने वाला' कहने लगे थे। यद्पि उन्हें पता था कि गांधीजी की हत्या के प्रयास चल रहे हैं, तथापि उन्होंने इस हत्या को रोकने के गंभीर प्रयास नहीं किये।"

लेखक महोदय ने अपने लेख में न्यायाधीश श्री जी० डी० खोसला के उस वक्तव्य का भी उल्लेख किया है, जो उन्होंने गोडसे की अपील सुनने के दौरान दिया था। श्री खोसला ने कहा था, "गोडसे का आत्मनिवेदन सुन कर श्रोतागण द्रवित हो उठे थे। अधिकांश महिलाओं की आंखों में आंसू थे; और वे बार-बार रूमाल से अपने आंसू पोंछ रही थीं। मुझे इस बारे में तनिक भी संदेह नहीं है कि यदि इन श्रोताओं को ज्यूरी बनाया जाता, और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनसे गोडसे की अपील पर फैसला सुनाने को कहा जाता, तो वे भारी बहुमत से यही घोषणा करते कि गोडसे अपराधी नहीं है।"

गोडसे के प्रति अधिकांश लोगों की सहानुभूति को ध्यान में रखकर ही, भारत सरकार ने उसके बयान के प्रकाशन पर प्रतिबंध लगा दिया था। सरकार भी आम भारतीय की भांति यह जानती थी कि गांधीजी अल्पमत में हैं, और गोडसे बहुमत में।

गोडसे, जैसी कि उसके बारे में आम धारणा है, न तो कोई शैतान था, न कोई पागल पुराणपंथी, गांधीजी की भांति वह भी अतिसंयमी नैतिकतावादी था। गांधीजी की भांति वह भी कट्टर सनातनी हिन्दू था, और उसे भी हिन्दुओं के प्राचीन धार्मिक ग्रंथ, और विशेष रुप से गांधीजी की प्रिय गीता, परम आदरणीय लगते थे। गांधीजी की भांति वह भी हरिजनों को हिन्दू समाज का अनिवार्य-अभिन्न अंग मानता था। वह कामना करता रहता था कि हिन्दू धर्म आधुनिक तर्कसंगत और सुधारवादी धर्म बने। उसे धर्मान्ध कहने वाले लोग भी यह स्वीकार करते हैं कि वह एक साहसी, आदर्शवादी विनम्र और गरिमापूर्ण व्यक्तित्व वाला आदमी था।

बहुत कम लोग इस तथ्य से परिचित होंगे कि गोडसे गांधीजी का बहुत आदर करता था, और उसने अदालत में दिए गए अपने बयान के आरम्भ में भी उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। वस्तुतः उसने अपना राजनीतिक जीवन तीसरे दशक में गांधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग लेकर ही आरम्भ किया था। गांधीजी को गोली मारने से पूर्व भी उसने उन्हें नमस्कार किया था, और राष्ट्रपिता की हत्या 'भारतमाता के एक कर्त्तव्य-परायण पुत्र' के रुप में एक कर्त्तव्य के रुप में ही थी।

अपने लेख में; श्री नदी ने एक मार्के की बात यह कही है कि "पश्चिम के चोटी के समकालीन बुद्धिजीवियों में हमें अनेक गोडसे और उसके प्रतिरुप मिल जायेंगे। हेनरी किसिंगर, बिस्मार्क, आरवैल (रिफलैक्शन्स आंन गांधी के लेखक), कोयस्लर ('महात्मा गांधी-योगी एण्ड कमिसार' के लेखक) ने अपने लेखकों में उन्हीं मूल्यों को प्रतिपादित किया है, जो गोडसे के मूल्य थे। यदि हम गोडसे के आखिरी बयान में से भावुकतापूर्ण अंशों को निकाल दें तो जो कुछ बचा रहेगा, वह आधुनिक विश्व के अग्रणी चिंतकों के चिंतन से बहुत ज्यादा मेल खाता मिलेगा।"

सच तो यह है कि अंतिम विश्लेषण से हम पाते हैं कि गोडसे के पास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गांधीजी की हत्या के अलावा कोई और विकल्प नहीं था, और गांधी के पास भी गोडसे के हाथों मरने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि इसी प्रकार गांधीजी हम सब के अंदर मौजूद गोडसे के भूत को उतार सकते थे।'

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए
पवित्र धर्म-ग्रन्थ :परमात्मा की अमरवाणी
चारों वेदों का हिन्दी भाष्य
मंत्र-शब्दार्थ-भावार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित
लागत मूल्य : ५०० रु०
किन्तु प्रचार के लिए
पुस्तकालय संस्करण : २७५ रु०
उपहार संस्करण : लागत मूल्य : १,००० रु०
अभी केवल ७०० रुपये में लीजिये।
आदेश के साथ ५० रु० अग्रिम भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।
अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान
१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग, करोलबाग, नई दिल्ली-५
दूरभाष : ५६२६३६-५६४७४१-८०१२११

पंडिता राकेशरानी पर ३४ मुकद्दमे
जिन्हें लड़ने के लिए आपके आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है। कृपया अपना कर्त्तव्य समझिये और उदारतपूर्वक सहयोग दीजिये।
आपके सहयोग से ही यह धर्मयुद्ध सफलतापूर्वक लड़ा जा सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने ग्राम-नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कीजिए

सबसे पहले आप समिति के उद्देश्य और मांगें पढ़ डालिए। यदि आप उनसे सहमत हों तो कम से कम अपने १९ साथी और बनाइए। इस प्रकार २० सदस्य बनाकर उनके फार्म तथा उनके पूरे शुल्क का ड्राफ्ट "अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति" के नाम का बनाकर केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली को भेजिए। साथ ही स्वीकृति के लिए पत्र भी लिखें।

स्वीकृति प्राप्त होने पर आप में से जिन्हें संयोजक बनाया जाए—वे एक अस्थायी कोषाध्यक्ष व मंत्री नियुक्त कर लें तथा अपने यहां विधिवत् कार्यालय बना लैटर-हैड, रसीद बुक आदि छपवा लें। स्थापना के दो मास के भीतर आप एक कार्यकर्ता सम्मेलन बुलाएं और रात्रि को सार्वजनिक सभा हिन्दू रक्षा सम्मेलन के रूप में रखें।

आपका लक्ष्य अधिक से अधिक सदस्य बनाना हो। अपने सदस्यता शुल्क व दान से सम्मेलन कीजिए। साहित्य बांटिए, पोस्टर लगाइए और संगठन को सुदृढ़ बनाइए।

२० सदस्यों के बाद बने सदस्यों का चौथाई शुल्क आप केन्द्र को भेजेंगे।

दान के रूप में एकत्र सम्पूर्ण धन आप अपने क्षेत्र में व्यय कर सकेंगे, किन्तु आप को सारा हिसाब नियमानुसार रखना होगा।

केन्द्र कभी भी आपके आय-व्यय की जांच कर सकेगा और केन्द्र को यह भी अधिकार होगा कि वह अनियमितता प्रतीत होने पर आपकी समिति भंग कर नई समिति गठित कर सके।

हिन्दू रक्षा समिति वस्तुतः राष्ट्र के गौरव, परम्पराओं, इतिहास और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए कृतसंकल्प सर्वस्व-समर्पित देशभक्तों का संगठन है। इसी भावना से सब कार्य करें, ताकि सफलता मिल सके।

हम किसी भी संकट में सेवा के लिए सदा प्रस्तुत हैं।

(प्रो०) धर्मवीर, प्रधानमंत्री

अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाये जाएं।

२. मजहब के आधार पर पुलिस, सेना या किसी भी सरकारी विभाग में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

३. पंजाब, कश्मीर, असम व देश के अन्य भागों में पाकिस्तानी घुस पैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे सभी विदेश पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

४. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

५. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

६. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

७. कश्मीर सम्बन्धी धारा ३७० तुरन्त हटाई जाए और वहां भारत के नागरिकों के स्थायी तौर पर बसने की व्यवस्था हो।

८. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उन्हें वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथ पत्र भरने का नियम बनाया जाए, जिसमें वह लिखे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति होगी।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त मिटाया जाए।

११. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रद्धांजलि

युवा पत्रकार प्रमोदकुमार विनोद

शिवकुमार गोयल

मेरठ से प्रकाशित लोकप्रिय हिन्दी दैनिक प्रभात के सह-सम्पादक तथा युवा आर्यसमाजी पत्रकार श्री प्रमोदकुमार विनोद का ४२ वर्ष की अल्पायु में ही निधन हो गया । वे वयोवृद्ध स्वाधीनता सेनानी, तेजस्वी व निर्भिक पत्रकार तथा आर्य नेता श्री वि० स० विनोद के ज्येष्ठ पुत्र थे ।

श्री प्रमोद कुछ समय से भोजन की नली में कैंसर से पीड़ित थे । उनका बम्बई के टाटा कैंसर इंस्टीच्यूट में इलाज चल रहा था कि अचानक तबीअत खराब हो गई तथा वे प्रभु को प्यारे हो गये ।

मारीशस यात्रा : अमिट छाप

श्री प्रमोद पिछले वर्ष अक्टूबर में भारतीय प्रतिनिधिमंडल में मेरे साथ मारीशस गये थे । वहां आर्यसमाज की ओर से उनका भव्य स्वागत किया गया था । उन्होंने मारीशस के गवर्नर श्री शिवसागर रामगुलाम तथा राष्ट्रपति श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ से भेंट कर उनका इन्टरव्यू लिया था । वहां वे मारीशस के प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार श्री अभिमन्यु अनत के अतिथि थे । अपनी मिलनसारिता तथा मृदु स्वभाव से उन्होंने अनत जी के परिवार को मोह लिया था ।

श्री प्रमोद ने मारीशस के भारतवासियों के सामने आने वाली समस्याओं का गहन अध्ययन किया था तथा वहां अपनी लेखनी से हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन में सक्रिय ईसाइयों व लीबिया के मुसलमानों की खतरनाक साजिशों का भण्डाफोड़ किया था । उन्होंने दैनिक 'प्रभात' में लिखी यात्रा संस्मरण में स्पष्ट कहा था कि "आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक संस्थानों को मारीशस धर्म प्रचारक भेजने चाहिए जो हिन्दू समाज को संगठित व शक्तिशाली बना सकें ।"

"प्रभात" की लोकप्रियता

दैनिक "प्रभात" को लोकप्रिय बनाने में वहां श्री गणेशशंकर विद्यार्थी एवं डा० सम्पूर्णानन्द जी से पत्रकारिता की प्रेरणा लेने वाले ८२-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्षीय श्री वि० स० विनोद जी के निर्भीक सम्पादकीय लेखों का योगदान है वहीं इसका श्रेय श्री प्रमोद तथा श्री सुबोध इन दोनों भाइयों के लेखन तथा कुशल संयोजन को भी देना होगा। श्री प्रमोद प्रेस के हर काम के विशेषज्ञ थे। वे कम्पोजिंग से लेकर छपाई तक के कार्य में पूरा दखल रखते थे। सामयिक विषयों पर तत्काल सम्पादकीय लिखने में वे प्रवीण थे। श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या पर उन्होंने जो सम्पादकीय लिखा था उसे पढ़ कर मेरी आंखें छलक उठी थीं। प्रमोद अत्यन्त मिलनसार तथा मृदुभाषी थे। मुझे वे अपना अंग्रेज मानते थे तथा सदैव आदर देते थे।

अल्प साधनों के बावजूद विनोद जी तथा उनके दोनो पुत्रों प्रमोद व सुबोध ने दैनिक "प्रभात" का स्तर बनाये रखा। आज "प्रभात" पश्चिमी उत्तर प्रदेश के प्रमुख दैनिकों में गिना जाता है। प्रगतिपथ की यात्रा के दौरान एक प्रमुख स्तम्भ के ढह जाने से निश्चय ही "प्रभात" को आघात लगा है। विनोद जी का हृदय तो विदीर्ण ही हो चुका है।

वे संस्कारी थे

श्री प्रमोद को आर्यसमाज के संस्कार अपने आर्यसमाजी पिता श्री वि० स० विनोद तथा मातुश्री श्रीमती सुवीरा विनोद से प्राप्त हुए थे। वे बचपन से ही आर्यसमाज के सत्संगों में जाया करते थे। उन्होंने अपने पिता श्री विनोद जी के गोआ की स्वाधीनता के लिए पुर्तगालियों की गोलियों के सामने सीना तानने की घटना सुनी थी। इस वातावरण ने उन्हें कट्टर राष्ट्रभक्त व वैदिक धर्म का अनन्य प्रेमी बना दिया था।

श्री प्रमोद अपने पीछे पत्नी सुशीलादेवी, तीन पुत्रियाँ व एक पुत्र छोड़ गये है। श्री वि० स० विनोद पर पुत्र वियोग का यह जबर्दस्त आघात लगा है। ईश्वर स्वर्गीय प्रमोद की आत्मा को शांति तथा विनोद जी, अनुज श्री सुबोध कुमार विनोद व परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें, यही प्रार्थना है। □□

समन्वय का अर्थ अपनी मौलिकता को छोड़कर दूसरी स्थिति का स्वीकरण नहीं है। दूसरों को ठेस या अप्रियता की अनुभूति न होने देना समन्वय है पर साथ ही अपने सिद्धान्त पर दृढ़ आस्था से खड़े रहना भी आवश्यक है।

—आचार्य तुलसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धन के लालच में निर्धन बदल रहे हैं धर्म

-राकेशचन्द्र श्रीवास्तव

बहराइच जनपद के कई गांवों के नट जाति के २०० लोगों ने १७ फरवरी को नवाबगंज से पांच किलोमीटर दूर चनैनी में एक समारोह किया और एक मस्जिद में उन्होंने धर्म परिवर्तन स्वीकार कर लिया। चनैनी, रहमतू, चोरी कुटिया, दर्मादस, निम्नहारा, फस्मापुर लोकई आदि गांवों के नट और कलन्दर इस धर्मान्तरण में शामिल हुए हैं।

इस क्षेत्र में मुस्लिम भारी संख्या में रहते हैं। पिलभितनी क्षेत्र विशेष रूप से मुस्लिमबहुल क्षेत्र है। धर्म परिवर्तन की गति लोकसभा चुनाव के बाद अचानक बढ़ गई और साम्प्रदायिक शक्तियां विशेष रूप से सक्रिय हो गयीं। इनको पिछले दिनों एक केन्द्रीय राज्यमंत्री के विशेष संरक्षण में देखा गया। दूसरी ओर नूरुल उलूम जैसी इस्लाम संस्थाएं इस धर्म परिवर्तन में काफी सक्रिय देखी गई हैं।

इस संवाददाता ने इन गावों के कई लोगों से स्वयं बातचीत की। पांचू नामक व्यक्ति ने बताया कि दीन मुहम्मद नामक एक व्यक्ति ने जो अब मर चुका है, मुझको बताया कि तुम्हारी जाति के अधिसंख्य लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया है और मुसलमान हो चुके हैं। तुम भी इस्लाम धर्म स्वीकार कर लो। इसलिए मैंने भी इस्लाम धर्म कबूल कर लिया।

रहमतू गांव के एक अन्य व्यक्ति चम्मल ने जिसकी अभी नई शादी हुई है बताया कि अपनी जाति के लोगों द्वारा भारी संख्या में इस्लाम धर्म स्वीकार करने के कारण शादी आदि करने में काफी कठिनाइयाँ हो रही थीं। हिन्दू से मुसलमान हुए नट जाति के लोग हिन्दुओं में शादी स्वीकार नहीं करते थे। लेकिन इस्लाम धर्म स्वीकार करने के बाद शादी आदि करने में कोई कठिनाई नहीं होती इसलिए मैंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया।

इन लोगों के धर्म परिवर्तन में टेड़वा बसन्तपुर के खुरबुड़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नामक नट को, जो पहले मुसलमान हो गया था और आजकल मस्जिद में इमाम है, काफी सक्रिय देखा गया। इसके अतिरिक्त इस समय एक व्यक्ति जो अपने को केन्द्रीय राज्यमन्त्री का अत्यन्त करीबी बता रहा है, इस सम्पूर्ण धर्म परिवर्तन के आयोजकों में एक था।

सामूहिक धर्म परिवर्तन के कारण पूरे जनपद में सनसनी फैल गई। सामाजिक एवं धार्मिक संगठन जो अभी तक निष्क्रिय थे, सक्रिय हो उठे हैं। भू० पू० कांग्रेस (इ) विधायक श्री देवी प्रसाद की अध्यक्षता में एक सर्वधर्म समिति गठित की गई है जो इन क्षेत्रों का दौरा कर रही है। नटों के सामाजिक स्तर को भी ऊंचा उठाने का प्रयास किया जा रहा है। दूसरी ओर मुस्लिम वर्ग के कई संगठनों और नेताओं द्वारा भी इन क्षेत्रों का दौरा किया जा रहा है।

प्रशासन भी इस समय काफी सक्रिय हो गया है। जिलाधिकारी डा० ओमप्रकाश ने एक भेंट में बताया कि नट जाति के उत्थान के लिए प्रशासनिक स्तर पर कई योजनाएं बनाई जा रही हैं।

जनपद में इस सामूहिक धर्म परिवर्तन के कई कारण हैं। नटों का अशिक्षित और गरीबी की रेखा से भी नीचे जीवन यापन करना एक प्रमुख कारण है। वहीं भारत से लगी हुई नेपाल सीमा के उस पार भी विदेशी शक्तियों का बन काफी अहम भूमिका निभा रहा है। यह धर्म परिवर्तन नेपाल में भी उस समय काफी बढ़ गया जब वहां पर एक मुस्लिम अंचलाधीश की नियुक्ति की गई। नेपाल राज्य और भारत की सीमा के बीच लगे अधिकतर क्षेत्रों की जनता इस धर्म परिवर्तन की ओर आकर्षित दिखाई दे रही है।

सरयू नदी के तट पर जनपद बहराइच की लगभग १२८ कि० मी० सीमा नेपाल से लगी हुई है। अधिकांश भाग घने जंगलों से घिरा है। हिमालय की दक्षिणी पहाड़ियां इस जिले से नेपाल राज्य को अलग करती हैं। श्रावस्ती किसान सहकारी चीनी मिल, नानपारा ही जनपद के विकास को दर्शाती है। जनपद प्रत्येक वर्ष काडियाला, गेरुआ और दहावर नदियों की भीषण बाढ़ से तबाह होता रहा है।

विश्व हिन्दू परिषद् राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आदि संगठन दूर-दराज के इलाकों में हिन्दू समाज को संगठित करने का दावा अवश्य करते हैं लेकिन वास्तव में इन दूर-दराज के कई गावों में नाम मात्र भी कोई संगठन सक्रिय नहीं है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेवों के पूर्वज हिन्दू थे

—भगवान दास

मानव मस्तिष्क योजना का एक रूप है धर्म परिवर्तन। आज भी हमें जगह-जगह धर्म परिवर्तन के मामले देखने और सुनने को मिल रहें हैं। कहीं पर जबरन परिवर्तन किया जा रहा है तो कहीं पैसे के बल पर। इसका ताजा उदाहरण है बहराइच जनपद। कई गांवों के नट जाति के २०० लोग १७ फरवरी को नवाबगंज से ५ किलोमीटर दूर चनैनी में एक समारोह में सामूहिक धर्म परिवर्तन कर मुसलमान हो गये।

हरेक सम्प्रदाय के मठाधीशों की यही कोशिश रहती है कि मानव जाति पर ज्यादा से ज्यादा उसी के धर्म का साम्राज्य रहे, औरंगजेब और महमूद गजनवी ने तलवार के बल पर अनेक हिन्दुओं को मुसलमान बनाया।

हरयाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र में ऐसी ही एक जाति पायी जाती है मेव। वे अब अपने आपको इस्लाम धर्म में परिवर्तित कर चुके हैं। इन मुसलमानो को 'सुन्नी' कहा जाता है ऐतिहासिक अध्ययन करने पर पता चलता है कि आदिकाल में इनके पूर्वज हिन्दू थे।

मेवों का निवास स्थान 'मेवाड़' माना जाता है। इन्हीं के नाम पर इस प्रदेश का नाम 'मेवाड़' पड़ा। मेवाड़ का एक हिस्सा तो अभी भी 'मेवल' कहलाता है। अभी भी मेवाड़ के देवगढ़ मेरवाड़ा में इनकी आबादी है कुछ विद्वनों का मत है कि भीलों और गूजरों ने इन्हें खदेड़ दिया और ये 'मेवात' में आ बसे।

गूजरों की एक शाखा ने 'सपादलक्ष' प्रदेश को अपने कब्जे में कर लिया था और वे यहाँ की खास जाति के लोगों से मिल गये। बाद में मुस्लिम शासन के दबाव में ये राजपूत पुनः सपादलक्ष की ओर परिवर्तित हुए और यहीं बस गये।

कुछ विद्वानों का मत है कि महाभारत में 'मेद' और गूट' दो क्षत्रिय जातियों के नाम आते हैं। अरबी भाषा में लिखित महाभारत की कुछ मूल पांडुलिपियों से इस तथ्य की जानकारी मिलती है कि 'मेद' शब्द का 'द' प्राकृत भाषा के ध्वनि लोप नियम के अनुसार लुप्त हो गया और कुछ समय बाद 'मेद' के स्थान पर मेव बन गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इण्डियन कौसिल आफ कल्चरल रिलेशन्स संस्था के माध्यम से भी इस बात की जानकारी मिली है कि मेव जाति एक प्राचीन क्षत्रिय जाति है जो कुछ समय बाद इस्लाम में परिवर्तित हो गई थी । इनकी मौजूदा संस्कृति को देखकर आसानी से जाना जा सकता है कि मेव जाति मूलत: एक हिन्दू जाति रही है और बहुत कम समय पूर्व इसे इस्लाम में परिवर्तित किया गया ।

मेव जाति का इतिहास कुछ इतिहासकारों की नजर में ४०० वर्ष से अधिक नहीं है जब कि इस्लाम का इतिहास १४०० वर्ष के लगभग है । मेवों के अल्लो और गोत्रो के कारण इनके हिन्दू होने का पता लगता है । मेवो में कुल मिलाकर छोटी-मोटी १२ जातियां हैं इनके नाम ज्यादातर हिन्दुओं के समान ही हैं यथा – रणमल, उमराव' कन्हैया, इकबाल देवरूप आदि ।

इस्लाम धर्म में परिवर्तित होने पर भी इनमें हिन्दू रीति-रिवाज प्रचलित हैं। परम्परा से लोग भली-भाँति जानते हैं कि हमें जबरन मुसलमान बनाया गया है । आज तक ये लोग हिन्दुओ की भांति समान गोत्र में शादी कभी नहीं करते तथा पुत्री पिता की जायदाद की हकदार नहीं हो सकती हैं। ये लोग महमूद गजनवी के समय में बदले गये तथा मसूद सालार ने इन्हें मुसलमान बनाया । इनके यहां आज भी सालार के झन्डे के नीचे शपथ लेने की प्रथा है।

मेवात क्षेत्र को महाभारत में 'सप्त सिंधु प्रदेश, कहा गया है । मेवात क्षत्र की भौगोलिक स्थिति मान्य तो नहीं है लेकिन फिर भी इस प्रकार कहा जा सकता है—

२७ डिग्री उत्तरी अक्षांक्ष से ३३ डिग्री उत्तरी अक्षांश तक तथा ७६ डिग्री पश्चिमी देशान्तर से ७७ डिग्री पूर्वी देशान्तर पर स्थित हैं। इसका क्षेत्रफल ४६०० वर्गमील से भी अधिक हैं ।

मेजर पायलट के अनुसार 'मेवात का प्राचीन प्रदेश भरतपुर के डीग से लेकर रिवाड़ी के कुछ ऊपरी भाग तक वर्णित किया जाता है' परन्तु कुछ नवजाताओं का मत है कि मेवात क्षेत्र दक्षिणी दिल्ली के महरौली, उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में कोशी छाता तहसीलों का पश्चिमी अचंल राजस्थान के जिला अलवर की की रामगढ़. तिजारा, किशनगढ़, लक्ष्मणगढ़. गोविन्दगढ़ तहसीलों का भाग, भरतपुर जिले की कामा व डीग का दक्षिणी भाग तथा हरयाणा के फरीदाबाद जिले की पलवल, होडल तह-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सीलें तथा महेन्द्रगढ़ जिले की रेवाड़ी, नारनौल का कुछ पूर्वी भाग और गुड़ गाँव जिले की नूह फिरोजपुर अरिका तहसीलों का सम्पूर्ण भाग मेवात क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

वेद भाष्य छपवाएं

कागज का अभाव समस्या बन गया है। दूसरी
ओर वेदों की मांग बढ़ती जा
रही है।
क्या आप प्रभु की अमरवाणी के प्रचार के लिए
कागज का भी प्रबंध नहीं कर सकते ?
वेद हमारा प्राण है और हम उसे प्रसारित
करने में अक्षम हैं, तो क्या होगा ?
आप अधिक से अधिक कागज या उस के लिए
धन भिजवाएं ताकि वेद का प्रचार जारी
रहे। अपना कर्त्तव्य स्वयं सोचिये।

—राकेशरानी

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, दिल्ली-५

वे चाहते हैं कि

क्रान्तिकारी हिन्दू रक्षक साहित्य छपना बन्द हो जाए।

इस साहित्य के लिए मुझ पर ३४ अभियोग चल रहे हैं।
क्या आप इस साहित्य का प्रचार चाहते हैं ?
यदि हां, तो

इसके कागज के लिए १५१) प्रत्येक हिन्दू संग्रह कर भेजे

ताकि हम और भी दृढ़ता से आगे बढ़ सकें।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

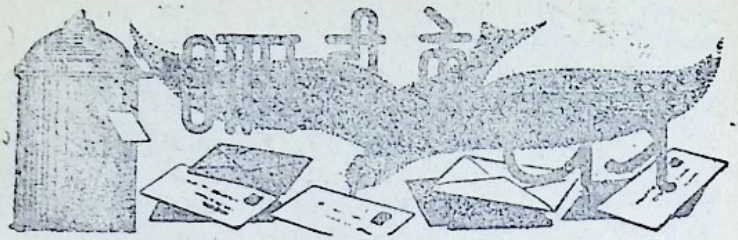

विदेशी सहयोग पर नियन्त्रण

महोदय,

हम 'विदेशी अभिदान नियत्रंण कानून' में केन्द्र द्वारा किये गये नये संशोधन का स्वागत करते हैं, जिसके प्रावधानों के अनुसार, विदेशों से प्राप्त होने वाले विदेशी अभिदानों का उपयोग मनमाने रूप से करने की स्वतन्त्रता समाप्त हो जायेगी । यह एक जाना-माना तथ्य है कि विदेशों से प्राप्त अभिदानों का उपयोग बलात् धर्मान्तरण में होता है और अभी तक सरकार के पास उन पर नियत्रंण रखने के लिए अप्रभावी 'विदेशी अभिदान नियंत्रण कानून के अलावा कोई और साधन नहीं था। संशोधन के बाद यह कानून ज्यादा प्रभावशाली हो जाएगा ।

इन संशोधनों के प्रावधानों के अनुसार अब विदेशी अभिदान प्राप्त करने वाली हर भारतीय संस्था के लिए यह अनिवार्य हो जाएगा कि वह गृह मंत्रालय में अपना पंजीकरण कराये और यदि वे ऐसा नहीं करेगी तो वह सिर्फ व्यक्तिगत आधार पर ही विदेशी अभिदान प्राप्त कर सकेगी ।

अब अभिदान प्राप्त करने वाली हर संस्था के लिए यह भी अनिवार्य हो जायेगा कि वह सारी राशि को गृह-मत्रालय द्वारा निर्देशित बैंक-शाखा में ही रख, ताकि उसकी लेखा-जांच सरल की जा सके। सरकार ऐसी जांच

इन संशोधनों से पूर्व, चुनाव आयोग द्वारा राजनैतिक दलों को विदेशों की किसी भी संस्था से अभिदान प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। इन संशोधनों के प्रावधानों के अनुसार, अब कोई अमान्य राजनीतिक दल भी कोई विदेशी अभिदान प्राप्त नही कर सकेगा। इन संशोधनों के पश्चात् जज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लोग भी अब सरकार की पूर्वानुमति के बिना विदेशो से अभिदान प्राप्त नहीं कर सकेंगे ।

यद्यपि हम इन संशोधनों का स्वागत करते हैं तो भी यह कहे बिना नहीं रह सकते कि इन संशोधनों के बावजूद अभी भी इस कानून में बहुत से बचाव के रास्ते बाकी रह गये हैं, जिनका उपयोग कर भ्रष्ट ईसाई मिशनरी (बिना किसी सरकारी हस्तक्षेप के) मजे से विदेशी अभिदान प्राप्त करते रहेंगे । इन बचाव के रास्तों को बन्द किये बिना नवीन संशोधन से युक्त यह कानून प्रभावशाली नहीं बन सकता ।

बम्बई —सदाजीवतलाल

चांदनी चौक में शराब की एक और दुकान

आदरणीय बहिन राकेशरानी जी,

मैं आपके मासिक पत्र जन-ज्ञान के माध्यम से कहना चाहता हूं कि चांदनी चौक स्थित परांठेवाली गली और घन्टे वाले हलवाई के बीच एक नयी शराब की दुकान खुल गई है जबकि सामने वाली पटरी पर सैन्ट्रल बैंक के पास पहले से ही एक शराब की दुकान है ।

इस जगह स्त्रियों, बच्चों, पर्यटकों आदि का अत्यधिक आवागमन रहता है । यदि जल्दी ही इसको बन्द करने का प्रयास नहीं किया गया तो किनारी बाजार–मालीवाड़ा में भी और दुकानें खुल जाएंगी ।

अत: आप से अनुरोध है कि उक्त शराब की दुकान खुलने की बात आप उपराज्यपाल के समक्ष ले जाएं तथा अपनी पत्रिका के माध्यम से भी इसका विरोध करें ।

दिल्ली कृष्णकुमार

भारत को सारी गायें खरीद लेनी चाहिए

महोदय,

समाचारपत्रों में यह समाचार पढ़ कर हमें अत्यन्त हर्ष हुआ कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तमिलनाडु सरकार ने यूरोपीय साझा बाजार के देशों से एक लाख जर्सी गायें खरीदने की पेशकश के बारे में भारत सरकार से उसकी मदद करने की प्रार्थना की है। हमें यह जानकर भी प्रसन्नता है कि भारत सरकार ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है और अब वह इन गायों की खरीद के लिए यूरोपीय साझा बाजार के सदस्यों देशो से बातचीत शुरू करने वाली है

यूरोपीय साझा बाजार के देशो ने दूध के अत्यधिक उत्पादन से परेशान होकर ३ लाख दुधारू जर्सी गायो के वध का निश्चय किया था। इन गायों का कत्ल मार्च के अन्त तक होने वाला था। तमिलनाडु के मुख्य मंत्री श्री रामचन्द्रन ने इनमें से एक लाख गायों को खरीदने के मामले में जिस तत्परता और उत्साह का प्रदर्शन किया, वह प्रशंसनीय है राज्यों को भारत सरकार की सहायता से शेष दो लाख गायों को खरीदने में भी देर नहीं करनी चाहिए। खरीदने के बाद उन्हें १० से १२ लीटर प्रतिदिन दूध देने वाली इन गायों को ऐसे किसानों और गोपालकों को, जो डेयरी फार्मिंग को अपना व्यवसाय बनाना चाहते हैं, उचित मूल्यों पर बेच देने की व्यवस्था करनी चाहिये ताकि वे उनका उपयोग कर सकें।

ऐसा करके ये राज्य सरकारें गांवो में फैली बेरोजगारी को आंशिक रूप से समाप्त करने में तो सहायक होंगी ही, दूध के उत्पादन में काफी वृद्धि करके 'श्वेत-क्रांन्ति' की कल्पना को साकार करने की दिशा में भी अग्रसर हो सकेंगी।

बम्बई

मंत्री, भारत कल्याण मंच

राम जन्मभूमि को मुक्त कराने का आन्दोलन तेज हो

बहिन राकेशरानी जी,

कुछ समय पहले हिन्दू समाज को जगाने के लिए गंगा रथ यात्रा का आयोजन किया गया था। उस पहली ही रथ यात्रा का इतना प्रभाव पड़ा कि हिन्दू समाज में अपने धर्म के प्रति जागृति पैदा होने लगी है।

अतः मेरा अनुरोध है कि इस तरह का कार्यक्रम पुनः होना चाहिए।

अब रामजन्म भूमि को मुक्त कराने का आन्दोलन भी धीमा पड़ गया है। आखिर इसका कारण क्या है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप से भी इस बारे में अनुरोध है कि अपने ओजस्वी विचारों को अपनी सशक्त कलम से एक बार फिर अभिव्यक्त करें ।

गंगापुर सिटी

—गोविन्दप्रसाद सिंहल

दुःख होता है पढ़ कर

बहन राकेशरानी जी,

जब जन-ज्ञान में मैं यह पढ़ता हूं कि आप पर ३४ मुकद्मे चलाये जा रहे हैं तो मुझे बड़ा दुःख होता है । सच्चाई आज बहुत कम लोग जानते हैं । जो जानते हैं वे कहते नहीं । लेकिन कोई निःस्वार्थ होकर कहता ही है तो उसका आप जैसा हाल होता है । आप हिन्दू (आर्य) धर्म की रक्षा के लिए सब कुछ कर रही हैं और यह भोला हिन्दू सोया पड़ा है । अगर यह जागा होता तो आप के साथ ऐसा न होता । लेकिन कुछ भी हो । जीत सत्य की होती है, महर्षि तो अकेले थे । जब वे नहीं हारे तो क्या हम हार जायेंगे ? नहीं ।

आप वास्तव में ही वैदिक धर्म की रक्षा के लिए लड़ रही हैं तो हम आप के लिए सिर देने को तैयार हैं ।

चन्दाना, कुरुक्षेत्र

—सुरेशकुमार आर्य

तुम कितना महान् कार्य कर रही हो

प्रिय बहन राकेशरानी जी,

तुम महिला होकर कितना महान् कार्य कर रही हो । इससे न जाने कितने लोग अनुप्राणित हो रहें हैं । श्री भारतेन्द्रजी द्वारा लगाये गए उद्यान को आपके सफल हाथ चिरकाल तक हरा-भरा रख सकें, भगवान् से यही प्रार्थना है । मेरी शुभकामनाएं और प्रार्थनाएं सदा तुम्हारे साथ हैं ।

स्नेही दाई,
सत्यदेव विद्यालंकार

अनजान में जो पाप होता है उसका प्रायश्चित है—देवता उसे क्षमा कर देते हैं । किंतु जान बुझकर जो पाप किया जाता है, उससे कैसे बचा जा सकता है ?

—शरच्चन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तमिलनाडु सरकार ने यूरोपीय साझा बाजार के देशों से एक लाख जर्सी गायें खरीदने की पेशकश के बारे में भारत सरकार से उसकी मदद करने की प्रार्थना की है। हमें यह जानकर भी प्रसन्नता है कि भारत सरकार ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है और अब वह इन गायों की खरीद के लिए यूरोपीय साझा बाजार के सदस्यो देशो से बातचीत शुरू करने वाली है

यूरोपीय साझा बाजार के देशो ने दूध के अत्यधिक उत्पादन से परेशान होकर ३ लाख दुधारू जर्सी गायो के वध का निश्चय किया था। इन गायों का कत्ल मार्च के अन्त तक होने वाला था। तमिलनाडु के मुख्य मंत्री श्री रामचन्द्रन ने इनमें से एक लाख गायों को खरीदने के मामले में जिस तत्परता और उत्साह का प्रदर्शन किया, वह प्रशंसनीय है राज्यों को भारत सरकार की सहायता से शेष दो लाख गायों को खरीदने में भी देर नहीं करनी चाहिए। खरीदने के बाद उन्हें १० से १२ लीटर प्रतिदिन दूध देने वाली इन गायों को ऐसे किसानों और गोपालकों को, जो डेयरी फार्मिंग को अपना व्यवसाय बनाना चाहते हैं, उचित मूल्यों पर बेच देने की व्यवस्था करनी चाहिये ताकि वे उनका उपयोग कर सकें।

ऐसा करके ये राज्य सरकारें गांवो में फैली बेरोजगारी को आंशिक रूप से समाप्त करने में तो सहायक होंगी ही, दूध के उत्पादन में काफी वृद्धि करके 'श्वेत-क्रांन्ति' की कल्पना को साकार करने की दिशा में भी अग्रसर हो सकेंगी।

बम्बई

मंत्री, भारत कल्याण मंच

राम जन्मभूमि को मुक्त कराने का आन्दोलन तेज हो

बहिन राकेशरानी जी,

कुछ समय पहले हिन्दू समाज को जगाने के लिए गंगा रथ यात्रा का आयोजन किया गया था। उस पहली ही रथ यात्रा का इतना प्रभाव पड़ा कि हिन्दू समाज में अपने धर्म के प्रति जागृति पैदा होने लगी है।

अतः मेरा अनुरोध है कि इस तरह का कार्यक्रम पुनः होना चाहिए।

अब रामजन्म भूमि को मुक्त कराने का आन्दोलन भी धीमा पड़ गया है। आखिर इसका कारण क्या है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप से भी इस बारे में अनुरोध है कि अपने ओजस्वी विचारों को अपनी सशक्त कलम से एक बार फिर अभिव्यक्त करें ।

गंगापुर सिटी —गोविन्दप्रसाद सिंहल

दुःख होता है पढ़ कर

बहन राकेशरानी जी,

जब जन-ज्ञान में मैं यह पढ़ता हूं कि आप पर ३४ मुकद्दमे चलाये जा रहे हैं तो मुझे बड़ा दुःख होता है । सच्चाई आज बहुत कम लोग जानते हैं । जो जानते हैं वे कहते नहीं । लेकिन कोई निःस्वार्थ होकर कहता ही है तो उसका आप जैसा हाल होता है । आप हिन्दू (आर्य) धर्म की रक्षा के लिए सब कुछ कर रही हैं और यह भोला हिन्दू सोया पड़ा है । अगर यह जागा होता तो आप के साथ ऐसा न होता । लेकिन कुछ भी हो । जीत सत्य की होती है, महर्षि तो अकेले थे । जब वे नहीं हारे तो क्या हम हार जायेंगे ? नहीं ।

आप वास्तव में ही वैदिक धर्म की रक्षा के लिए लड़ रही हैं तो हम आप के लिए सिर देने को तैयार हैं ।

चन्दाना, कुरुक्षेत्र —सुरेशकुमार आर्य

तुम कितना महान् कार्य कर रही हो

प्रिय बहन राकेशरानी जी,

तुम महिला होकर कितना महान् कार्य कर रही हो । इससे न जाने कितने लोग अनुप्राणित हो रहें हैं । श्री भारतेन्द्रजी द्वारा लगाये गए उद्यान को आपके सफल हाथ चिरकाल तक हरा-भरा रख सकें, भगवान् से यही प्रार्थना है । मेरी शुभकामनाएं और प्रार्थनाएं सदा तुम्हारे साथ हैं ।

स्नेही दाई,
सत्यदेव विद्यालंकार

अनजान में जो पाप होता है उसका प्रायश्चित है—देवता उसे क्षमा कर देते हैं । किंतु जान बुझकर जो पाप किया जाता है, उससे कैसे बचा जा सकता है ?

—शरच्चन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाचार

आ. भा. जन संघ की कार्यकारिणी समिति की बैठक

अखिल भारतीय जनसंघ के कार्यकारिणी समिति की बैठक दिनांक १४-४-८५ को विट्ठल भाई पटेल भवन नई दिल्ली में हुई। कार्यकारिणी समिति ने निम्नांकित निर्णय सर्वसम्मति से पारित किये।

१. अखिल भारतीय जनसंघ का आगामी अधिवेशन दिनांक २५-२६ मई को भिलाई नगर, छत्तीसगढ़ में मनाया जाये तथा इसका अखिल भारतीय संयोजक म०प्र० के महामंत्री ठाकुर गौतम सिंह भिलाई नगर को बनाया गया।

२. जनसंघ का प्रतिनिधि मण्डल शीघ्र ही गृहमंत्री भारत शासन से मिलकर पंजाब समस्या के स्थायी हल का सुझाव पेश करेगा। कार्यकारिणी समिति ने अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो० बलराज मधोक द्वारा प्रधान मंत्री राजीव गांधी को इस संबंध में लिखे पत्र का जवाब १३।४।८५ तक न देने पर रोष प्रकाट किया तथा इस राष्ट्रीय प्रश्न की उपेक्षा के खिलाफ आंदोलन करने की चेतावनी दी गई।

राजीव जी को बधाई

युवा प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने लखनऊ विश्व विद्यालय द्वारा प्रदान की जाने वाली मानद डाक्टरेट की उपाधि को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। इससे श्री राजीव की छवि श्लाघनीय हो गयी और विश्वविद्यालय के कुलपति श्री रत्न शकर मिश्र की योजनाओं पर पानी फिर गया, जो खुशामद के महल बनाकर अपना भविष्य और उज्ज्वल करना चाहते थे। श्री मिश्र ने विश्वविद्यालय की समितियों से बिना किसी परामर्श के केवल अपने विशेषाधिकार द्वारा व्यक्तिगत निर्णय लिया था उपाधि प्रदान का; इससे विश्व विद्यालय की समितियों ने अपना तिरस्कार माना।

श्री राजीव गांधी भारत के गरिमा पूर्ण पद पर देश सेवा में लगे हैं। गम्भीरता के साथ खुशामद और चापलूसी के वातावरण को कभी प्रश्रय नहीं देते हैं। उन्हींनद उपाधि से कौद-सी विशेष गरिमा मिल जाती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह तो सूर्य को मोमबत्ती दिखाने के सदृश्य है। रूस के प्रधान मन्त्री श्री खुश्चेव ने अस्वीकार कर दिया यहा कह कर बिना परिश्रम किये कुछ लेना मैं अशोभनीय मानता हूं। आवश्यकता होगी तो शीघ कार्य करूंगा और उपाधि लूंगा।

हमारे देश में साधारणतया प्रचलन है कि मुख्य मन्त्री और प्रान्तीय मन्त्रियों को भारतीय विश्व विद्यालय मानद उपाधि देने के लिए आतुर रहते हैं। उनकी क्षमता योग्यता का आकलन नहीं किया जाता है। केवल कुछ व्यक्ति इस योजना द्वारा अपने को मन्त्रियों के निकट ले जाते है। फिर व्यक्ति गत लाभ की अपेक्षा करते हैं तथा सफल होते हैं। अब खुशामदियों को आंख खोल कर बदलते समय को देखना चाहिये।

मांसाहार से हानि ही हानि

सुविख्यात आहार विशेषज्ञ बिल ग्रान्ट ने इथियोपिया, सूडान तथा अन्य अफ्रीकी देशों में फैली व्यापक भुखमरी के संदर्भ में जो वक्तव्य दिया है, वह चोंकानेवाला भले ही लगे, लेकिन एक सच्चाई को उजागर करता है। उनका कहना है, "पृथ्वी में इतनी सामर्थ्य और क्षमता है कि वह प्रत्येक प्राणी को भरपूर आहार प्रदान कर सके। ऐसी हालत में यह देखकर आश्चर्य होता है कि दुनिका के आधे लोग भुखमरी के शिकार हैं। इस बेतुकी परिस्थिति के लिए जिम्मेदार हैं मांसाहारी लोग, जो समझते हैं कि मांस प्रोटीन प्रदान करने वाला सर्वोत्तम साधन है। लेकिन, वे यह नहीं जानते कि यह कितना खर्चीला साधन है।"

यह साधन सचमुच कितना खर्चीला है, इस बात का अनुमान इस बात से ही लगाया जा सकता है कि गोश्त के वजन में आधा वजन पानी का ही होता है और जो जमीन एक टन गोमांस का उत्पादन कर सकती है, वह दस से बीस टन तक पौष्टिक शाकाहारी भोजन का उत्पादन भी आसानी से कर सकती है। इस सम्बन्ध में इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को याद रखना भी आवश्यक है कि सौ पाउण्ड सूखा चारा खाने वाला पशु चार से सोलह पौण्ड से ज्यादा गोश्त नहीं देता।

उपरोक्त तथ्यों से यह बात सिद्ध हो जाती है कि मांसाहारी लोग अप्रत्यक्ष रूप से अन्न की बर्बादी में सहायक होते हैं और इस प्रकार व्यापक भूखमरी में भी। इसलिए हमारा नया नारा होना चाहिए" व्यापक भूखमरी का मूल कारण मांसाहार।" इस सम्बन्ध में इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को भी याद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रखना होगा कि १० लाख टन अन्न से अधिक से अधिक एक हजार टन गोश्त ही प्राप्त हो सकता है ।

इधर अमरीकी वैज्ञानिकों ने मक्का की एक ऐसी संकर जाति विकसित की है, जो गोश्त के प्रोटीन के स्तर की प्रोटीन प्रदान करती है। इससे यह आशा बंधती है कि शीघ्र ही वैज्ञानिक अन्य अन्नों की ऐसी जातियों का विकास करने में भी सफल हो जायेंगे, जो गोश्त के प्रोटीन से बेहतर प्रोटीन प्रदान कर सकेंगे।

यह एक शुभ और आशाप्रद लक्षण है कि पश्चिम के लोग धीरे-धीरे भारी संख्या में शाकाहारी बनते जा रहे हैं। पिछले वर्ष दस लाख से अधिक ब्रितानी लोग मांस का परित्याग कर शाकाहारी बने। प्रख्यात चिकित्सक डॉक्टर एलेन लॉंग का कहना है," शाकाहारी मांसाहारियों की अपेक्षा कब्ज तथा अपचन आदि रोगों के कम शिकार होते हैं। "शाकाहारी बच्चे तथा स्त्रियां मोटापे के भी कम शिकार होती हैं।

युवक-युवतियां शहीदों से प्रेरणा लें।"

आर्यसमाज प्रताप नगर में शहीद संदीप सेठी आर्य की स्मृति में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान में आयोजित खेलों के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर बोलते हुए कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) श्री कुलानन्द भारतीय ने कहा कि युवक-युवतियां अपनी शक्ति का इस्तेमाल अच्छे काम व राष्ट्र निर्माण में करें तो जीवन अच्छा और देश शक्तिशाली बन सकता है।

इस अवसर पर महानगर पार्षद चौ० नन्द लाल, निगम पार्षद श्री राजबीर के अलावा श्री भजन प्रकाश आर्य, श्री लाजपत आर्य ने संदीप सेठी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

विक्रांत नगर में भी अन्य शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। इसकी अध्यक्षता श्री विष्णु स्वरूप अग्रवाल ने की। इस अवसर पर डा० प्रशंत वेदालंकार, ब्र० राजसिंह आर्य, श्री धर्मवीर, श्री आर० जी० गुप्ता, डा० धर्मपाल आर्य आदि ने अपने विचार व्यक्त कि।

जरूरत है केन्द्रीय हिमालय प्राधिकरण की

प्रधानमंत्री बनने के बाद राष्ट्र के नाम अपने पहले संदेश में जो रेडियो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओर टी०वी० पर प्रसारित हुआ, श्री राजीव गांधी ने भारत को पुरातन संस्कृति के जीवंत प्रतीक 'केन्द्रीय गंगा प्राधिकरण' की स्थापना का जो आश्वासन दिया है, उसका हम हार्दिक स्वागत करते हैं और इस निश्चय के लिये उन्हें बधाई देते हैं।

मैली गंगा को पुनः स्वच्छ-पवित्र बनाने का एक विनम्र अभियान हमने ही लगभग एक वर्ष पूर्व आरंभ किया था—पत्रों और लेखों द्वारा इस सम्बन्ध में श्रीमती गांधी तथा देश के काफी पत्रों का ध्यान इस गंभीर समस्या की ओर आकर्षित करके। अब हम वर्तमान प्रधानमंत्री का ध्यान हिमालय क्षेत्र के, जो गंगा के समान ही भारत की प्राचीन संस्कृति का एक जीवित प्रतीक है, प्रदूषण की समस्याओं के निवारण की ओर की आकर्षित करना चाहते हैं।

योजना आयोग के सदस्य तथा प्रख्यात भौतिक शास्त्री प्रोफेसर एम० जी के मेनन ने अभी हाल में इस समस्या के मुद्दों पर बहुत जोर दिया था और उन्हें 'चिपको आन्दोलन' के नेता श्री सुन्दरलाल बहुगुणा तथा पश्चिम जर्मन वैज्ञानिक प्रोफेसर लीथ का समर्थन भी प्राप्त हुआ था प्रोफेसर लीथ ने तो हिमालय के क्षेत्रों का गहरा और व्यापक अध्ययन कर यहां तक कहा है," यदि तत्काल इन समस्याओं की ओर ध्यान नही दिय गया, तो हिमालय क्षेत्र में एक भी वृक्ष दिखायी नही देगा।"

यूं तो श्रीमती गांधी के शासन काल में ही हिमालय के प्रदेश के प्रदूषण का समस्याओं के निवारण को उच्चतम प्राथमिकता दे दी गयी थी, लेकिन लालफीताशाही के कारण और कोई प्रगति नही हुई। अब हमें आशा है कि श्री राजीव गांधी के द्वारा हाल ही में गठित 'राष्ट्रीय बंजरभूमि विकास बोर्ड' इस प्रदेश में तेजी से बढ़ने हुए वननाशन को रोकने में सफल हो सकेगा।—सप्रेस/जीवनलाल

दयानन्द आर्य कन्या विद्यालय, जरीपटका (नागपुर) सर्वश्रेष्ठ शाला घोषित

नागपुर। आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित 'दयानन्द आर्य कन्य विद्यालय" को शिक्षण उपसंचालक की ओर से १०,००० रुपये का विशेष प्रोत्साहन अनुदान इस वर्ष सर्वश्रेष्ठ विद्यालय होने पर प्राप्त हुआ है।

वैदिक परम्परा के आधार पर भारतीय संस्कृति मूल्यों की शिक्षा देने हेतु इस विद्यालय की स्थापना सन् १९६२ में गई थी। विद्यालय का प्रारम्भ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रतिदिन दैनिक यज्ञ तथा संध्या से होता है। सन् १९८४ में कनिष्ठ महाविद्यालय (कला विभाग) शुरू हुआ। सन् १९८४ में स्नातक कला विभाग भी प्रारम्भ किया गया है, जिसके लिए भव्य भवन का निर्माण किया गया है। विद्यालय में नैतिक शिक्षा पर विशेष ध्यान किया जाता है तथा छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए विशेष प्रयत्न किया जाता है शारीरिक व्यायाम व योगासन पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है।

जन-ज्ञान [मासिक]

के

आजीवन सदस्य बनकर

आगे बढ़ने में
सहयोग दीजिए।
अपने मित्रों-परिचितों को
भी आजीवन सदस्य
बनाइए।
आज ही आप ५०१ भेजिए।

यह मेरी प्रार्थना है।

—राकेशरानी

रामायण महाभारत में चार पुरुषार्थों में व्याख्येय तीन ही हैं—धर्म, अर्थ, और काम। इनमें भी कामना के विषय दो ही हैं अर्थ और काम। धर्म एक नियामक तत्त्व है जिसके दायरे में रहते हुए अर्थ तथा काम की रचना होनी चाहिये। महाभारत में कहा नहीं सुनता। धर्म से अर्थ और काम की प्राप्ति होती है, तब उस धर्म का सेवन क्यों नहीं करते। —डॉ० देवराज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परिवार में ही है, स्वर्ग और नरक

—रामप्रसाद सिंह साधक

मैं भारत के प्रमुख हिन्दू तीर्थों तथा पवनार सेवाग्राम वर्धा ज्वालापुर आदि आश्रमों का भ्रमण कर रहा था तो एक आश्रम में जहां सैकड़ों स्त्री-पुरूष वानप्रस्थ और सन्यासी बनकर रह रहे थे जिनमें बहुत से रिटायर उच्च सरकारी कर्मचारी तथा वकील डाक्टर और धनी व्यक्ति थे। अधिकांश पचास से ऊपर की आयु के थे जिनसे बात करने पर पता चला कि इनमें से ९५ प्रतिशत अपने पुत्रों के दुर्व्यवहार के कारण यहां रह रहे हैं। यह रोग हमारे देहातों में भी महामारी की तरह फैलता जा रहा है। इसका प्रमुख कारण यह है कि हम बाल युवक वृद्ध सभी अपने अधिकारों को सदैव याद रखे हुए हैं। सरकारी नारा है कि "हम दो हमारे दो"। स्त्री पुरूष और दो बच्चे यही परिवार है। इसमें वृद्ध माता-पिता सम्मिलित नहीं है। माता पिता की मृत्यु होने पर उनकी सभी चल और अचल सम्पत्ति पुत्र को पाने का अधिकार है और वह उसे सब तुरन्त मिल जाता हैं, परन्तु पुत्र की मृत्यु होने पर उसकी एक लंगोटी भी उसके माता पिता को नहीं मिल सकती। वह सब उसके पत्नि और बच्चों को मिलेगी। घर की पैतृक सम्पत्ति यदि किसी आवश्यकता के लिए पिता बेचना चाहता है तो पुत्र-पिता को पागल घोषित करके कानून द्वारा उसका बेचना रोक सकता हैं।

पिता अपनी गाढ़ी कमाई में से धन खर्च करके स्वयं अनेकों प्रकार का कष्ट सहकर पुत्र को पढ़ा-लिखाकर स्वावलम्बी (स्वयं कमाकर खाने योग्य) बनाया, परन्तु पुत्र अपनी कमाई अनावश्यक ढंग से खर्च करना चाहे तो पिता को उसे रोकने का कोई अधिकार नहीं है। पुत्र लड़कपन में पिता से सैकड़ों अनावश्यक प्रश्न प्रतिदिन पूछकर उसे परेशान कर सकता है। पिता को उत्तर देकर सन्तुष्ट करना होता है परन्तु वहीं पुत्र युवक बनने पर पिता के उचित आवश्यक प्रश्नों का भी उत्तर देकर पिता को सन्तुष्ट करने को तैयार नहीं। पिता शाम को छः बजे घर आ जाया करो। पुत्र साथियों द्वारा सौंपे गए कार्यों को कर लेने के बाद ही अवकाश मिलने पर घर आ सकता। पिता घर की बिगड़ती आर्थिक दशा न देख पाने के कारण मुझे घर छोड़ देना पड़ेगा। पुत्र अभी जहां जाना चाहते हो चले जाओ। पिता अपने घर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गृहस्थी के कार्य को प्राथमिकता दो। पुत्र किसी संस्था का कार्य करने से सम्मान मिलता है। घर गृहस्थी के कार्य को प्राथमिकता देने से क्या मिलेगा पिता—आय के भीतर व्यय करो। पुत्र—खेत बेच कर कर्ज लेकर भी किसी संस्था के कार्य में व्यय करना बुरा नहीं है पिता—घर के मालिक की सलाह से कार्य करो। पुत्र—संस्था के साथियों की सलाह से कार्य करूंगा घर के मालिक की सलाह से नहीं। पिता—घर खर्च के लिए अपने वेतन से कितना दोगे। पुत्र वेतन का सोलहवां भाग—यह तो हुई नेता टाईप लड़कों की बात अब जिनके बेटे शराबी कबाबी, चोर, डाकू आदि है उन बापों पर क्या बीतती है इसे वही अनुभव कर सकते हैं। बेटा यदि हजारों रूपया मासिक वेतन पाता है तो वह रुपया अपनी इच्छानुसार खर्च करना अपना अधिकार समझता है बाप यदि किसी प्रकार कंजूसी करके अपने बुढ़ापे के लिए कुछ रुपया बैंक में जमा कर रखा है उसका ब्याज भी घर खर्च के लिए देने को तैयार हैं अपने स्वयं के खर्च के लिए लड़कों से कुछ लेना भी नहीं चाहता फिर भी बेटों को सन्तोष नहीं वह बाप का अपने पास एक पैसा भी रखना बाप का अधिकार नहीं मानते। उनका कहना है कि जब ये अभी नहीं दे रहे है तो इनके मरने पर पाने से क्या लाभ—घर में सास बहू, ननद, भौजाई जेठानी देवरानी का आपस में लड़ना तो प्रसिद्ध ही है। भाई-भाई में तो विवाद चलता ही रहता है। सास का कर्त्तव्य है कि बहू को बेटी समझें जैसा कि कौशल्या जी ने सीता जी के विषय में कहा है कि—

जिवन मूरि जिमि जोगवत रहऊं—दीप नाति नहिं टारन कहऊं।

बहू का कर्त्तव्य है कि सास को माता समझे तब सास को बहू से सेवा और बहू को सास से प्यार पाने का अधिकार मिलता हैं। देवरानी, जेठानी को आपस में बहन अथवा सखी बनकर रहना चाहिये। ननद अपने को पाहुन और भौजाई का घर की मालकिन समझें। छोटा भाई बड़े भाई को बाप के तुल्य, बड़ा भाई छोटे भाई को पुत्र के समान समझें तो भाइयों में बटवारा न हो, पुत्र के कर्त्तव्य के विषय में गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं—

प्रातः समय उठि के रघुनाथा, मात-पिता गुरु नावहिं माथा
आयसु मांगि करहिं पुर काजा, देखि चरित हरषहिं मन राजा॥

पिता का कर्त्तव्य है कि पुत्र को उचित शिक्षा दिलवा कर सुयोग्य स्वावलम्बी नागरिक बनाना। अपनी आयु ५० वर्ष से ऊपर होने पर घर के सभी उत्पादन साधनों को पुत्र को सौप देना तथा धीरे-धीरे पुत्र को घर का पूर्ण मालिक बना देना। अपने स्वयं के खर्च के लिए अपने नाम से कुछ रुपया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बैंक में सुरक्षित रखना जिससे बुढ़ापे में पुत्रों के आगे हाथ न फैलाना पड़े, अपना सम्मान सुरक्षित रहे। यदि नकद पैसा न हो तो उत्पादन के साधन खेत दुकानादि का ही कुछ भाग अपने नाम रखकर शेष पुत्रों के नाम कर देना बड़ा पुत्र यदि अयोग्य पलायनवादी हो तो छोटे को ही घर का मालिक बना कर स्वयं अपना अधिकांश समय समाज सेवा अथवा चिन्तन मनन तथा सद ग्रन्थों के स्वाध्याय में व्यतीत करना। स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए कुछ शारीरिक और मानसिक परिश्रम का भी कार्य करते रहना चाहिये। आलसी बनकर पड़े रहना मृत्यु को शीघ्र बुलावा देना है। पुत्र का कर्त्तव्य है कि कहीं आना जाना हो या कोई कार्य करना हो तो पिता से अवश्य पूछ लिया करे। यही पूछकर कार्य करना ही पिता का उचित सम्मान करना है। अपनी पूरी कमाई पिता के हाथ पर रख दें। पिता को चाहिये कि खर्च करने के लिए सहर्ष पुत्र को वापस कर दे। सम्भव हो तो अपनी ओर से भी कुछ मिला दें।

ऐसा होने पर ही पिता पुत्र में कभी मनमुटाव नहीं हो सकता। ऐसा ही बर्ताव सास और पुत्रवधु के बीच भी होना चाहिये। सम्मिलित परिवारों में यदि कई भाई रहते हैं तो प्रत्येक भाई को पृथक्-पृथक अपने सभी बच्चों के लिए सामग्री नहीं लाना चाहिये। केवल बड़े भाई को अपने तथा अपने भाईयों के स्त्री बच्चों के लिए उचित सामग्री लाना चाहिये उसमें अपने बच्चों के लिए अच्छा, भाई के बच्चों के लिए खराब ऐसा भाव नहीं होना चाहिये छोटे भाई बड़े भाई के हर कार्य में सहयोगी रहें। घर में एकता और प्रेम बनाए रखने तथा सुख समृद्धि बढ़ाते रहने के लिए प्रत्येक सदस्य का परिश्रमी मितव्ययी संयमी और विवेकी बनकर रहना आवश्यक है। जिस घर में वृद्ध पिता राष्ट्रपति, बड़ा लड़का प्रधानमंत्री छोटे लड़के सहायक मंत्री सभी बच्चे सदस्य की भूमिका निभाते हैं वह घर स्वर्ग है। जिस घर में लड़के धर्म के ढकोसले के नाम पर पलायनवादी बन गए वह घर नर्क है।

दयानन्द संस्थान को दान दीजिये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदमी सिगरेट को पीता है और सिगरेट आदमी को पीती है !

—बिहारीलाल

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रकाशित 'टुबैको जर्नल' नामक पत्रिका के हाल के एक अंक में तृतीय विश्व के देशों और खास तौर पर भारत को यह चेतावनी दी गयी है कि अगले दशक में सिगरेट पीने की निरन्तर बढ़ती हुई आदत के कारण इन देशों में कैंसर का महारोग बहुत ज्यादा फैल जायेगा।

इस संगठन के विशेषज्ञों का कहना है कि धूम्रपान की बढ़ती हुई आदत के लिए मुख्य रूप से जिम्मेवार हैं। सिगरेटों के मोहक विज्ञापन जो पाठकों और विशेष रूप से युवावर्ग को अपनी जीवनशैलियों को पाश्चात्य जीवन शैली के अनुरूप बदलने के लिए प्रेरित करते हैं। अमरीकी सरकार चिकित्सीय शोधों पर आधारित नये तथ्यों के आधार पर लोगों की धूम्रपान की आदत छुड़ाने के लिए जो विशाल राशि प्रचार पर व्यय करती है; सिगरेट-निर्माता उससे २० गुना अधिक राशि प्रचार पर व्यय करते हैं। भारत जैसे विकासशील देशों में इस प्रचार का प्रभाव यह हुआ है कि जो लोग पहले बीड़ी या हुक्का पीते थे या तम्बाकू चबाते थे, वे भी अब सिगरेट पीने लगे हैं और सिगरेट पीना शान की बात समझते हैं।

आँकड़े साक्षी हैं कि सिगरेट पीने से प्रति वर्ष दुनिया भर में पौने लाख के करीब लोग मरते हैं। फेफड़ों में कैंसर होने से मरने वाले १०० लोगों में ९० सिगरेट पीने वाले ही होते हैं।

सिगरेट का घातक प्रभाव पीने वाले के स्वास्थ्य पर कुछ समय बाद ही दिखायी देने लगता है। उसे कैंसर, दमा, तपेदिक, पुराना या नया जुकाम जैसे घातक रोग हो जाते हैं। गले का कैंसर मुख्यतया सिगरेट पीने वाले को ही होता है। आमाशय का व्रण जैसे गंभीर घातक रोग भी सिगरेट पीने की आदत के कारण ही होता है।

सिगरेट पीना सेहत के लिए कितना ज्यादा नुकसानदेह है, इसका अंदाज इसी बात से लग सकता है कि सिगरेट में मौजूद विषैले निकोटीन के टीके का जो असर सात सेकंड में होता है, वह सिगरेट के एक कश से एक सेकंड में ही हो जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नजर रखिये अपनी नजर पर

'आंखें बड़ी नियामत हैं'— यह एक ऐसा तथ्य है जिसे हर कोई स्वीकार करता है, परन्तु हैरानी की बात है कि हम आंखों जैसी बहुत बड़ी नियामत की पूरी कद्र नहीं करते। इस लेख में आंखों को स्वस्थ रखने के कुछ उपाय दिये गये हैं।

क्या आपकी आंखें पूर्णरूप से स्वस्थ हैं? शायद आप पूछेंगे कि आंखों के पूर्णरूप से तन्दुरुस्त होने की आखिर कोई पहचान है? हां, है! आप जरा आंख बन्द कीजिए। आंखें बन्द करने पर यदि आपको काले-काले डोरे से उड़ते हुए दिखाई दें तो समझिये कि आपकी आंखे तन्दुरुस्त हैं। इसके विपरीत; यदि आँखों के आगे रंगा-रंग डोरे से उड़ते हुए दिखाई दें तो यकीन कीजिए कि आपकी आंखे बीमार हैं। अतः इनकी ओर तुरन्त ध्यान देने की आवश्यकता है।

□ आंखों के लिए घातक क्रियाएं

कब्ज तथा अपाचन से आंखों को जितनी हानि पहुंचती है उतनी शायद किसी अन्य कारण से नहीं। हाजमा यदि निरन्तर बिगड़ता रहे तो आंखों की ज्योति कमजोर पड़ने लगती है। अतः एक बार खाने के पश्चात् उस समय तक और न खायें जब तक कि आपको भूख महसूस न हो। और जब खायें भी तो इतना नहीं कि पेट तन जाये। भोजन ऐसा कीजिए जो शीघ्र पचने वाला हो। तेज मसाले, लाल मिर्च तथा नशीले पदार्थों का अधिक प्रयोग आंखों के लिये घातक है। गुप्त रोग भी आंखों की ज्योति के लिए अत्यन्त हानिकारक सिद्ध होते हैं।

एक नेत्र रोग विशेषज्ञ का कहना है कि भोजन के तुरन्त पश्चात् मैथुन करने से आंखे अत्पन्त कमजोर पड़ सकती हैं तथा आंखों से पानी जाने या आंखों की सूजन के रोग में मैथुन करने के परिणाम स्वरूप मनुष्य बिल्कुल अन्धा भी हो सकता हैं। भोजन के तुरन्त पश्चात् लिखने-पढ़ने का कार्य करने से भी आंखों का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

□ आंखें स्वस्थ रखने के उपाय

आंखों के स्वास्थ्य के लिए पेट हमेशा साफ रखिये। कब्ज न होने दीजिए प्रातः नियमित रुप से शौच जाने की आदत ड़ालने वालों को कब्ज की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिकायत कम होती है। चोकर समेत मोटा आटा, छिलके समेत दालें, फल, कच्ची सब्जियां और सलाद आदि प्रयोग करने से कब्ज हो ही नहीं सकती।

☐ प्रातःकाल उठते ही एक गिलास बासी पानी पिएं। यदि पानी तांबे के किसी बर्तन में रखा हो तो और भी अच्छा है। सवेरे खाली पेट पानी पीना जहां आपके शरीर में चुस्ती लायेगा वहां आंखों की ज्योति भी बढ़ायेगा।

☐ सवेरे उठकर शौचादि से निवृत्त होने के बाद आंखों को ठंडे पानी से धोइए तथा धीरे-धीरे छींटे दीजिए।

☐ दांतों का आंखों से विशेष सम्बन्ध है। इसलिए दांत साफ और मजबूत रहने से आंखे भी ठीक रहती हैं। अतः दांतों की सफाई का ध्यान रखें।

☐ शारीरिक व्यायाम द्वारा आंखों को स्वच्छ रक्त प्राप्त होता है। प्रातः की सैर आंखों के लिए एक चमत्कार पूर्ण उपाय है, तथा प्राणायाम (गहरी सांस का अभ्यास) आंखों को नवजीवन प्रदान करता है। इसलिए प्रतिदिन कुछ-न-कुछ व्यायाम अवश्य करना चाहिये। व्यायाम ऐसा कीजिए जिससे आंखों और गर्दन को काफी हिलना-डोलना पड़े।

☐ प्रातः नंगे पांव ठण्डी घास पर चलना आंखों की ज्योति बढ़ाने के लिए लाभप्रद है।

☐ कमजोर नजर तथा आंखों के अन्य कई रोगों का मूल कारण 'विटामिन ए' की कमी है। विटामिन 'ए' पपीता, दूध, मक्खन, क्रीम, मछली के तेल, अण्डे, गाजर बन्द गोभी, टमाटर कच्ची, सलाद तथा पालक आदि में प्रचुर मात्रा में होता है। इनका प्रयोग जहां तक हो सके प्राकृतिक रूप में ही किया जाए, अर्थात् इन्हें पकाकर खाने की बजाय कच्चा ही खाया जाए।

☐ आजकल प्रायः लोगों को लेटकर पढ़ने की आदत हो गई है। यह आदत आंखों के लिए बहुत हानिकारक है। ऐसा करने से आंखों पर अत्यधिक बोझ पड़ता है अतः इससे बचें।

☐ पढ़ते हुए नजर का कोई अन्य कार्य करते समय आंखों को हमेशा झपकते रहिए, इससे आंखे थकेंगी नहीं और न उन पर अधिक बोझ पड़ेगा।

☐ आंखों को कभी भी जोरसे न मलें। ये बहुत नाजुक अंग हैं और अधिक दबाव सहन नहीं कर सकतीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अचरज क्या.....?

सुप्त तपस्या जाग उठी है
फूट पड़ी युगवाणी
लिए कलम आयि धार
ललक आयी कविता कल्याणी
चरण चाप से अचरज क्या
भूगोल कहीं दब जाए।
अचरज क्या इंगित पर गर्जन-
करता विप्लव पाए।
अचरज क्या रुक जाय पंथ
नभ के झिलमिल तारों का।
अचरज क्या ले चूम चरण
फिर न्याय सिन्धु ज्वारों का
देख रहा इतिहास. आज फिर
कौन पृष्ठ खोलेगा ?
अद-धर्म की जय-जय निर्भय
पुलक-प्राण बोलेगा।
नहीं रहेंगी आज देवियां
मात्र मूर्ति पाषाणी
सुप्त तपस्या जाग उठी हैं
फूट पडी युग वाणी।
किसने कहा कि यह समाज
चुपचाप समय खोता है ?
समर क्षेत्र में यहीं भीष्म
शर-शय्या पर सोता हैं।
यहीं प्रताप चबा जाता है
शुष्क घास की रोटी
यहीं शिवा ने रख ली है।
कितने हिन्दू की चोटी।
किसने कहा कि इस समाज में
बीर-बाला है
सौम्य सुखद कौमुदी कहीं
तो कहीं तड़ित् माला है।
जिसके भय से स्वयं प्रकम्पित
काल चक्र होता है।
किसने कहा कि यह समाज
चुपचाप समय खोता है ?
मुट्ठी में तूफान, चरण-तल
भूचाली गति है।
कौन नहीं जानता यही
सच्ची हिन्दू-सन्तति है ?
जिसने कभी नहीं सीखाहै
झुकना भय के आगे।
विपदा की जजीरें जिसने
समझी कच्चे धागे
ज्वालामुखियों पर जिसकी
दुन्दुभी बजी है, बोलो
उस विराट को कौन कहेगा
मत अपना मुंह खोलो ?
अनल फेंकता चन्दन भी
जब होता घर्षण अति है
मुट्ठी में तूफान, चरण-तल में
भूचाली गति है।
आज जूझने चली तिमिर से
रवि की ज्योति धारा
लिए अर्घ्य है खड़ा विनत
प्राची का भव्य किनारा।
शतदल खोल नयन सर में
झुक-झुक कर हेर रहे हैं
चचल पवन मलय-मंजुल को
बरबस घेर रहे हैं।
कौन खड़ा है, लिए रौद्र
संकल्प आज अपनी पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूछ कहा दिनकर का स्वर
नरु की फुनगी-फुनगी पर
शीघ्र पलट जाएगा क्या

फिर वैदिक-काल दुबारा ?
आज जूझने चली तिमिर से
रवि की ज्योति धारा ।

—प्रफुल्ल शास्त्री

वेद मन्दिर में बन रही

यज्ञ-शाला के लिए

ईंटें, संगमरमर-लोहा-सीमेंट भेजिए

१००१ रु० देने वालों का नाम पत्थर पर अंकित होगा

५००१) या अधिक देने पर जन-ज्ञान में चित्र भी प्रकाशित होगा

१०-२० हजार खर्च कर अपने किसी प्रिय जन की स्मृति में कमरा बनवाएं

□□

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर
१५६७ हरध्यान सिंह मार्ग करौल बाग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान वी नां ।
पंज तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां ।।
जगत भिखारी फिरत है सबको दाता राम ।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहि काम ।।
चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय ।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय ।।
जो उपजियो सो विनस है परो काल के गाल ।
नानक हर गुन गाय ले छांड़ सकल जंजाल ।।
राम गयो रावण गयो जाको वहु परिवार ।
कह नानक थिर कछु नहिं सुपने जियुं संसार ।।
झूठ बखान कहा करे जग सुपने जियुं जात ।
इनमें कछु तेरो नहीं नानक कहियो बखान ।।
बिरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की ।
लोभ ग्रसयो दसहु दिस धावत आस लगयो धन की
संग सखा सब तज गये कोऊ न निबाहियो साथ ।
कहु नानक एहूं विपत में टेक एक रघुनाथ ।।

—श्री गुरुनानक देव जी

जो हमको हरमेस उचरि है ।
ते सब नरक कुंड महिं परि है ।।

—दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

पंजाबी चन्दू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—१८५, वालकेश्वर मार्ग, तीनबत्ती, बम्बई-४००००६

१. जावेरी बाजार २. ग्रांट रोड ३. कोलाबा ४. दादरा टी० टी० ५. वरली नाका ६. सर्कल ७. ठाकुर द्वार ८. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट ९. घाटकोपर (पश्चिम) १०. लिंकिंग रोड, बांदरा ११. रेलवे स्टेशन के सामने सांताक्रुज (पश्चिम)

कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांट रोड
बम्बई-४००००७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिए

१.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	६० पैसे
२.	भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षु:	६० पैसे
३.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	६० पसे
४.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	६० पैसे
५.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	५ रु०
६.	हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	६० पैसे
७.	पोस्टर दो प्रकार के	८० पैसे
८.	इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	६० पैसे
९.	शुद्धि का मंत्र—कुंवर चांदकरण शारदा	८० पैसे
१०.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	६० पैसे
११.	हिन्दू जागो ! देश बचाओ !	६० पैसे
१२.	इस्लाम—एक परिचय	६० पैसे
१३.	Bible in the Balance	६० पैसे
१४.	A Challenge to the Christian Faith	२५ पैसे
१५.	पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु:	६० पैसे
१६.	पादरियों को चुनौती	६० पैसे
१७.	बाइबिल को चुनौती—ओमप्रकाश त्यागी	६० पैसे
१८.	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	६० पैसे
१९.	...और पादरी भाग गया	६० पैसे
२०.	Christianity Unmasked	१.०० पसे
२१.	The Clarion Call	६० पैसे
२२.	जन-ज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक	६ रु०
२३.	हमने इस्लाम क्यों छोडा ?	६० पैसे
२४.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	६० पैसे
२५.	तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे	६० पैसे

१००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत और
५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन
प्रत्येक आदेश के साथ १।४ धन अगाऊ भेजें ।

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुभक्त आरुणि

—स्वर्गीय प्रेमचन्द्र शास्त्री

पांच हजार वर्षों से भी कुछ पहले की बात है कि हमारे देश में तक्षशिला नाम का एक स्थान था। वहां विद्या का बहुत बड़ा केन्द्र था। हमारे देश के तथा दूसरे भी अनेक देशों के बालक वहां विद्या पढ़ने आया करते थे। इस विद्या केन्द्र में प्रायः सभी विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

वहीं आयोद धौम्य नाम के एक ऋषि आश्रम बनाकर रहा करते थे। उनके पास सैंकड़ों शिष्य विद्याध्ययन के लिए आते और गुरु जी की भक्ति-भाव से सेवा किया करते। शिष्यों के दूध पीने के लिए सैंकड़ों गौएं भी उस आश्रम में पलती थीं, जिनकी सेवा वे शिष्य ही किया करते थे। वे ही उन्हें चारा पानी देते और वे ही उन्हें वन में चराने के लिए ले जाते। इसके साथ ही ऋषि ने शिष्यों के खाने के लिए खेत में अन्न भी बोया हुआ था; धान के खेत की क्यारियों में जल भरा रहता था।

ऋषि के यों तो सैंकड़ों ही शिष्य थे, किन्तु उनका एक प्रिय शिष्य आज्ञाकारी आरुणि था। इसकी एक कहानी सबको आश्चर्य में डालने वाली है। उससे पता चलता है कि आरुणि कितना अधिक गुरुभक्त था। उसने अपनी जान पर खेलकर भी गुरु जी की आज्ञा का पालन किया।

एक दिन ऋषि अपने कुछ शिष्यों को साथ लेकर प्रातःभ्रमण के लिये निकले। वे उन्हें मार्ग में मौखिक शिक्षा भी देते थे। भ्रमण के पश्चात् जब वे अपने आश्रम में वापिस पहुंचे और भ्रमणकाल में दी गई शिक्षा भी दोहराने लगे तो इतने में ही वर्षा आरम्भ हो गई। थोड़ी ही देर में तूफान आ गया और मूसलाधार वर्षा पड़ने लगी।

ऋषि ने शिष्यों से कहा बेटो, खेत में धान की क्यारियों के बांध इस वर्षा में कहीं टूट न जायें। इतना सुनना ही था कि आरुणि ने न किसी से कुछ कहा, और न ही किसी दूसरे साथी की प्रतीक्षा की, वह तुरन्त ही खेत की ओर दौड़ पड़ा। खेत में जाकर उसने देखा कि एक क्यारी का बांध भारी वर्षा से टूट गया है और क्यारी का पानी बाहर बह रहा है। उसने मिट्टी और घास रख-रखाकर उस बांध को ठीक करना शुरू किया, किन्तु वर्षा तेज थी, पानी तड़ातड़ पड़ रहा था, इसलिये आरुणि बांध रोकने के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने प्रयास में सफल नहीं हो पा रहा था।

आरुणि सच्चा गुरुभक्त था, उनका आज्ञा का पालन करना, अपने प्राण खोकर भी, वह परम धर्म समझता था। उसने हिम्मत नहीं हारी और उस बांध को ठीक करने का और भी दृढ़ संकल्प बना लिया। ज्यों-ज्यों वह बांध में मिट्टी लगाता, त्यों-त्यों वर्षा और भी तेज होती जाती और बांध में लगाई गई मिट्टी वह जाती। वर्षा में और आरुणि में एक प्रकार से प्रति-स्पर्धा छिड़ गई। यानी वर्षा यह कह रही थी कि मैं जितना भी हो सके, आज ही बरसूंगी और आरुणि मानो यह कह रहा था कि मैं आज ही बांध को ठीक करके दम लूंगा। आरुणि ज्यों ही मिट्टी का लौंदा वहां रखता, त्यों ही वह पानी के तेज बहाव से बह जाता।

अपने इस प्रयास में जब आरुणि असफल हो गया और बांध ठीक न कर सका तो उसकी बुद्धि ने उसका साथ दिया। उत्तम पुरुष वही होता है जो बार-बार विघ्न आने पर भी अपने प्रारम्भ किए हुए काम को बीच में नहीं छोड़ता। आरुणि को एक उपाय सूझा। बांध को जिस स्थान पर वह मिट्टी लगा रहा था और मिट्टी नहीं रही थी, वहां वह स्वयं लम्बा लेट गया। उसकी सू-झबूझ ने काम किया और क्यारी का पानी बहना बन्द हो गया। आरुणि पानी रोकने के लिए वहीं लेटा रहा। हवा बहुत तेज और ठण्डी चल रही थी, ऊपर से उसके ऊपर मूसलाधार वर्षा पड़ रही थी। मिट्टी से मिला पानी आरुणि के शरीर पर से होकर उतर रहा था।

उधर आश्रम में आरुणि के साथी उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे, किन्तु आरुणि तो खेत में बांध की जगह स्वयं लेटा हुआ था। सारा दिन बीत गया। सन्ध्या काल भी चला गया और रात्रि भी आ गई। सब आश्रमवासी रात्रि में निद्रा मग्न हो गए। प्रातः उठकर शिष्यों ने देखा कि आरुणि अभी तक खेत से वापिस नहीं आया है। उन्होंने गुरु जी से निवेदन किया कि गुरु जी, आरुणि कल खेत पर गया था, सारा दिन बीत गया, और रात्रि भी चली गई, वह अभी तक वापिस नहीं लौटा है।

इतना सुनते ही गुरु जी एकदम चिन्तित हो गए और कुछ शिष्यों को लेकर खेत की ओर चल पड़े। दयार्द्र ऋषि ने जोर-जोर से आवाज देनी शुरू की आरुणि, आत्रेणि, बेटा आत्रेणि! गुरू जी की पुकार का कोई उत्तर नहीं मिला। अब तो गुरू जी और आरुणि के साथी इधर-उधर घूम-घूम कर उसे ढूंढने लगे। ढूढते-ढूढ़ते उन्होंने देखा कि खेत में एक क्यारी के बांध की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जगह आरुणि स्वयं लेटा हुआ है। भयंकर सर्दी के कारण वह सिकुड़ा पड़ा है उसके शरीर पर मिट्टी की पतली-पतली कई परतें जम गई हैं और वह बेहोश हो गया है। ऋषि करुण स्वर में आरुणि को पुकारने लगे और अपने प्रिय शिष्य आरुणि के हाथों को हिला डुलाकर जगाने लगे। अन्त में उसकी चेतना कुछ जगी और उसने आंखे खोल दीं। उसकी दृष्टि अपने गुरु जी के ऊपर भी पड़ी और झट उठकर उसने उनके चरणों में प्रणाम किया। गुरू जी ने उसे छाती से लगा लिया।

गुरू जो आरुणि को वहां से आश्रम में ले गए, जहां उसे स्नान कराया गया और शीत-निवारक औषध डालकर गर्म दूध पिलाया गया। फिर उसे गर्म वस्त्र धारण कराये गए।

जब आरुणि स्वस्थ हो गया, तो उसके साथी उसे गुरु जी के समीप ले गए। गुरू जी ने पुनः आरूणि को अपनी छाती से लगाया। उसके सिर पर स्नेह भरा हाथ फेरा और परम प्रसन्न होकर उसे आशीर्वाद दिया। बेटा आरुणि तुम परम गुरुभक्त हो, तुम्हारा नाम सदा अमर रहेगा और संसार आदर के साथ अनन्त काल तक तुम्हारा स्मरण करेगा। सहस्रों यज्ञों का फल तुम अनायास ही प्राप्त करोगे और वेद आदि सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञान बिना थोड़े ही समय में प्राप्य कप लोगे!

क्या आप हिंदू हैं ?

क्या आप को अपने धर्म, संस्कृति और परम्पराओं पर अभिमान हैं ?

क्या आप अपना सभी कुछ बचाने की भावना रखते हैं ?

यदि आपका उत्तर हां में हा तो

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति

के स्वयं सदस्य बनें

और

अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें।

हिन्दू जागो! देश बचाओ!

मंत्री, ब० भा० हिन्दू रक्षा समिति

वेद मन्दिर, ई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

१. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य ५००)
२. सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	५०)
३. वेद ज्योति	१५)
४. वेदांजलि : ३६५ मंत्रों की प्रेरक व्याख्या	३०)
५. सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या— पं० चमूपति)	१५)
६. ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में : क्षितीश वेदालंकार	१५)
७. संस्कारविधि [सजिल्द] :	१५)
८. सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	३०)
९. अग्निहोत्र दर्पण (डा० रामनाथ वेदालंकार)	२०)
१०. सत्यार्थ-प्रकाश (१०×१५ इंच) स्थूलाक्षर	१५१)
,, ,, आर्ट पेपर पर	२५१)
११. ज्योति स्तम्भ :	१०)
१२. वैदिक सम्पत्ति	८१)
१३. योगासन :	२)
१४. योग और ब्रह्मचर्य :	३)
१५. Concept Of God	३०)
१६. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश :	२५)
१७. LIGHT OF TRUTH	५०)
१८. प्रकृति और सर्ग : आचार्य उदयवीर शास्त्री	६)
१९. अथर्ववेद परिचय :	६)

बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं ।

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर

१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग,
करोलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गर्मियों का बेनजीर तोहफा : ठंडाई

ग्रीष्म के पेय पदार्थों में 'ठंडाई' जो कि स्वयं अपने अर्थ का द्योतक है, एक विशिष्ट और प्रचलित पेय है, ठंडाई तो अब इतनी प्रचलित है कि देश के अधिकांश भाग में जहां कड़कड़ाती गर्मी नहीं पड़ती, वहां भी बंद बोतलों में पाई जाती है, पर उसका असली स्थान उत्तर भारत है और मुख्य नगर बनारस है। ग्रीष्म ऋतु में प्राय: संध्या के समय गंगा के वक्षस्थल पर तैरती हुई डोंगियों (एक प्रकार की नौका) पर या बजरे की छत पर ठंडाई छानते हुए अलमस्त बनारसी आपको दृष्टिगोचर होंगे। बिना समय की चिन्ता किये इत्मीनान और धैर्य के साथ वे ठंडाई छानते हैं और असीम आनंद के साथ उसका पान करते हैं, यह भी देखने ही योग्य है, पीनेवाले अधीर होकर छानने वाले से पूछते हैं, 'क्या भैया, छन गयी ?' वह इत्मीनान से उत्तर देगा, 'हां, जरा धैर्य रखो' तो फिर लीजिए, इस बनारसी ठंडाई का आनंद- कैसी छानी है आपकी ?

साधारण बनारसी ठंडाई

सामग्री : १ लीटर दूध और पानी मिला कर, ३७५ ग्राम शक्कर या मिश्री, १०० ग्राम बादाम की गिरी, ५० ग्राम पिश्ता, २० दाने काली मिर्च, १०-२० छोटी इलायची, गुलकंद या देशी चैती गुलाब के फूलों की पंखुड़ियां और गुलाबजल।

विधि : बादाम और पिश्ते को ५-६ घंटे पहले ठंडे जल में भिगोकर रखिए। काली मिर्च, इलायची छील कर उसका दाना और गुलकंद भिगोकर रखिए। एक सिल पर बादाम और पिश्ते को छील कर अलग-अलग बारीक पीसिए। बाकी भिगोये हुए पदार्थ को भी पीसिए। छन्ने के पिसे हुए बादाम के गूदे को दूध-पानी से छानिए। बार-बार छानते रहने से पूरे बादाम का गूदा छन जावेगा। तब पिश्ते को भी उसी प्रकार छानिए। बाकी पिसी बची हुई सामग्री को भी उसी प्रकार छान कर शक्कर या मिश्री के पानी को भी उसी छन्ने में से उसी बर्तन में छानिए। गुलाबजल डाल दीजिए। केसर, गुलाबजल में ही घोंट कर इतनी डालिए कि ठंडाई में केसर का रंग आ जाये ठंडाई को अच्छी तरह मिलाइए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मलाई क ठंडाई

केवल दूध से ऊपर लिखी विधि से ठंडाई तैयार कीजिए। फिर लगभग २५० ग्राम या इच्छानुसार दूध की मलाई घर पर बनाईए। अथवा बाजार से लाईए। ठंडाई ठंडी होने पर ऊपर से मलाई डालिए। कभी-कभी अतिथि को देते समय भी गिलास अथवा मिट्टी के पुरवे (कुल्हड़) में ठंडाई भर कर ऊपर से मलाई डाल कर देते है।

कसेरू से सुवासित ठंडाई

कसेरू के फल की ठंडाई केवल ग्रीष्म ऋतु में ही बन सकती है क्योंकि इसके दर्शन कड़ाके की गर्मी में ही होते है। कसेरू को छील कर पत्थर के इमामदस्ते में कूंच लीजिए। फिर इसे ठंडाई बनाने के ५-६ घंटे पहले पानी में भिगो दीजिए। उसी पानी में जो आपने ठंडाई के लिए माप कर रखा है, ठंडाई नं० १ की विधि से ठंडाई बनाइए। कसेरू की ठंडाई में दूध अवश्य ढालिये। ठंडाई छन जाने पर भिगोये हुए कसेरू के गूदे का पानी हाथ से दबा कर उसी ठंडाई में छान कर उलट-पलट दीजिए। इसका रंग श्वेत होता है। गुलाबजल अवश्य डालिए।

अंगूर की सुवासित ठंडाई

अंगूर की ठंडाई भी बड़ी स्वादिष्ट होती है। ठंडाई तैयार होने के पहले ५-६ घंटे अंगूर को छीलकर बाद में खूब मसल कर पानी में भिगाइए। १ लीटर ठंडाई के लिए २५० ग्राम अच्छे मीठे अंगूर तो चाहिए ही। नं० १ की ठंडाई की विधि से ठंडाई बनाइए। दूध जरा भी मत डालिए। ठंडाई तैयार होने पर छन्ने से अंगूर का भिगोया मसूला हुआ पानी भी उसमें छान कर मिलाइए। इस ठंडाई में एक अंगूरी रंग की आभा आ जाती है। अंगूर की ठंडाई तो आप और भी ऋतुओं में बना सकती है।

अनानास से सुवासित ठंडाई

उपरोक्त विधि से केवल १ लीटर पानी ले कर बनारसी ठंडाई बनाईए जिस १ लीटर पानी से आप पूरी ठंडाई बनाने वाली है, उसी में से थोड़ा पानी लीजिए। कम-से-कम एक साधारण माप का खूब पका अनानास लें। छीलकर उसका गूदा लेकर ठंडाई बनाने से पहले थोड़े पानी में भिगो दीजिए ठंडाई छन जाने पर एक हाथ से बर्तन में अनानास का गूदा दबा कर मल मल के छन्ने से ठंडाई में अनानास का पानी छान कर मिलाइए। इन ठंडाई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में गुलाबजल या गुलकंद डालने की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि अनानास की अपनी ही एक सुगंध हैं।

पांच मग्ज की ठंडाई

उपरोक्त ठंडाइयों में स्वाद और शीतलता के साथ सुगंध भी रहती है। लेकिन पांच मग्ज की ठंडाई तरावट के साथ-साथ दिलोदिमाग को एक प्रकार की शक्ति भी देती है। इसमें भी और ठंडाइयों की तरह, केवल दूध या पानी या दूध और पानी मिला कर उसी हिसाब से शक्कर डालिये। पाँच मग्ज अर्थात् खरबूजे के बीज, तरबूज के बीज, पेठा, कद्दू, ककड़ी (खीरे) के बीज बराबर-बराबर लेकर जितनी ठंडाई बनानी हो, उस हिसाब से पानी में भिगो कर, फिर पीस कर उसी प्रकार से छान कर बनाइए। यह ठंडाई स्वाद के साथ-साथ दिलोदिमाग की शक्ति के लिए उपयोगी मानी जाती है। □

जन-ज्ञान (मासिक)

की

१० प्रतियां केवल २०) की वी० पी० से मंगाएं और अपने मित्रों को भेंट करें।

२० या २० से अधिक प्रतियां मंगाने पर १)७५ पैसे प्रति होंगी।

कागज—छपाई—डाक व्यय सब महंगे

पर प्रचार के लिए

हम जन-ज्ञान आज भी लागत से कम मूल्य पर

दे रहे हैं।

हिन्दू राष्ट्र घोषित कराने के लिए

हमारा साथ दीजिए।

जन-ज्ञान (मासिक), नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत को सही अर्थों में भारत बनाओ

—युगलकिशोर चतुर्वेदी

प्रखर राष्ट्रवादी शचीन्द्र सान्याल ने कहा था कि "हमें अपना राष्ट्र स्वतन्त्र इसलिए नहीं चाहिए कि हममें से कुछ की इच्छा अंग्रेज राजा को हटाकर स्वयं राजा बन जाने की है। हमें अपना राष्ट्र स्वतन्त्र इसलिए चाहिए कि एक सुदीर्घ प्राचीन काल से— जिसकी परिकल्पना पश्चिम की दो अढ़ाई सौवर्ष से विकसित सभ्यताएं कर नहीं सकतीं। हमारी जो अविच्छिन्न विचार परम्परा चली आ रही है और जो ग्राम-ग्राम के उपांतों में सध्या समय ग्राम पुरोहित और अतिथि सन्यासियों की प्रवचन परम्परा में सुदृढ़ होती रही है, उसके मूल पर आघात करने की साजिश जर्मनी-फ्रांस के कुपठित लोगों की सहायता से इंगलैंड के विश्वविद्यालयों में अंग्रेज सरकार द्वारा की जा रही है। अंग्रेज सरकार द्वारा विकसित की जा रही नई शिक्षा नीति मेरी ग्राम व्यवस्था को ध्वस्त करने की सोची-समझी साजिश है। मैं अब केवल हाथ में शास्त्र पकड़ा नहीं रह सकता, मुझे शस्त्र पकड़ना ही होगा। मां बलिदान मांगती है।"

उमेश चन्द्र विद्यारत्न ने "मानवेर आदि जन्मभूमि" की भूमिका में, अरविन्द घोष ने बंगाल के एक स्कूल के प्राचार्यपद से दिए गए अपने भाषण में तथा अन्य राजनैतिक भाषणों में, आचार्य बंकिम बंदे मातरम् के लेखक ने लार्ड बेवर को दिए गए अपने एक उत्तर में तथा 'अंग्रेज जातिर प्रति आमार शत्रुता' नामक एक लेख में, लाला हरदयाल ने 'शिक्षा पर कुछ विचार' नामक पुस्तिका में, सुभाषचन्द्र बोस की पत्रावली' में स्वामी दयानंद के 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा अनेकानेक भाषणों में, वीर सावरकर तथा परमानंद के भाषणों में, महात्मा गांधीजी की 'हिन्दू जीवन पद्धति' में सुब्रह्मण्यम भारती की कविताओं में पंडित भगवद्दत्त के 'भारत का वृहद इतिहास' की भूमिका में, चन्द्रगुप्त वेदालंकार की 'वृहत्तर भारत' की भूमिका में, डा० सम्पूर्णानन्द की 'आर्यों की आदि भूमि में', रघुनन्दन शर्मा की 'वैदिक सम्पत्ति' में तथा संघर्षरत भारत के अनेकानेक विद्वानों की शत-शत कृतियों में प्रातः वंदनीय शचीन्द्र सन्याल का स्वर तरह-तरह से उभरा। यदि विपरीत स्वर रहा तो कांग्रेस के तत्कालीन उदारवादियों का जो राजनैतिक सत्ता अंग्रेज से छीनना अवश्य चाहते थे, पर उसे नये भारत का जन्मदाता भी मानते थे।

सत्ता परिवर्तन हुआ। देश का संविधान बना। संविधान के प्रथम पन्ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर ही 'भारत' भारतो वै अग्निः (भारत ज्ञानाग्नि का दूसरा नाम है) का देश बड़े अक्षरों (कैपिटल लैटर्स) में इंडिया हो गया। अगले पृष्ठ पर 'इंडिया दैट इज भारत' हो गया। १९४९ के नवम्बर की २६ को ज्ञानाग्नि का दूसरा नाम भारत, शचीन्द्र सान्याल का भारत नष्ट हो गया, 'इंडिया दैट इज फारत' आविर्भूत हुआ। संविधान निर्माताओं द्वारा बलिदानात्माओं को प्रथम श्रद्धांजलि दी गई। एक अनूदित राष्ट्र हिन्दी से अंग्रेजी में इंडिया के रूप में आविर्भूत हुआ। न्याय, आजादी, समता तथा भातृ-भातृ अधिकार (जस्टिस, लिबर्टी, ईक्वैलिटी एण्ड फ्रेटरनिटी) के महत् उद्देश्यों को लेकर संविधान ने भाग १११ में जब सुनाधिकार की बात की। तब कहीं स्वभाषा में अभिव्यक्ति की बात नहीं कही यद्यपि वागभिव्यक्ति का पूर्णाधिकार दिया गया। भाग ४ की धारा ४३, ४४, ४५ में भी जहां स्वभाषाओं की बात शिक्षा के माध्यम के रूप में आनी चाहिये थी, नहीं आई। लार्ड माउन्टबेटन की नवजात स्वतन्त्रता की बागडोर ह्यूम द्वारा पैदा की गई कांग्रेस की नई बनी सरकार के स्वनामधन्य नेताओं ने अपनी-अपनी प्रणय निष्ठाओं को गहरा करने के चक्कर में संभलवा दी। स्वराष्ट्र प्रेमी एवं स्वभाषा प्रेमी लार्ड माउन्टबेटन को चाहिए भी क्या था, उसने चातुरीपूर्वक अपनी जाति की प्रतिनिधि भाषा को एक लम्बे समय के लिये वर्चस्विता बनाये रखने के लिये ऐसी भूमिका तैयार कर दी जिसका परिणाम संविधान के भाग V (२०) भाग VI (२१०) और भाग XVII के गम्भीर अध्ययन से समझ में आ सकते हैं। एक लम्बे समय तक स्वतन्त्र राष्ट्र की परकीया भाषा की संवैधानिक दृष्टि से प्रमाणिकता को स्वीकार करना पड़ा इसलिए कि यह राष्ट्र वस्तु व विचार निष्ठ न रहकर व्यक्ति निष्ठ किया जाता रहा। महात्मा गांधी यदि मार नहीं दिये गये होते तो वे इस स्थिति के विरुद्ध या तो आंदोलन करते या आत्महत्या कर लेते। उनकी इच्छा के विरुद्ध विभाजन स्वीकार कर उनकी राजनैतिक हत्या का षड्यन्त्र सत्ता लोभियों ने पूर्व ही कर दिया था, राष्ट्र की भाषानिष्ठा की दृष्टि से विभाजन वर्चस्वी भाषा, साधिकारिणी भाषा अंग्रेजी और दीन, दुर्बल अधिकार मांगती स्वभाषाओं के पक्षधरों के बीच चतुराईपूर्वक संविधान में अजीबोगरीब व्यवस्थायें खड़ी करके किया गया। जिस देश ने वास्तुति में वैदिक छंदों की रचना की थी' ज्ञान को मां सरस्वती का रूप दिया था, "वाग्वै राष्ट्री" राष्ट्रभाषा की स्वामिमानी होती है—के रचयिता देश के ऊपर परकीया भाषा की वर्चस्विता पैदा कर देश की धरती का स्तन्यपान किये लोगों ने कैसी अनोखी मातृ-भक्ति प्रदर्शित की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि नवजात स्वतन्त्रता वाले सभी राष्ट्रवादियों की आंखें छलछला आई। यदि कहीं आंसू नहीं थे तो हमारी अपनी आंखों में अन्यथा षड्यन्त्रकारी ऐसे लोग जलधाराओं में विलीन हो गये होते। हम जिस राजसिक 'मन्यु' की वेद में उपासना करते रहे, और जीवन में अर्जित अहिंसा के नाम पर उठे उन्मादी शोर के नीचे दबे केवल कराहते भर रहे उस वेद के 'मन्यु' को अंगीकार नहीं कर पाये। मन्यु रहित पौरुषहीन राष्ट्रीय जीवन का परिणाम था कि हमारे अपने ही देश में अपनी भाषाएं हमारे जीवन व्यवहार में न तो प्रतिष्ठित हुई और न समादर प्राप्त कर सकी।

अंग्रेजी लैटिन-फ्रेंच के बोझ को एक साथ इसलिए झटके से उतार पाई थी कि वहां एक निर्णय से न्यायालयों में केवल उसकी प्रामाणिकता को ही प्राण प्रतिष्ठित कर दिया गया। 'गड़रियों की भाषा अंग्रेजी' ऐसा कहने वाले लार्ड के रूप में जाने वाले लैटिन-फ्रेंच के अंधभक्त वकील न्यायालयों के बहिष्कार की धमकियां दे-देकर स्वतः ही मौन हो गये। यहां तो अनोखे महान् लोगों ने एक महान् जन नेता को श्रद्धांजलियां ही देश के न्यायालयों में स्वभाषाओं के प्रवेशाधिकार को सशर्त वाक्यों की भूलभुलैया में उलझाकर एक लम्बे अरसे के लिए संविधान के माध्यम से रोक दिया। इसे पूर्व शासकों की भक्ति कहा जाये या देश का दुर्भाग्य कि मुझ जैसे अदना आदमी की समझ में वह बात न तब आई थी और न आज आती है (हमारे देश में नए बन रहे न्यायाधिकरणों की भाषा अनिवार्यतः अंग्रेजी रखी जा रही है, हिन्दी व अन्य क्षेत्रीय भाषायें बहिष्कृत व अधिकारच्युत हैं)।

उपर्युक्त सब कुछ के परिणाम देश में आने वाले वर्षों में नीचे लिखे अनुसार दिखलाई पड़े :—

१. प्रशासनिक इकाइयों को शासक इकाई व शासित इकाई अर्थात् राजपत्रित व अराजपत्रित में बांटने की इंगलैंड के शासकों की नीति जिसमें विशेषाधिकार सम्पन्न आई० सी० एस० अधिकारी खड़े किये गये थे, वह यथावत आजाद देश में बनाई रखी गई और उसके अनुकरण में आई० ए० एस०, आई० आर० एस० एवं आई० एफ० एस० आदि की प्रत्यक्ष सेवा प्रणाली रची गई। इसका परिणाम था कि विशेष अधिकारी एवं सुविधाओं की भोगी यह नौकरशाही अंग्रेजी तन्त्र और विचारसरणि की पोषक हो गई और स्वभाषाओं के स्वाभाविक अधिकार को प्रत्यक्ष अथवा प्रच्छन्न रूप से विरोधी रही। कुछ प्रतिशत में इस नौकरशाही में ऐसे लोग थे जिनकी पारिवारिक भूमिकायें राष्ट्रीयता की रहीं और जो जन चेतना में विश्वास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रखते थे और चाहते थे कि देश में स्वभाषाओं को अपना अलग उचित अधिकार एव सम्मान प्राप्त हो तथा अंग्रेजी अतिथि भाषा के रुप में विश्व की छोटे-बड़े देशों की अपनी बाधाओं के साथ समादृत रहे, पर अपहर्ता भाषा का रुप छोड़े। पर उनका प्रतिशत बहुत न्यून रहा।

इन सेवाओं के प्रभुत्व के कारण इनके अधीन कर्य कर रहे व्यक्ति अपनी आजीविका की चिन्ता में अनिच्छापूर्वक अंग्रेजी के हिमायती होते चले गए और एक स्थिति के पश्चात् वे भूल ही गये कि स्वतन्त्रता और स्वभाषा पर्यायात्मक होते हैं, सक के बिना दूसरे का अस्तित्व विचारा नहीं जा सकता स्वाभिमानी गौरवपूर्ण राष्ट्र की कल्पना स्वभाषाओं के बिना की नहीं जा सकती।

३. देश के आर्थिक स्त्रोतों को भीतर-भीतर काटने की नीति के अंतर्गत जनजीवन की पारम्परिक पद्धतियों पर सुचिन्तित आक्रमण राजनैतिक अराजनैतिक अभिकरणों द्वारा इस प्रकार किया गया कि देश की जनता के स्वास्थ्य की बात उठी तो एलोपैथिक देशी चिकित्साओं की सहयोगिनी न बनकर उनकी प्रतिस्थानी कह दी गई, अन्न की बात उठी तो विदेशी खादें की सहयोगिनी न बताकर उनकी प्रतिस्थानी होती चली गई। खेती के देशी उपकरण विदेशी उपकरणों से इस हद तक नष्ट कर दिये गये कि हल व बैल छोटे जोतकारों से छिन्न गये और उनके खेत बड़े जमींदारों के किराये पर चलने वाले ट्रैक्टरों के अधीन किए जाते रहे और ग्रामीण मानवशक्ति अनेपयोगी की जाती रही। बड़े किसान अंग्रेजी शैली की जीवन पद्धति अपनाने के लिये निरन्तर प्रेरित किये जाते रहे और उनके अनुकरण में भूमि मजदूर अथवा किसान अपने बच्चों को अंग्रेजियत सीखने के लिये उन्हें शहर भेजने के लिये प्रेरित किता जाता रहा। सम्पूर्ण ग्रामीण जीवन नष्ट कर दिया गया। शिक्षा की बात उठी तो विश्वविद्यालयों में शोध की भाषा अंग्रेजी अनिवार्य बनी रही जिससे उस शोध का सामान्य जनता के लिये कोई उपयोग न हो और वह प्राथमिक कक्षाओं से लेकर विश्वविद्यालयों की कक्षाओं तक के पाठ्यक्रमों में अपना स्थान न प्राप्त कर सके। अव्यवस्था की स्थिति इस हद तक रही कि बिहार से लेकर मध्यप्रदेश, गुजरात तक और कहीं-कहीं अन्य प्रांतों में भी जहां हायर सैकण्डरी तक शिक्षा का माध्यम हिन्दी अथवा अन्य राष्ट्रीय भाषायें थी, वहां डिग्री स्तर के लिये गणित एवं विज्ञ विषयों में विद्यार्थियों को शिक्षा अनिवार्यतः विदेशी भाषा अंग्रेजी के मा से दिलाई जाती रही और कुछ घरों के लाड़ले बेटों एवं बेटियों के भविष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुनिश्चित करने की नौकरशाही की घोर स्वार्थमयी नीतियों के कारण हिमालय की तलहटियों और ब्रह्मपुत्र, गंगा, यमुना, गोदावरी, कावेरी के मैदानों के ग्रामांचलों से आने वाली खिलती प्रतिभाओं के गले घोटे जाते रहे।

जनजीवन के लिये अनिवार्य उपभोक्ता सामग्री विदेशी तकनीक एवं इलैक्ट्रानिक उपकरणों, यूरिया, वाहनों आदि के आयात की कीमत पर निर्यात कर जनता के स्वास्थ्य को प्रथम तो नष्ट कर दिया गया और बाद में उनके स्वास्थ्य के लिये विदेशी दवाईयों का आयात ही नहीं किया गया अपितु उन रोगों का भी आयात किया गया जो इस देश को कभी अज्ञात ही थे।

४. स्व-भाषाओं के राजकाज में निरर्थक हो रहने और फिर उपेक्षा की पीड़ा सहने को बाध्य करने के लिये अंग्रेजी के माध्यम से बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उपभोक्ता वस्तुओं के निर्माण करने के क्षेत्र में प्रवेश कराकर एक विशाल जनता को बड़ी लटकस के रूप में परिवर्तित होने के लिये बाध्य किया गया। जनता की स्वाभाविक राष्ट्रीयता और देशजता की भावना के ऊपर दैनंदिन जीवन की आवश्यकताओं को अंग्रेजी भाषा, रोमन लिपि के घेरों से घेर दिया गया। जनता के व्यक्तिगत सुख उसके देश में उनकी भाषा के माध्यम से नहीं मिल सकते अतः परकीया भाषा के एकल स्वत्वाधिकार व वर्चस्व को उन्हें सहना ही होगा कि एक कारुणिक विवशता खड़ी की गई।

५. और इन विवशताओं के बीच विशाल जन जीवन में एक सुदीर्घ काल में अविच्छिन्न नीति सफल हो उठी। जिस चिंतन की गरिमा पर दारा शिकोह, इमैनुअल कांट, वेबर, राय, वोहटलिक, गोल्स्टुकट, मैक्सिम गोर्की, टोल्स्तोय, शापेनहावर, श्नाइत्जर, विल्किन, जोन्स, सर शार्ज वुडरफ, तकाकुसी, ओडोलेन श्नेकेल जैसे शतधिक विश्वस्तरीय चिंतक अपने जातिगत द्वेष-विद्वेषों के बावजूद अर्धमन या पूर्णमन के साथ लड रहे हों वही चिंतन उसी जनता के श्रेष्ठ जनों में पोंगा पंथी हो जाय, प्रगतिशीलता का विरोधी माना जाए और जब विश्व महानता खतरे में डाली जाए तो पश्चिम के हिंसात्मक चिंतन का कोई अन्य जीवन चिंतन विकल्प न बन सके इस महत्वकांक्षा से अंग्रेजी और अंग्रेजी जीवन शैली को अनेक विविध रूपों से थोपकर 'स्व' में पूर्ण अनास्था अर्ध-आस्था वाला जीवन निरन्तर खड़ा किया गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वनाम धन्य मदनमोहन मालवीय, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन, आचार्य नरेन्द्र देव, राहुल सांकृत्यायन, डा० राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, डा० राजेन्द्र प्रसाद, सेठ गोविन्द दास जैसी विभूतियां इन सब खतरों से स्वयं भी परिचित थीं और निरन्तर जनता को आगाह करती रहीं कि जनता अथर्ववेद की शाश्वत चेतावनी की ज्ञात से अभय हो, मित्र से अभय हो, अमित्र से अभय हो, प्रत्यक्ष से अभय हो, परोक्ष से अभय हो, पर ध्यान दें। संसद में अपनी अंतिम सांस तक प्रकाशवीर शास्त्री यह चेतावनी देश को देते रहे। उनकी मृत्यु के पश्चात् चेतावनी का वह स्वर भी कहीं नहीं सुनाई पड़ा। सत्ता-उन्मुखी राजनीति के अभद्र संघर्षों से बधिर करने वाले शोर में देश की कृत्रिम एकता के नाम पर स्व-भाषाओं की बात उठाने वाले अंग्रेजी पक्षधरों द्वारा राष्ट्रद्रोही करार दिये जाने प्रारम्भ हुए। स्थिति हाल के दिनों में इतनी बदतर हुई है कि केन्द्रीय सरकार के हिन्दी निकायों के प्रशासनों की भाषा हिन्दी से अंग्रेजी हो उठी है, बंगाल में साम्यवादी सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा में अनिवार्य अंग्रेजी के शिक्षण को हटाने के राष्ट्रीय कार्य के विरुद्ध जो संघर्ष अपने को शिक्षाविद् कहे जाने वाले घोर अराष्ट्रीय शक्तियों ने छेड़ा है, वह सफल होना शुरु हुआ है और सरकार विचिकित्सा की स्थिति में आ खड़ी हुई है। उसके पीछे की विनाशी राजनीति से हर सावचेत नागरिक परिचित है।

देश में अंग्रेजी और उसके पक्षधर स्वभाषाओं के प्रयोग की जड़ों पर निरन्तर मट्ठा डालने से बाज आएं। इस देश का अपना चिन्तन, इसकी अपनी जीवन पद्धति सदैव के लिए मात्र इतिहास और संग्रहालयों की वस्तु बनकर न रह जाए, राष्ट्र के अनगणित स्वजीवन-स्रोतों के द्वार अपिरुद्ध (बंद) न रहें, स्वभाषाओं की सामूहिक शक्ति इस राष्ट्र का उद्गीथ हो। स्वभाषाओं की पुनः प्रतिष्ठा के साथ जातीय अन्नमय, मनोमय, विज्ञानमय कोश पुनः इतनी भास्वरता के साथ उठें कि सम्पूर्ण आत्महनन के कगार पर खड़ा यह विश्व भारत के चिन्तन को विकल्प रूप में स्वीकार कर सके।

यह महत् उद्देश्य तभी प्राप्त हो सकेगा जब केन्द्र व राज्य के मन्त्रालयों कार्यालयों, निगमों, बैंकों, स्वायत्त संस्थानों, जन परिषदों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों व व्यापारिक प्रतिष्ठानों, छोटी दुकानों, शिक्षण संस्थाओं, दूर दराज की ग्रामपंचायतों के कार्यालयों में स्वाभाविक प्रयोग की भाषा के रूप में हिन्दी व सहोदरा भाषाओं को प्रतिष्ठित करने के लिए विश्वविद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों के ही नहीं, अपितु प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छात्रायें, वरिष्ठ एवं कनिष्ठ अधिकारी, अध्यापक एवं प्रवक्ता, लेखक एवं बुद्धिजीवि, न्यायालयों के न्यायाधीश एवं अधिवक्ता, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों के कार्यकर्त्ता, देश के कलाकार; सिनेमा कलाकार दैनदिन जीवन में स्वभाषा प्रयोग का प्रण लें तथा प्राणपण से इस हेतु जुट जायें। वाङमातायें वाणी मिलने का प्रतिदान हर नागरिक से चाहती हैं। "अन्वम् नोऽनुमति यज्ञं देवेषु मन्यताम्" देवपुरुषों में यज्ञ हेतु सहानुमति होती है, विमति नहीं।

देश-धर्म की रक्षा के लिए

कम से कम ११ रु०

अधिक से अधिक जो भी संभव हो

प्रति मास अपना दान अवश्य भेजिए।

—राकेशरानी

अध्यक्ष दयानन्द संस्थान

१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-५

जिन दोनों परिवारों की धन में तथा कुल में बराबरी होती है उन्हीं दोनों की मैत्री और विवाह उचित है। ऐसे दो, जो धन और कुल में एक अधिक और दूसरा कम हो, उन परिवारों की मैत्री व विवाह का सम्बन्ध सम्भव नहीं। पञ्चतन्त्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आप जानते हैं ?

—सुरेशचन्द्र सारस्वत

१) मध्य प्रदेश सरकार ने अपने प्रान्त में हिन्दू मन्दिरों एवं ट्रस्टों (न्यासों) की आय पर १० प्रतिशत कर लगा दिया है, जबकि मस्जिदों, चर्चों व गुरुद्वारों को इस कर से मुक्त रखा गया है।

२) जगद्गुरु शंकराचार्य, स्वामी स्वरूपानंद सरस्वतीजी के अनुसार ३२००० गौवंश की हत्या प्रतिदिन देश में कर दी जाती है।

३) हर हफ्ते बंगलादेश के लगभग २०० नागरिक सीमा पार करके पं० बंगाल में अवैध रूप से घुसने का प्रयास करते हैं, जिन्हें निकाल दिया जाता है।

४) वैदिक यज्ञ द्वारा वर्षा कराने व वर्षा रोकने के लिये प्रयोग करने वाली गैर-शास्त्रीय संस्था 'वृष्टि विज्ञान मण्डल' की स्थापना हो चुकी है इस संस्था ने अनेक प्रयोग वर्षा रोकने, वर्षा कराने के लिये किये हैं जिसमें इसे ८० प्रतिशत सफलता मिली है।

५) भारत कल्याण मंच द्वारा बिछुड़े हुए लगभग ५० हजार हिन्दू बन्धुओं को पुनः शुद्ध करके हिन्दू समाज में आत्मसात् किया जा चुका है।

६) विभाजन के समय तथाकथित पाकिस्तान में २.५ करोड़ हिन्दू व भारत में २.५ करोड़ मुस्लिम थे। वर्तमान में पाकिस्तान व बंगला देश दोनों में मिलाकर २.५ करोड़ के लगभग हिन्दू ही हैं, जबकि भारत मे इनकी जनसंख्या स्वतन्त्रता के पश्चात् ३ गुना से अधिक लगभग ८ करोड़ पर पहुंच चुकी है।

७) अलीगढ़ मुस्लिम वि० विद्यालय के समान देश के अन्य भागों में भी मुस्लिम वि० विद्यालय बनाने की योजना चल रहीं है।

८) गत दिनों इण्डियन मुस्लिम लीग, आल इण्डिया मुस्लिम ली इत्तेहादुल मुस्लिम व मुस्लिम मजलिस ने मिलकर एक संयुक्त मोर्चा ब है जो कि आगामी चुनाव में शासक दल व विरोधी दलों से मुस्लिम के लिए वोट की सौदेबाजी करेगा।

९) मार्च १९८४ में अररिया (बिहार) में हुए विश्व मुस्लिम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में यह निश्चित हुआ है कि इस्लाम के प्रचार व धर्मान्तरण के लिये भारत में अब ६६० करोड़ रुपये के स्थान पर १००० करोड़ रु प्रतिवर्ष व्यय किया जायेगा।

१०) दिल्ली में बंगलादेशी घुसपैठिये बिहार व असम से निकलकर लगभग १ लाख की संख्या में आकर बस गये हैं

११) राजस्थान व गुजरात प्रान्त के सीमावर्ती जिलों में पाकिस्तानी घुसपैठिये हजारों की सख्या में आकर बस गये हैं और अभी भी इनका आना जारी है।

१२) पंजाब में सेना की कार्रवाई में कई पाकिस्तानी नागरिक सिखों के वेश में पकड़े व मारे गये हैं। यही नहीं, वहां पाकिस्तान, अमेरिका, चीन व स्वीडन के बने हुए हथियार भी स्वर्ण मन्दिर व उग्रवादियों से हजारों की संख्या में प्राप्त हुए है।

आर्य विद्वानों की सेवा में

समय-समय पर आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं आर्यसमाजों की ओर से ऐसे पत्र आते रहते हैं जिनमें सुयोग्य पुरोहित तथा धर्म शिक्षा अध्यापक की मांग की जाती है। इसके साथ ही अनेक ऐसे सेवानिवृत्त आर्य विद्वानों और अध्यापकों के भी इस आशय के पत्र आते रहते हैं कि सेवा निवृत्ति के उपरान्त वे आर्यसमाज की सेवा का कोई भी कार्य करना चाहते हैं जिससे उनके अनुभवों का लाभ समाज को मिल सके। हम दोनों प्रकार के आर्य बन्धुओं से निवेदन करते हैं कि वे अपनी-अपनी आवश्यकता के सम्बन्ध में निम्न पते पर पत्र व्यवहार करने की कृपा करें :

श्री प्रो० रतन सिंह, परामर्शदाता नैतिक शिक्षा,
डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी,
चित्र गुप्ता मार्ग, नई दिल्ली-११००५५

प्रजातन्त्र का अर्थ मैं यह समझता हूं कि इसमें नीचे से नीचे और ऊंचे से ऊंचे आदमी को आगे बढ़ने का समान अवसर मिले। — महात्मा गांधी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या तिरस्कृत वासमार्गी धर्म फिर पनपेगा

—अनुरागी

समय-समय पर धर्म के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों का सहज ज्ञान यह बताता है कि जिस समय देश की जनता राजनीति, समाज व धर्म इन तीनों से त्रस्त होकर शांत हुई है, उसी समय उसने अपनी पीड़ा का अन्त खोजने के लिये किसी न किसी धर्म की शरण ली है। बीसवीं शताब्दी में विज्ञान की उन्नति ने अपने बढ़ते हुए चरण के साथ मानव-मानव के बीच बढ़ रहे वर्ग-भेद, अभाव और ऐश्वर्य का असंतुलन, असंतोष और पीड़ाओं की असह्य वेदना भी प्रदान की है। और यही वेदना जन-साधारण में समाज और संस्कृति के प्रति अनास्था पैदा करने की कारण बनी है। ईश्वर की राह खोकर मनुष्य भटक रहा है अतः शांति की खोज में वह इन आधुनिक भगवानों के चंगुल में जकड़ता जा रहा है, चाहे वह ईश्वर उसे रजनीश के रूप में मिले अथवा महर्षि महेश योगी के रूप में अथवा सत्य सांई बाबा के रूप में, उसे जीने का कोई सहारा चाहिये प्रश्न यह उठता है कि क्या इनकी शरण में जाकर मानव अपनी संस्कृति, समाज व धर्म के प्रति श्रद्धावान् कर्मयोगी हुआ है? क्या उसे उसकी खोई हुई शांति प्राप्त हुई है? यह प्रश्न आज विशेष तौर से इसलिये आवश्यक है क्योंकि जिस तरह से जनता अन्धी होकर इन प्रचारकों के प्रति आस्थावान होते हुए अपने प्राचीन धर्म और समाज की मान्यताओं को तिरस्कृत करती जा रही है उससे भारतीय संस्कृति एवं समाज का भविष्य क्या होगा इसे कोई अन्धा भी देख सकता है।

भारतीय समाज का पूरा ढांचा उसके नियमों और धार्मिक सिद्धान्त के साथ जोड़कर भारत के मनुष्यों ने मनुष्य की दिनचर्या में धर्म एवं कर्म की इतिश्री करके धर्म को दैनिक जीवन के साथ बांध दिया था।

यही कारण है कि प्राचीन वैदिक धर्म अब तक भारत की संस्कृति समाज में दूध में पानी की तरह घुला हुआ है। यह धर्म-कर्म पर आध था जो गृहस्थ की दिनचर्या से शुरू हुआ था और वहां जाकर सम जाता था। इस धर्म से असन्तुष्ट अन्य धर्मों ने अपना आधार मन चारित्रिक संयम बनाया। दार्शनिक पक्ष में उनका भाव यह था कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अयाकृत विषयों पर चिन्तन न करें क्योंकि उस चिन्तन से कोई सुस्पष्ट परिणाम नहीं निकलता। बौद्ध और जैन धर्म के धर्माचार्यों ने यह उपदेश दिया कि जिसे ईश्वर को पाना है, जिसे अपना परलोक सुधारना है उसे द्रव्य से दूर आत्मा के निकट रहना चाहिये। सुनने में ये शिक्षाएं जितनी भली लगतीं हैं, व्यवहार में ममुष्य के लिये यह उतनी ही कष्ट साधक प्रतीत हुई। गृहस्थों के लिये इनका धर्म असाध्य ही था। यही कारण था कि शनैः शनैः इन धर्मों में भी विकृतियां आई और जो धर्म साधना और तपस्या का धर्म था, उसकी परिणति वज्रपान, मन्त्रयान और सहजयान सरीखे वाममार्गों पंथ के रूप में विकृत होकर उभरी, दूसरी शताब्दी से लेकर दसवीं शताब्दी तक के धर्म के इतिहास में जो विकृतियां आई उनका परिणाम आज भी पुरी के मन्दिर, खजुराहो, कोणार्क आदि के रूप में देखा जा सकता है। अपनी कमजोरी को धार्मिक सिद्धान्तों का रूप देकर धर्माचार्यों ने भगवान् के मुह से भी वे सब वाक्य कहलवाये जिसका उन्होंने अपने जीवन में त्याग किया था। बौद्ध धर्म का पहला धर्म शास्त्र 'गुह्य समाज तन्त्र' था। इस ग्रन्थ में स्वयं बुद्ध से यह कहलवाया गया कि, "तन्त्र मार्ग का बौद्ध मत से विरोध नहीं है" (मंजु श्री मूलकल्प) ने तो भगवान बुद्ध के मुह से वह सब कहलवाया जिसे बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं में त्यागने को कहा था। 'मंजुश्री मूलकल्प' दूसरी या पहली शताब्दी में लिखा जा चुका था। अतएव यह अनुमान लगाना सहज है कि बौद्ध धर्म में तन्त्र मार्ग का समावेश उसके प्रारम्भिक काल में ही आ गया था। बुद्धने तो केवल इतना कहा था कि कृच्छ साधनाओं से मोक्ष नहीं मिलता, न वह भोग में आसक्त होने से प्राप्त होता है। 'गुह्य समाज तन्त्र ने घोषणा की कि सांसारिक सुख से मुंह मोड़कर शरीर को दण्डित करना निर्वाण की राह नहीं है।

निर्वाण की सही साधना वह है जो इन्द्रियों को तृप्त रखकर की जाती है। बुद्ध ने यह कहा था कि ,बुद्धत्व की प्राप्ति अनेक जन्मों में की गई तपश्चर्या का परिणाम है। गुह्य समाजतंत्र ने कहा 'बुद्धत्व एक जन्म में भी प्राप्त हो सकता है। इसमें शीघ्र सफलता के लिये उन्होंने शक्ति सेवन (नारी समागम) को अनिवार्य बताया।

पतन का सूत्र कहां है?

कहना न होगा कि यह सारी सहज साधना उस समय के धर्माचार्यों ने अपनी कमजोरी छिपाने के लिये प्रारम्भ की। डा० विनय तोष भट्टाचार्य का अनुमान है कि भिक्षुओं में जब से युवक और युवतियों का संघ में प्रवेश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनिवार्य कर दिया गया तब से साधकों के लिये यह असम्भव हो गया कि वे इन्द्रिय निग्रह का निर्वाह कड़ाई से कर सकें। यही कारण है कि वे बौद्धमत के बाहर प्रचलित अन्य मतों में शनैः-शनैः दीक्षित होते गए जहां कोई बन्धन न था। स्वेच्छाचारिता ही धर्म की, शांति की संदेशवाहक जी। साधु वेश में भी महल की सारी सुख-सुविधाएं उन्हें प्राप्त होती रहीं। ऐसे संघों और आश्रमों ने धर्म की ओट में कोई अन्याय भले ही न किया हो लेकिन हम अन्याय और दुराचार इसलिये बता कि उन्होंने नारियों को अपना प्रेम नहीं दिया बल्कि धर्म की ओट में उनका उपभोग किया और संसार को इस धोखे में रखा कि नारियां उनकी प्रेमपात्री नहीं आध्यात्मिक उत्थान की सीढ़ी मात्र हैं। आचार्य रजनीश भी आज यही कह रहे हैं। अपने को आचार्य कहने वाले रजनीश अपनी मानवीय कमजोरियों को धर्म की आड़ में धार्मिक सिद्धान्तों का रूप देकर भारतीय संस्कृति और समाज को पतन की ओर ले जा रहे हैं। जिसको वे सहज अवस्था कह रहे हैं वह सहज अवस्था न होकर समाज की सर्वाधिक विकृति के रूप में उभरकर सामने आने वाली अवस्था है, आज के सभ्य समाज में उनका धर्म और विचार घोर असामाजिक घृणास्पद एवं संस्कृति के नाम पर एक कलंक है, इसमें दो मत नहीं हो सकते।

रजनीश : मानसिक विकृति के शिकार

भारत की भोली-भाली नारी जो शुरू से ही प्रेम की भूखी, भावनामयी सभ्यता और संस्कृति मानी जाती रही है, उसको उसके पन्थ से गिराकर वाममार्गी पन्थ में अनजाने ही ढकेल देना कैसा धर्म और कैसा सदाचार है? रजनीश क्या कहना चाहते हैं, क्या करना चाहते है, इसे वे स्वयं नहीं जानते न समझ पाते हैं। उनका प्रत्येक उद्‌बोधन उनकी मानसिक विकृति का द्योतक है। एक स्थान पर वह जो कहते हैं दूसरे स्थान पर वह स्वयं उसी बात को काटते हैं। धर्म के नाम पर वह केवल एक ही बात कहना चाहते हैं कि न कोई परमात्मा है, न कोई भगवान् है और न ही कोई धर्माचार्य है। मनुष्य स्वयं भगवान हो सकता है यदि वह अपने को जान ले और यह जानना किसी गुरु के माध्यम से ही हो सकता है जो केवल रजनीश ही हो सकता है अन्य नहीं। जो वह कह रहे हैं वह कभी संभव नहीं हो सकता। बिना किसी प्रयत्न के शून्य की दिशा में पहुंचना असम्भव है। ध्यान करने के लिये प्रयास करना ही पड़ता है और वह प्रयास लोकेषणा को त्यागे बिना चित्त के निरोध के बिना संभव नहीं। सहज ज्ञान अर्थात् भोग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के द्वारा शारीरिक सुख की ही प्राप्ति हो सकती है, वास्तविक आनन्द की नहीं। भोग के द्वारा केवल बाह्य आनन्द ही मिल सकता है जिसे आचार्य रजनीश वास्तविक आनन्द की संज्ञा दे रहे हैं। दसवीं शताब्दी का हारा हुआ धर्म आज रजनीश के वाक्यों में जीने का प्रयत्न कर रहें हैं, पर यह भारत की धरती गृहस्थों की धरती है। आश्रम और सन्यासियों का धर्म जन-जन का धर्म कभी न बना है, न बन सकेगा। एक दिन वह स्वयं अपने आश्रम के साथ लुप्त हो जायेगा इसमें संदेह नहीं। भारत की जनता खाज की कोणार्क, पुरी, खजुराही के मन्दिर देखकर शर्म से सिर झुका लेती है। जिस आश्रम मे कोणार्क पलता हो वह आश्रम कब तक चल सकेगा?

सत्य तो यह है कि आज व्यक्ति अपनी ही बनाई उलझनों में इतना घिर गया है कि वह सत्य को ढूढने की, उसे समझ लेने की शक्ति ही खो बैठा है। उसे हर चीज, हर सुख तत्काल हो जाये, इस धुन में वह अपना विवेकशील, विचार शक्ति से कार्य लेना भूल जाता है। प्रलोभन उसे केवल अन्धानुकरण करने की ओर ढकेल देते हैं। रजनीश की सफलता का राज वह स्वयं नहीं है। मानव मन की कमजोरी है बस। आचार्य रजनीश अपनी मधुर वाणी, सम्मोहित करने वाली विद्या के द्वारा केवल असत्य का अनुसरण कर रहें हैं, असत्य को ही सत्य दिखाने का प्रयत्न कर वह भारत के लिये पतन की एक ऐसी राह खोल रहें हैं जिस पर पहुंचने के बाद किसी स्त्री या पुरुष को उससे बाहर जाने का रास्ता नहीं रह जाता। भारतीय संस्कृति की जो आधारशिला है, गृहस्थ धर्म में रहकर आसक्ति से दूर होने की चेष्टा करना आचार्य रजनीश उसे भारी आघात पहुँचा रहे हैं। जिस स्वेच्छा चारिता से ऊबकर आदिम युग में मनुष्य ने समाज और देश के नियमों की सीमाओं में बांधा था, उसी स्वेच्छाचारिता को रजनीश ने धर्म बनाकर अच्छे घर के युवकों और भले घर की नारियों को ऐसे मार्ग पर ला पटका है जहां उनकी स्थिति न घर की है न घाट की। वाममार्गियों ने जिस अनैतिक स्वेच्छाचारिता को योग और चिरानन्द का रूप देकर जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया था रजनीश भी धर्म की आड में वही कर रहें है। यह कहना दुराग्रह न होगा कि अपनी कमजोरी को धार्मिक सिद्धान्त का बाना पहना कर रजनीश भगवान् के नाम पर रजनीशपुरम् की दुराचार और स्वेच्छाचार का अड्डा बनाए हुए है। हो सकता है कि इनमें से दो चार अच्छे महात्मा निकल जायें क्योंकि वज्रयान, सहायान पन्थ से भी आखिर कुछ तो निकले ही, लेकिन इतिहास साक्षी है कि अपार मानवता उस समय भी आसक्ति वैराग्य, भोग और उपवास के बीच भटके ही खाती रही। उसकी नैया कहीं भी किनारे न लग पाई थी। □□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लंदन में भारत विरोधी सूहिम

खालिस्तानी-मुस्लिम-ईसाई कैसे हो गये भाई-भाई

यह बात तो अब खुल कर सामने आ ही गई है कि भारत विरोधी गतिविधिया देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी (विशेषकर ब्रिटेन और कनाडा मे) फैलती जा रही हैं। इसका जीता, जागता प्रमाण ब्रिटेन में सिख समुदाय द्वारा आयोजित भारत विरोधी संगठनों का सम्मेलन था। इस सम्मेलन का आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लंदन में हुआ।

सिख समुदाय के अलावा इस सम्मेलन में जम्मूकश्मीर का मुक्ति मोर्चा, भारतीय मुस्लिम महासंघ, विद्रोही नेता ए० जैड० फिजो और विश्व इस्लामिक केन्द्र के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इससे यह बात स्पष्ट हो गई है कि कुछ उग्रवादी सिखों के अतिरिक्त अन्य संगठन भी भारत के विरुद्ध खुलकर प्रचार करने जुटे हुए हैं विशेषकर मुसलमान और ईसाई जो पहले से ही हिन्दुओं के खिलाफ जहर उगलते रहे हैं परन्तु सिख समुदाय के सम्मेलन में मुसलमान और ईसाई तुरन्त एक हो गये हैं, जब कि मुसलमानों और ईसाईयों के विचार हिन्दुओं की भाँति सिखों से भी एकदम विपरीत हैं, लेकिन वे हिन्दुओं और अखण्ड भारत के विरुद्ध एक होकर एक ही मंच पर खड़े हो गये हैं।

इस बार तो सिख समुदाय ने विद्रोही नेता ए० जैड० फिजो जिसे खालिस्तानी स्वयंभू नेता डा० जगजीत सिंह चौहान की भांति सबीय गणतन्त्र नगालैण्ड राष्ट्रपति करार दिया गया गया है, को भी अपने साथ मिला लिया है। उसी दिन लंदन में इस भारत विरोधी सम्मेलन के समानान्तर दूसरा सम्मेलन हुआ, जिसका उद्देश्य था अपनी मातृ-भूमि की एकता और अखण्डता को मजबूत करने के उपायों पर विचार-विमर्श करवाना।

वर्णिक्स में भारतीय राजनयिक श्री रवीन्द्र म्हात्रे की हत्या की जिम्मेदारी लेना जम्मू-काश्मीर मुक्ति-मोर्चे के भारत विरोधी प्रचार में एक नई कड़ी थी। तब ब्रिटेन की पुलिस द्वारा जो हवाई कार्रवाई की गई थी अर्थात कुछ नेताओं को हिरासत में लिया गया और मात्र औपचारिकता पूरी करने उन्हे छोड़ दिया गया, वह एक फूहड़ मजाक था।

लगता है कि गतवर्ष जून मे अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में सैनिक कार्र-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाई से बौखलाकर कुछ सिख उग्रवादी नेताओं ने मिलकर अन्य भारत-विरोधी संगठनों को शामिल करके भारत से बदला लेने का संकल्प लिया। इससे पहले मोर्चे के अध्यक्ष अमानुल्ला खान तथा तथाकथित खालिस्तान के स्वयंभू नेता डा० जगजीत सिंह चौहान कई बार अपने समर्थकों की संयुक्त बैठकों को सम्बोधित कर चुके हैं।

इस भारत-विरोधी सम्मेलन में लगभग ४० प्रतिनिधि मण्डलों के पहुंचने की आशा थी लेकिन इतने पहुंच नहीं पाये। दूसरी तरफ लन्दन में ब्रिटिश अधिकारियों की कड़ी पूछताछ का सामना इस सम्मेलन के अधिकारियों को करना पड़ा।

पहले इस सम्मेलन का आयोजन स्थानीय हाइड पार्क में एक रैली के रूप में होना था किन्तु संगठन के सदस्यों का कहना था कि ब्रिटिश अधिकारी इसमें बाधा डाल रहे हैं, इसलिए इसको न करने का फैसला किया गया परन्तु दूसरी तरफ स्काटलैण्ड यार्ड का कहना था कि उन्हें इससे मतलब नहीं।

इस सम्मेलन के आयोजन को देखकर कुछ प्रश्न उत्पन्न होते हैं—क्या स्काटलैण्ड यार्ड का इन्हें पूरा सहयोग मिल रहा है? क्या इग्लैंड में भारत-विरोधी प्रचार पिछले सालों से हो रहा है? क्या इस सम्मेलन का आयोजन कुछ बड़े और भारत-विरोधी देशों (पाकिस्तान और अमेरिका) की शह पर हुआ?

लगता है जैसे जान-बूझकर इस तरह भारत विरोधी मामलों में ब्रिटिश सरकार अनजान बन रही है। हाँ, कभी-कभार जब या तो ब्रिटिश प्रधान मन्त्री भारत की यात्रा पर आती हैं या भारत का कोई मन्त्री, प्रधानमन्त्री अथवा अन्य वरिष्ठ नेता इग्लैण्ड का दौरा करता है तब कुछ समय के लिए इस प्रचार में कुछ धीमापन आ जाता है। अन्यथा भारत विरोधी प्रचार खूब जोर-शोर से चलता है।

इधर भारत सरकार भी अपना विरोध ब्रिटिश सरकार के समक्ष खुल कर प्रकट नहीं करती। ऐसा क्यों? इस उदासीनता को देखकर इन संगठनों के हौसले और बुलन्द हो जाते हैं। भारत सरकार को होश तब आता है, जब पानी सिर से गुजर जाता है।

ब्रिटिश पुलिस का रुख भी इस सम्मेलन के प्रति काफी नरम रहा—जैसे उन्हें अपने उच्च अधिकारियों से ऐसा ही निर्देश मिला हो। केवल कुछ नेताओं से निम्नस्तर पर पूछताछ करके उन्हें छोड़ दिया गया।

भारत सरकार को चाहिए वह ब्रिटिश सरकार से भारत विरोधी प्रचार के खिलाफ अपनी सख्त नाराजगी प्रकट करे।

धन-धान (गाजियाबाद)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हर शुभ अवसर के लिये

शुद्ध और पवित्र

एम डी एच

हवन सामग्री

कीमती जड़ी बूटियों से निर्मित

महाशियां दी हट्टी प्राइवेट लिमिटेड

9/44 इंडस्ट्रियल ऐरिया, कीर्ति नगर, नई देहली-110015

फ़ोन : 534093 539609

सेल्स आफिस : खारी बावली, दिल्ली-110006 फ़ोन : 232855

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) D—C-201/ Regd No 107119/65
मई १९८५
वेद मंदिर, प्रो० आ० अलीपुर, दिल्ली-३६

मुद्रक-प्रकाशक-संपादक-पण्डिता राकेश रानी द्वारा
जन ज्ञान मुद्रणालय में मुद्रित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi